सेल रोटी

शिवानंद मिश्रा

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shivanand Mishra 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-117-7

Cover design: Shariq Ansari
Typesetting: Simran Maurya

First Edition: June 2026

अनुक्रमणिका

अध्याय 1 1
अध्याय 2 8
अध्याय 3 13
अध्याय 4 20
अध्याय 5 25
अध्याय 6 30
अध्याय 7 37
अध्याय 8 44
अध्याय 9 49
अध्याय 10 52
अध्याय 11 57
अध्याय 12 60
अध्याय 13 64
अध्याय 14 71
अध्याय 15 89
अध्याय 16 99
अध्याय 17 107
अध्याय 18 119
अध्याय 19 144

अध्याय 21 193
अध्याय 22 201
अध्याय 23 212
अध्याय 24 221
अध्याय 25 232
अध्याय 26 241
अध्याय 27 250

अध्याय 1

7:30 की मीटिंग खत्म होते ही फोन की घंटी बज उठी। मैं अब भी मीटिंग की खीझ में था। गुस्से में कुर्सी को थोड़ा पीछे धकेला और फोन की ओर बढ़ा। स्क्रीन पर नाम चमक रहा था—*अभिनय।* कालेज के पहले दिन से यही नाम सेव था। "चल रहा है फिर न? 10 या 10:30?" उसका मैसेज था।

कल शाम जब हम चाय पी रहे थे, तब उसने कहा था, "कल चलते हैं पब। मेरी वाइफ कह रही थी कि काफ़ी दिन हो गये, कहीं गये नहीं"।

"देखता हूँ यार… तू जानता तो है, मैं तुमलोगों के अलावा एक-दो को छोड़कर किसी से ज़्यादा मिलता नहीं...", मैंने कहा था।

"अबे चल न... *मीलमीत* भी आएगी", उसने कहा और सिगरेट का एक कश मारा। "मीलमीत?", मैंने थोड़ा चौंकते हुए कहा। "यार मैं उससे क्या ही बात करूँगा…", मैंने थोड़े से दबे स्वर में कहा।

"अबे चल न यार, इतने दिन बाद तो बोली है। अब जो हुआ, सो हुआ...", उसने रोड की तरफ देखते सुड़क के स्वर के साथ कहा था।

"तेरे फ्लैट पे आना है तैयार होकर?"—काँपते हुए हाथों से मैंने टाइप किया।

कुछ सेकंड्स बाद "Typing..." का बुलबुला स्क्रीन पर तैरने लगा। फिर संदेश आया "हाँ, आ जा... मीलमीत भी यहीं आ जाएगी। यहीं से कैब करके चलते हैं"। अभिनय का जवाब था।

"ओके", मैंने टाइप किया और भेज दिया।

कभी-कभी यादों से निकल पाना कितना कठिन होता है। मैं सोचने लगा… और फिर लैपटॉप बंद कर दिया। पौने आठ बज चुके थे।

क्या होता है किसी के चले जाने का दर्द? क्या कोई काफ्का, ओशो, दोस्तोवस्की या नीत्शे... क्या किसी ने सच में उस दर्द को लिखा है या सबने बस अपने-अपने हालात लिखे हैं?

जयश्री का चले जाना शायद मेरी ज़िंदगी की सबसे मुश्किल बातों में एक रहा। उसी समय अभिनय की शादी और फिर मेरा उस फ्लैट से निकलकर पास ही एक छोटे से कमरे में आ जाना, ये सबकुछ इतना जल्दी और अचानक हुआ कि लगा, अब ज़िंदगी में कोई सँभालने वाला नहीं बचा।

मैं दरवाज़ा बंद करके सीढ़ियाँ उतर रहा था और सोचता जा रहा था।

नीचे चेट्टा की चाय की दुकान पर मैंने एक चाय माँगी पर आज अभिनय को मैसेज नहीं किया कि 'चाय पीने आ रहा है क्या?'

छह महीने से मैं खुद को रोक रहा हूँ कि छोटी-छोटी बातों के लिए उसे परेशान न करूँ। तीस की उम्र में, लगभग 12-13 साल की दोस्ती में भी दूरियाँ आने लगती हैं, जब शादी हो जाती है।

जबसे उसकी शादी हुई है, मिलना-जुलना कम हो गया है। पहले तो साथ ही रहते थे, पर अब इतने लहूलुहान से समय में लगातार अकेले रहना ही ज़्यादा सही लगता है। यह भी सोचता हूँ कि उसकी बीवी प्रियांशी, जो कि एक बहुत अच्छी लड़की है, उसे बुरा न लगे क्योंकि कुछ बातें कपल्स की होती हैं और सिर्फ़ उनके बीच ही रह जानी चाहिए।

मैं नहीं चाहता कि कभी फिर वो मुझसे कह दे 'तू तो बिना पेपर्स के अडॉप्टेड बच्चा है हमारा'। शायद उसने वो मज़ाक में कहा था लेकिन मुझे थोड़ी ठेस पहुँची थी। पर कर भी क्या सकता था, दोस्ती तो नहीं छोड़

सकता। कॉलेज के फ़र्स्ट ईयर से साथ में हैं। अब शायद क़ब्र तक साथ देना होगा, हालात जैसे भी हों।

आख़िरी घूंट लेकर चाय ख़त्म की। मोबाइल निकाला और टाइम देखा—8:30 हो चुके थे। वहीं गली में दस मिनट टहलते हुए मम्मी को फोन मिला दिया। "मम्मी, प्रणाम!"—मैंने कहा।

"का हाल-चाल बा? ठीक भवा सिरदर्द?"—मम्मी ने थोड़ा हक जताते हुए कहा।

"हँ, होइ गवा। आऊ…? खान पियान हो गवा?"—मैंने पूछा।

"अरे नाहीं बेटवा… थोड़िक देर मा जइब", मम्मी बोलीं, शायद किचन में कुछ करती हुई।

"ठीक बा, बाद मा बात करब…", मैंने कहा।

"ध्यान रखा बेटवा", मम्मी बोलीं।

"ह्म्म्म…", कहकर मैंने कॉल काट दिया।

माँ के अलावा मैं ज़्यादा किसी से अवधी में बात नहीं करता। गाँव के कुछ लोगों को छोड़ दें, तो बाक़ी सबसे हमारी बातचीत हिंदी में ही होती है। शायद यही मातृप्रेम है मातृभाषा का।

लखनऊ जैसे शहर में भी अब लोग इस तरह नहीं बोलते। हमारे दोस्तों के बीच भी 'हम-तुम' वाला लहजा ही चलन में है।

फोन देखा 8:45 हो चुके थे। मैंने अपने भारी कदम कमरे की ओर बढ़ा दिये।

जाते समय जैसे ही मैंने गली का एक मोड़ पार किया, एक झलक मिली, शायद उस मोड़ से मीलमीत राइट लेकर अभिनय के फ्लैट की ओर जा रही

थी। मैं एक पल को ठिठक गया, लेकिन पूरी तरह देख नहीं पाया। बस इतना आभास हुआ—किसी ने ब्लैक कलर की ड्रेस पहन रखी थी।

हो न हो, वही रही होगी, पर मैं पीछे मुड़कर देख नहीं सकता था। मैं कमरे की ओर ही चुपचाप चलता रहा।

गीजर ऑन कर दिया और वहीं सोफे पर बैठ गया। इंस्टाग्राम खोल लिया, स्क्रीन स्क्रॉल करने लगा। तभी फोन पर नोटिफिकेशन आया - "हो गया तैयार?" अभिनय का मैसेज था।

मैंने व्हाट्सएप खोला, टाइप करने लगा—"8:55 हुआ है बे, अभी से आ जाऊँ क्या?"

उसका जवाब आया—"तो आ जा... सुट्टा मारते हैं एक"।

"अबे यार... चाय पी आया बे!"—मैंने जवाब भेजा।

"चल न ठाकुर...!", —उसने भेजा।

मैं फिर ठिठक गया। पलकें झपकाईं, फिर टाइप किया—"आ जा….“। और फिर मोबाइल जेब में रखते हुए कमरे से बाहर निकल आया। दरवाज़े को ताला मारते हुए मैंने सोचा—“अब जो है, सो है। पी लेता हूँ एक और ग्लास”।

चाय की दुकान पर पहुँचा, तो मुझे अंदाज़ा था कि मीलमीत उसके फ्लैट पर आ चुकी है और इसीलिए वो बाहर आ गया।

खैर…

मेरा नाम है भानु प्रताप मिश्र। हाँ, वही नाम जिससे इस देश में किसी का धर्म, जाति, सब पता चल सकता है।

मेरे नाम में ‘प्रताप’ आता है, तो लोग पहले मुझे ‘ठाकुर’ समझते हैं, फिर ‘मिश्र’ देखकर कहते हैं—“अरे ब्राह्मण हैं”।

काश इस देश में नाम की जगह सिर्फ नंबर ही नाम होते।

कॉलेज में मेरा शॉर्ट नाम ‘ठाकुर’ ही चल पड़ा और आज भी जब कभी पुराने कॉलेज ग्रुप में अभिनय के साथ चला जाता हूँ, सब वही कहते हैं—“अबे ठाकुर!”

“अबे ठाकुर!”—अचानक अभिनय की आवाज़ से ध्यान टूटा।

"कस बे! के कर दे छँ?"—और एक भीनी-सी मुस्कान के साथ अवधी, लखनवी और नेपाली तीनों की पुश्तों की बदनामी करते हुए उसने एक लंबा कश खींचा और मैंने चाय का ग्लास उठाया।

"कुछ नहीं बे, लैपटॉप बंद किया… बस!”—मैंने चाय की एक घूँट लेते हुए कहा।

मैं सोच रहा थे, देवदास को निकाल ही दें 'कोपभवन' से।

"हाँ साले, सुना ले! अभी कॉलेज के दिन भूल गया क्या? कौन देवदास है? लगाऊँ फोन दीपक को?"—मैंने चिढ़ाते हुए कहा।

"हाहा… चल, आज चलते हैं। बहुत दिन हो गये कहीं गये नहीं”, वो थोड़ा गम्भीर होते हुए बोला।

"तुझे भी अब मनाना पड़ता है रात को आने के लिए, खाने के लिए, किसी भी चीज़ के लिए”, उसने थोड़े गुस्से से कहा।

मैं उसकी ओर देख नहीं पाया। चाय खत्म करते हुए बोला, "अबे, तू ही तो बोला था कि हमलोग शादी नहीं करेंगे, बस इतना कमाएँगे कि साल में हेल्थ प्रीमियम भर सकें... और खाने के लिए पैसा रहे। फिर वेस्ट खासी हिल्स में आराम से रहेंगे”।

मैंने उसे चिढ़ाते हुए कहा, "टर्म इंश्योरेंस तो ले ही चुके हैं हमलोग!”

"तो मैं क्या कर सकेगा भाई... आमा अकेली हो गई है", उसने हल्के से मायूस होकर कहा।

मुझे नहीं पता था कि वो इतनी गंभीर बात ऐसे मज़ाक के लम्हे में कह देगा। मैं एक पल को चुप रह गया, मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था।

"अच्छा छोड़... चल फिर। आऊँ तैयार होकर? या ऐसे ही चलें?"—मैंने बात काटते हुए कहा।

"चल फिर तेरे रूम, ये लोग तब तक तैयार हो रही होंगी", वो QR स्कैनर से पेमेंट करते हुए बोला।

तब जाकर मैंने नोटिस किया कि वो पहले से ही रेडी होकर आया था—कूल क्रीम कलर की टी-शर्ट, ब्लू जीन्स, ब्लैक कैनवस शूज़ और ऊपर एक ओवरसाइज शर्ट। कद मुझसे थोड़ा छोटा, लेकिन ज्ञान में कभी-कभी मुझसे बहुत बड़ा।

"चल...", मैंने दुकान से निकलते हुए कहा और वो भी साथ हो लिया।

हम दोनों रास्ते में ज़्यादा कुछ नहीं बोले। मैं मोबाइल देखता रहा और वो एक कॉल पर व्यस्त हो गया।

"म ठकुरको रूममा जाँदैछु। तिमी तयार भए, मलाई text गर दे है। म तल आए ट्याक्सी बुक गर्नेछु", उसने प्रियांशी को फोन पर कहा और कॉल काट दिया।

मैंने ताला खोला और वो मेरे वन बीएचके कमरे में घुसते ही सीधे बिस्तर पर पसर गया।

मैंने सोचा, ये वही अभिनय है, जो काठमांडू से अब तो नहीं रहा, लेकिन उतना ही टूटा हुआ लगता है जैसे 2015 का भूकंप... कभी-कभी इतना खुश और कभी इतना तबाह लगता है।

अभिनय भूशाल—नेपाली माइग्रेंट, जिनके पूर्वज वैसे ही सदी भर पहले नेपाल से सिलीगुड़ी, सिक्किम, दार्जिलिंग, असम जैसे हिस्सों में लाए गये, जैसे कई अन्य लोग। फिर मेघालय असम से अलग हुआ और अब अभिनय एक ऐसा 'इंडियन नेपाली' बन गया जिसे खुद नहीं पता कि उसकी पहचान क्या है। शिलॉन्ग से आगे वो खुद को डिस्क्राइब नहीं करता किसी को क्योंकि लोगों को समझ नहीं आता। वो जानता है किसी भी कोर ग्रुप में वो हमेशा 'नेपाली' ही रहेगा।

और मीलमीत लेपचा.... अभी तक मुझे इतना ही पता था कि सिक्किम के ऊपर हिमालय की पुश्तैनी जगह जोंगू से उसका घर जुड़ा है लेकिन कई साल पहले उसके पिताजी गंगटोक आ गये थे। अब वहीं उनका एक दुकान और होम-स्टे का कारोबार है, जो अब एयरबीएनबी पर भी उपलब्ध है। उसकी 'आमा (माँ)' आँगनबाड़ी स्कूल में टीचर हैं। उसकी एक बड़ी बहन है जिन्होंने शादी कर ली है और शायद सिलीगुड़ी में रहती हैं।

मीलमीत एक बेमिसाल खूबसूरत लड़की है—रेशम जैसे बाल, चौड़ा माथा, पहाड़ी लोगों जैसी शरीर की बनावट और दूध जैसे गोरे रंग की। वो ज़्यादातर नेपाली में बात करती है। मुझसे जो भी कभी-कभार बात हुई, वो अंग्रेज़ी या हिंदी में ही हुई।

मील, प्रियांशी की दोस्त है जिन्होंने कॉलेज साथ में किया, शिलॉन्ग से। मील HR में है और प्रियांशी अब बिज़नेस एनालिस्ट बन गई है। शायद MBA करने के बाद जिसे जो मिला, उसमें घुस गया।

मैं तैयार हो रहा था, अभिनय बिस्तर पर लिटा पंखा देख रहा था, कमरे में चुप्पी थी, लेकिन बोझिल नहीं।

अध्याय 2

अब 10:45 लगभग हो चुके थे। हम बेंगलुरु के कोरमंगला में ब्लू व्हेल के सेकंड फ्लोर पर बैठे थे। एक गोल टेबल पर प्रियांशी, उसके बगल में अभिनय, फिर उसके बगल में मैं और मेरे सामने मीलमीत। ऑर्डर जा चुका था—दो LIT, दो मॉकटेल, एक थिन क्रस्ट पिज़्ज़ा और क्रिस्पी कॉर्न।

सब अपने-अपने मोबाइल देख रहे थे और अभिनय मुझे धीरे-धीरे कोहनी मार रहा था जिससे मैं थोड़ा असहज हो रहा था, पर ज़ाहिर नहीं होने दे रहा था।

पर मुझे अब उस एहसास ने घेर लिया था कि मैं क्यों बाहर आ रहा हूँ, क्यों सेलिब्रेट कर रहा हूँ? मन नहीं लगता, तब भी क्यों बाहर निकलता हूँ? मुझे तो शायद जयश्री की यादों में ही जीवन काट देना चाहिए। जीवन की नीरसता ही अब मेरा भाग्य है।

कभी जब उसके साथ बाहर जाता था, तो ऐसी ही जगहों पर जाया करता था। पर उसके जाने के बाद ये सब बहुत फीका और बनावटी-सा लगता है।

"तो... मील! what's up? विवाह गऱ्दे न? क्या हुआ बॉयफ्रेंड का?"—अभिनय ने कहा।

"Breakup चैल्दैछ”—मील ने नेपाली में कहा। और उधर अभिनय ने हल्के से पैर मेरे पैर से मारा।

मील का चेहरा थोड़ा उदास हो गया। उसने मोबाइल साइड में रखा और टेबल की ओर देखने लगी।

ब्रेकअप क्यों? पता नहीं मैंने क्यों फटाफट, ऐसे ही जल्दी में पूछ लिया। शोर बहुत ज़्यादा था पब में गानों का और ग्राउंड फ्लोर के डांस का। लेकिन शायद तीनों ने मेरी बात सुन ली और मेरी तरफ देखा।

"शायद किसी और को डेट कर रहा है", मील ने कहा। फिर लोगों की तरफ आँखें फेरी और मुझसे नज़रें चुरा लीं।

तब तक ड्रिंक्स टेबल पर आ गई थीं और क्रिस्पी कॉर्न भी आ गया था।

"Thank you!"—मैंने वेटर को कहा।

उसने एक तीखी नज़र फेरी मुझपर। शायद वो भी पूर्वोत्तर की पृष्ठभूमि का था और सोच रहा था कि ‘ये कबाब में हड्डी कहाँ से आ गया…’।

कभी-कभी किसी की निगाहें ही आपको 'ग़ैर सा' महसूस करा देती हैं और पूर्वोत्तर के लोगों से ज़्यादा इसे कौन समझ सकता है।

"भयो भयो", अभिनय ने तेज़ी से कहा और अपनी LIT की एक घूँट मारी।

प्रियांशी और मील भी अपनी ड्रिंक्स पी रहे थे, मील ने भी LIT ली थी। मैंने और प्रियांशी ने मॉकटेल।

इन सबके बीच शायद 'Cheers' करना भूल गये लोग।

मैंने एक सिप लिया और एक ज़ोर की साँस ली।

"Leave it! What's up with you?" मील ने अगला सिप लेते हुए, ड्रिंक की तरफ देखते हुए हवा में सवाल उछाला।

"ये ये तो देवदास रहता है आजकल", मेरे जवाब देने से पहले अभिनय ने हँसी में बात उड़ा दी।

मैं थोड़ा शर्मिंदा और असहज महसूस करने लगा और धीमी सी झूठी मुस्कान फेर ली।

"तिमी बेसि बोलो न", प्रियांशी ने अभिनय को झिड़कते हुए कहा।

तब तक पिज़्ज़ा भी आ गया।

"Restroom जा रही हूँ", बोलकर प्रियांशी मील को लेकर चली गई।

"तू साले क्यों बोलता है बिना कुछ सोचे समझे?"—मैंने उसकी तरफ बड़ी-बड़ी आँखें करते हुए कहा।

"क्या बोला हूँ? जो है, सो है! साला.... तू.... आठ महीना हो गया"।

"छह महीने", मैंने कहा।

"हाँ... हाँ... छह। तो कब तक ऐसे रहेगा? घर में भी शादी नहीं करनी। पहले बोलता था कि उससे हो जाएगी। अब वो चली गई तो फिर भी नहीं करनी। और अगर नहीं करनी है तो मत कर। कम-से-कम जो हो सकता है, वो तो कर!"

"क्या करूँ भाई मैं?"— मैंने थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा।

"अबे किसी से तो मिल... बात कर! साले मर जाएगा ऐसे। बाप के बाद मेरे जीवन में एक तू ही मर्द बचा है", वो थोड़ी भारी आवाज़ में मुस्कुराते हुए बोला।

उसने सिर नीचे झुकाया, सिगरेट निकाली, मुँह में लगाई, लाइटर जलाया और फूँ करके धुएँ का पहला कश हवा में उड़ा दिया।

मुझे कभी-कभी समझ नहीं आता कि ये जो मेरा दोस्त है, जो हमेशा मज़ाक-मस्ती करता रहता है अगर आज पीछे मुड़कर 13 साल देखूँ, तो कभी-कभी इतनी गंभीर बात चुपचाप कुछ लफ़्ज़ों में कैसे कह जाता है।

इसने ज़िद करके प्रियांशी से शादी की।

प्रियांशी भट्टराई भी नेपाली कम्युनिटी की ही लड़की है पर रहने वाली गुवाहाटी की। उसका भी पीढ़ियों का वृत्तांत अभिनय जैसा ही है।

पहली जॉब लगने के बाद जब वो छुट्टी में घर गया और जब वापस बंगलौर आया, तो बताया कि एक सीन सेट हो गया है। वही प्रियांशी को बंगलौर लाया और नौकरी दिलाने में मदद की।

प्रियांशी के साथ-साथ आई मील—जो शायद कॉलेज खत्म होने के बाद गंगटोक वापस चली गई थी लेकिन फिर शायद प्रियांशी ने उसे भी मना लिया।

मुझे आज भी वो रात याद है जब अचानक रात को अभिनय ने मुझे उठाया। तब हम दोनों साथ रहते थे, बस टू बीएचके में दो कमरे थे, पर रहते एक में ही थे।

"घर जा रहा हूँ… 5:30 की फ्लाइट है"।

मैंने पूछा—"क्या? क्यों? क्या हुआ?"

"बाबा… बाबा हॉस्पिटल में हैं"।

मैं स्तब्ध रह गया। मैंने ये तक नहीं कहा कि सब ठीक हो जाएगा।

वो चला गया। बीच में एक दिन एक मैसेज आया—"बाबा एक्सपायर कर गया हैं। ऑफिस से छुट्टी ले ली है, दो हफ्ते में आता हूँ"।

मैं तब जयश्री के साथ वीडियो कॉल पर था। ये मैसेज ऊपर से टपका। मैंने पढ़ा और मुझसे कुछ नहीं कहा गया।

जयश्री पूछती रही कि क्या हुआ, पर

मैंने उसे भी नहीं बताया। मैं भी कुछ बोलने लायक नहीं बचा था। कुछ दिन बाद ही बता पाया उसे।

दो हफ्ते बाद अभिनय लौटा। अगस्त का महीना था, बारिश हो रही थी। जिस रात वो कमरे में पहुँचा, शायद अब उसका कोई कंधा नहीं बचा था। अब उसे अपने घर का कंधा बनना था, अपनी आमा का, अपने भाई का।

वो पूरा बदल गया, ये तो नहीं कह सकता मैं लेकिन तब से उसमें धीरे-धीरे हल्के बदलाव मैंने महसूस किये। शायद अब उसके पापा की पेंशन और उसकी सैलरी से ही घर चलने वाला था।

तभी कुर्सी सरकने की आवाज़ आई, ये दोनों रेस्ट रूम से लौट चुकी थीं और मैं अपने ख़यालों से।

फिर एक-एक ड्रिंक और ऑर्डर की गई।

अध्याय 3

लगभग रात के 12:30 बज चुके थे। नेपाली कितनी भी पी ले, उसे चढ़ भी जाए तो भी ज़्यादा पता नहीं चलता, लेकिन शायद मील को चढ़ गई थी।

ख़ैर, मील को तो प्रियांशी ने सँभाला हुआ था। उसके पीछे अभिनय और फिर उसके पीछे मैं। मैं बस उसके क़दमों पर नज़र रखते हुए चल रहा था। वो बहुत ही नाममात्र का लड़खड़ाना मुझे प्रतीत हो रहा था।

"बूड़ा, कैब आउँदिछा?"—प्रियांशी ने धीरे से पूछा।

"हाँ???",—और फिर वो सड़क की ओर एक क़दम बढ़ाकर थोड़ी दूर तक नज़र मारने लगा। हमलोग पब के गेट के बाहर खड़े थे, जहाँ बहुत सारे लोग अब बाहर निकल रहे थे क्योंकि रात के 1 बजे बंद होने का समय था।

"आउ... वा... वा..." की हल्की आवाज़ आई। शायद मीलमीत का मन थोड़ा मचलने लगा था।

मैं पास ही की एक गुमटी से पानी की बोतल खरीद लाया था।

"बिठा दे",—मैंने प्रियांशी से सिर हिलाकर कहा। और फिर बोतल दिखाकर बोला—"इसको थोड़ा पानी पीने दो, डिहाइड्रेशन ज़्यादा हो गया होगा"—और बोतल प्रियांशी को थमा दी।

फिर मैं सड़क की ओर बढ़ गया, जहाँ अभिनय थोड़ी दूरी पर खड़ा था।

"क्या हुआ? आई?"—मैंने उसके पीछे पहुँचते ही पूछा।

उसने सिगरेट मुँह में लगाई, पैकेट अंदर रखा, टक-टक की आवाज़ वाले लाइटर से जलाई, पहला कश लिया और बिना मेरी ओर देखे बोला—"आ

जाएगी ठाकुर, इतना क्या उतावला हो रहा उस मनहूस कमरे में जाने के लिए?"

मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"बस बेटा.... बस! तू शादी नहीं करता, तो मुझे उस कमरे में नहीं रहना पड़ता"—और मैं उसकी आँखों में देखने लगा, जैसे जानना चाहता हूँ कि वो इस पर क्या कहता है।

"उधर देख.... जा..."—उसने सड़क की तरफ इशारा किया—"गाड़ी आई कि नहीं?"—और फिर धुआँ हवा में उड़ा दिया।

"नंबर?"—मैंने थोड़ा व्यंग्यात्मक अंदाज़ में कहा।

"3245... डिज़ायर।"

"ला..."—मैंने उसी लहज़े में कहा, जैसे उसे चिढ़ाते हुए और सड़क की तरफ देखने लगा, जहाँ लगातार कैब्स आ रही थीं, लेकिन किसी और के लिए रुक रही थीं।

अब तक रोड पर अच्छी-खासी भीड़ जमा हो चुकी थी।

एक गाड़ी दिखी जिसे मैंने हाथ देकर रोका और फिर प्रियांशी को इशारा किया—"आ जाओ!"

"नेपाली बोला—"जा... लेके आ तू उसको, साला...",—अभिनय ने सिगरेट का आख़िरी कश मारा, सिगरेट को पैरों के नीचे रौंदा और फिर मुस्कुराया।

मैं थोड़ा तेज़ी से प्रियांशी की तरफ गया। तब तक प्रियांशी एक सहज कोशिश में लगी थी मील को उठाने में।

मैं पहुँचा और थोड़ा झिझका। तब तक प्रियांशी बोली—"उधर से पकड़ वो हाथ..."।

मैंने जल्दी से उसका बायाँ हाथ कंधे से पकड़ा। दोनों ने एक झटका लगाकर उसे उठा लिया। प्रियांशी ने फिर उसका हाथ अपने कंधे पर रखा

क्योंकि मेरा कंधा ऊपर था, तो मैं रखता तो बैलेंस बिगड़ जाता। और ये भी, कि जिस आधे होश में मील थी, कोई भरोसा नहीं था कि हील में अगर वो लड़खड़ाकर गिर जाती। इसलिए मैंने कंधे से ही पकड़े-पकड़े कैब तक लाया।

अभिनय, कैब का दरवाज़ा खोलकर खड़ा था और गाड़ी की टेक लगाकर देख रहा था। हमने मील को गाड़ी के अंदर आराम से टिकाकर बिठाया, लंबी साँस ली।

प्रियांशी ने उसकी ड्रेस अंदर की, उसका और अपना मोबाइल पर्स में डाला और वो भी कैब में बैठ गई।

फिर मैंने नेपाली को हाथ से इशारा किया ‘पहले आप’ वाले अंदाज़ में और बोला—"विराजिए!”

वो तंज वाली हँसी में जाकर बैठा और कैब का गेट बंद कर लिया।

मैं भी फटाफट आगे वाला गेट खोलकर बैठ गया और बोला—"ना, 3245”।

"अन्ना" ने OTP डाला और गाड़ी सरसराई। अँधेरे रोड पर मौसम में भी ठंडक और नमी बढ़ गई थी।

"प्रिया, बहिनी मैले के गरें? उसले मलाई किन छोड्यो?"—मीलमीत जो तब से शांत थी, अचानक रोते हुए स्वर में बोली।

"भयो, भयो, केही फरक पर्दैन”—प्रियांशी ने उसका चेहरा अपनी छाती और हाथ से भरते, छुपाते हुए कहा।

मैं भी ये सब सुनकर अचानक अपने ख़यालों में खो गया कि जयश्री भी कैसे मुझे छोड़ गई। मैं होता तो शायद जीवन भर उसे नहीं छोड़ पाता। शायद मील की भी यही समस्या थी।

जीवन इतना कठिन है इस पराए शहर में कि जब कोई छोड़ जाता है, तुम्हारा कमरा ही तुम्हें चक्रव्यूह-सा लगने लगता है। न तुम इससे निकल सकते हो, न किसी को बता सकते हो।

धीरे-धीरे सिसक-सिसककर रात-रात भर तुम्हें अपनी ही तिल-तिल मौत को जीना होता है... और फिर जब खुशी की कोई झलक आती है, तो डर लगने लगता है कि अब कुछ बुरा होने वाला है।

तभी पीछे से सीट पर एक थपकी पड़ी। मैं ख़यालों से बाहर आया।

मैंने तिरछी निगाहों से पीछे देखा तो अभिनय सीट में सिर झुकाए, हाथ टिकाए बैठा था। शायद उसे नींद आ रही थी—पी भी लिया था।

तब तक घर आ गया। उसी लेफ्ट से आने वाली गली से, जहाँ से शाम को मील को जाते देखा था। उस मोड़ से मेरा घर लगभग 100-150 मीटर पर था।

"अन्ना, प्लीज़ स्टॉप मढ़तिनी…"—मैंने अचानक कहा।

"क्या हुआ?"—पीछे से अभिनय बोला।

"क्या हुआ क्या? उतर जाता हूँ, मैं पैदल निकल जाऊँगा",—मैंने पीछे देखते हुए कहा।

"हाँ, बहुत दूर है न?"—फिर व्यंग्य करते हुए अभिनय बोला।

अन्ना ने तब तक गाड़ी स्लो कर दी।

"चल चुपचाप रूम",—अभिनय फिर तेज़ लेकिन ठहाके जैसे स्वर में बोला।

मैंने अन्ना को हाथ से इशारा किया—"चलो"। और लगभग 100 मीटर बाद अंकल ने अपार्टमेंट के नीचे गाड़ी रोक दी।

मैं मोबाइल निकालकर पेमेंट करने लगा। जैसे ही कहा—"स्कैनर?"

"अबे ओ अवध नरेश! वॉलेट से पे किया है, ज़्यादा जेफ़ बेज़ोस मत बन!"—अभिनय कैब से उतरते हुए बोला।

"हो गया भैया"—तब तक अन्ना ने भी कहा, राइड कम्प्लीट करते हुए।

"ओके",—बोलकर मैं भी गेट खोलकर कैब से उतर गया और भागकर उस तरफ वाले गेट की ओर गया, जहाँ से प्रियांशी मील को हील उठाकर हाथ में ले रही थी और मील को हल्का धक्का लगा रही थी कि उतरने में मदद हो सके।

मैंने मील का दायाँ हाथ कंधे से पकड़ा और ऊपर की ओर प्रेशर किया। तब तक अभिनय आ गया। इस बार उसने प्रियांशी के हाथ से मील का हाथ लिया और अपने कंधे का सहारा दिया और हमलोग गेट की तरफ चलने लगे।

प्रियांशी ने तब तक जाकर गेट खोला और भागकर लिफ्ट का बटन दबा दिया।

लिफ्ट आ गई—1st फ्लोर पर ही थी शायद। बिल्डिंग 5 फ्लोर की ही थी और अभिनय का फ्लैट था सेकंड फ्लोर पर।

हमने मील को उसके पैरों पर खड़ा करने की कोशिश की। उसकी आँखों में "हुं" की आवाज़ ही आ रही थी। शायद उसे अब नींद घेरने लगी हो।

पीछे प्रियांशी मील को सहारा देकर खड़ी रही—एक और 'लाइफ' की दीवार का सहारा। और आगे हम दोनों लिफ्ट के गेट की तरफ चेहरा किये खड़े हो गये।

अभिनय ने ‘2’ दबाया और खर्रर्रर करते हुए लिफ्ट सेकंड फ्लोर पहुँची।

हम दोनों ने फिर मील को कंधे से पकड़ा। प्रियांशी उसे हमारे हवाले करती हुई भागकर A-201 के फ्लैट के दरवाज़े के सामने खड़ी हुई—बैग में चाबी ढूंढती हुई।

‘गिररर-छन छन’ और ‘घट’ की आवाज़ के साथ दरवाज़ा खुल गया।

इस फ्लैट में कम आना या बहुत बार अवॉइड करने का एक कारण ये भी था—कि जब से हम दोनों बंगलौर आए थे, हमने यही 2BHK लिया था। लोगों ने क्या-क्या घर नहीं बदले, लेकिन शुरुआत में हमें ये पसंद आ गया था।

भले रेंट के हिसाब से ओवरबजट भी पड़ता था लेकिन हमने फ्लैट नहीं बदला। लगभग 8 साल निकाले हैं हमने यहाँ—हर छोटे-बड़े ग़म, यहीं बाँटे। क्या नहीं किया हमने यहाँ।

पर अब जब यहाँ आता हूँ, तो एक तो सारी पुरानी चीज़ें याद आ जाती हैं, ऊपर से अब यहाँ रह पाने का ग़म...

घर की मानो पूरी कायापलट हो चुकी है। अब शायद प्रियांशी के हिसाब की ही दिखती है। बाथरूम से लेकर उनका बेडरूम, दूसरा कमरा—जो कभी मेरा था—वो गेस्ट रूम हो गया है। हॉल, दीवारें, पर्दे… सबकुछ वही होते हुए भी सब बदला-बदला सा लगता है।

हम दोनों मील को गेस्ट रूम में ले गये और उसे टेक लगाकर बेड पर बिठा दिया।

तब तक वो 'हँ-हूँ' करती रही लेकिन जब थोड़ी सहज होकर लेटी, तो पता नहीं अभिनय का हाथ तेज़ी से पकड़ा कि नहीं, लेकिन मेरा पकड़ा।

मैं एकदम सिहर गया—उस पकड़ में अपनापन था, एक ज़रूरत थी, एक कमज़ोरी के समय अपने के पास होने की सहजता थी।

लेकिन मैंने हल्के से अपना हाथ झटके से खींच लिया।

तब तक प्रियांशी पानी का ग्लास निकालकर ले आई।

"देख, इसे थोड़ा सो जाने दे, सोती है ठीक से तो...",—मैंने कहा।

उसकी आँखें बंद थीं—खुल नहीं रही थीं।

मैं और अभिनय कमरे से बाहर आ गये। आते वक़्त दरवाज़े में हाथ मार दिया और गेट भी अपने आप बंद हो गया।

अध्याय 4

अभिनय जाकर हॉल से लगी बालकनी में खड़ा हो गया। फिर सामने वाली बिल्डिंग को देखते हुए, जेब से एक सिगरेट निकाली और मुँह में लगा ली। फिर दूसरी जेब से लाइटर निकालकर कट-कट करके सुलगा ली।

तब तक मैं भी पीछे से आ गया। उसने अपने हाथ से रेलिंग का सहारा लिया, फिर मुड़कर मेरी तरफ चेहरा कर लिया। मैं आकर उसके बगल में दीवार की ओट लगाकर खड़ा हो गया।

वो एक नज़र मुझे देखता, फिर एक नज़र ऊपर, फिर कंखिनी से मुझे देखता, फिर एक नज़र ऊपर... और मैं उसे लगातार देख रहा था।

धीरे-धीरे मुस्कराने लगा वो, मैं भी उसी तरह धीरे-धीरे मुस्कराने लगा। फिर—*हा हा हा हा*—बहुत तेज़ दोनों हँसे। धुआँ उसके फेफड़े में थोड़ा फँसा और वो खो-खो करने लगा लास्ट में और हल्का झुक गया।

"मर जाएगा साले.... कम पिया कर",—मैंने झुंझलाकार बोलते हुए उसे दोनों हाथ से पकड़ा।

"बस कर बे, तू मेरे को बोलेगा? तू साला खुद मरेगा उस कमरे में…"—जवाब में वो भी झुंझलाया और कश मारकर धुआँ हवा में उड़ा दिया।

दो मिनट की चुप्पी रही हम दोनों के बीच।

"ठाकुर, आज रुक जा!"—उसने बिना मेरी नज़र में नज़र मिलाए कहा, सिगरेट का आख़िरी कश मारकर उसे रेलिंग पर बुझाते हुए उसने चेहरा सामने वाली बिल्डिंग की तरफ फिर फेर लिया।

"अबे.... नाsss!!! मैं कैसे रुकूँगा? मील भी है, एक ही रुम भी है", मैंने थोड़ी देर सोचने के बाद अचानक से बोला।

रेलिंग से हाथ झुकाए वो बस आकाश की तरफ देखता रहा—उसने न 'हाँ' कहा, न 'ना' कहा, न ही सिर से कोई इशारा किया और न ही कोई व्यंग्य की बात।

मुझे ये देखकर अजीब-सा लगा। लगभग डेढ़ साल में मैंने शायद उसके अंदर जितने परिवर्तन देखे हैं, पता नहीं उसकी मम्मी या प्रियांशी ने भी उतने महसूस किये हैं कि नहीं।

"पर सोऊँगा कहाँ?"—फिर मैंने अचानक से तेज़ आवाज़ में कहा, थोड़ा हँसने के भाव से।

"मेरो माथा मा",—उसने नेपाली में धीरे से कहा।

फिर अचानक वो मुड़ा और बोला—"आ, चल!"

ख़ैर, मुझे उसके साथ बिताए सालों में इतनी नेपाली शब्द और उच्चारण समझ आ गये थे कि मैं दार्जिलिंग, सिक्किम, सिलीगुड़ी या कुर्सियॉंग में आराम से जीवनयापन कर सकता था। इतने सालों से उसे उसके बाबा, मम्मी, भाई से बात करते सुना, फिर प्रियांशी से भी... अब इतना तो समझ आने ही लगा था।

उसने अचानक से गेट खोला जहाँ मीलमीत लेटी थी। मीलमीत को एक चादर से ढक कर प्रियांशी ने सुला दिया था और खुद बिस्तर के दाईं ओर लेटी थी, फोन चला रही थी।

दरवाज़े की आवाज़ से उसने अचानक दरवाज़े की ओर देखा।

"के भयो?"—उसने अभिनय से पूछा।

"तिमी आज यहीं सुत्छेस्? कि के हो?"—उसने थोड़ी धीमी आवाज़ में पूछा।

"क्यों? ये रूम नहीं जा रहा क्या?"—उसने हिंदी में मेरी तरफ देखते हुए बोला।

"नहीं… मैं तो जा रहा था",—मैंने थोड़ा असहज होते हुए कहा।

"भन न!"—उसने फिर थोड़ा इरिटेट होते हुए पूछा।

"मेरो लुगा सबै रूम मा छन्। अनि यो यहाँ भुइँमा पल्टिरहेको छ..."

"छोड़ न… मैं जाता हूँ, रात हो रही है ज़्यादा",—मैंने मोबाइल जेब से निकालते हुए टाइम देखने का नाटक करते हुए उसकी तरफ देखकर कहा।

"यहाँ तो नहीं, लेकिन एक बेड है…"—और वो बेड से उतरी और नीचे हाथ घुसा कर रुई का बड़ा मोटा रोल किया हुआ गद्दा निकाल दी।

"उम्म... अगर सो पाएगा तो इसमें सो जा, मैं बेडशीट देती हूँ",—वो अभिनय की तरफ देखते हुए बोली।

वो मेरी तरफ देखने लगा, जैसे जवाब तलाश रहा हो।

"पर हॉल में सोएगा, मच्छर फाड़ देंगे तेरी, यहीं नीचे—राइट साइड में जो जगह, उधर?"—इशारा करते हुए दिखाते हुए बोला।

मैं इस वक्त भाव नहीं खाना चाहता था। और वैसे भी गद्दा ठीक ही लग रहा था और माहौल ऐसा था कि मैं बात नहीं काट सकता था।

"हाँ ठीक है। लेकिन उठेगी तो क्या सोचेगी?"—मैंने धीरे से अभिनय के कान में बोला।

"क्या सोचेगी? चूतिया है क्या?"—अपना कान दूर ले जाते हुए उसने थोड़ा तेज से कहा।

मैं थोड़ा सकपका गया क्योंकि प्रियांशी भी मेरी तरफ हैरानी और एक धीमी सी मुस्कान से देख रही थी।

"9th क्लास में है साले! चुपचाप लाइट बंद कर और सो जा। वो जिस हालत में है, वो सुबह भी उठ जाए तो बड़ी बात",—वो फिर थोड़ी ऊँची आवाज़ में और व्यंग्य के भाव से बोला।

"ठीक है ना... मर मत",—मैंने उसकी बात पकड़ते हुए, लगभग उसी की ही आवाज़ में बोला और हम दोनों फिर हॉल की तरफ आ गये।

हॉल में लगभग 32 इंच की टेलीविज़न के सामने एक दो सीटर सोफ़ा और एक-एक साइड में लगे थे। हम दोनों जाकर उसमें धम्म से बैठ गये।

अभिनय ने पैर चढ़ा के टेबल पर पसार कर एक के ऊपर एक रख लिए और रिमोट उठाया। मैंने अपना मोबाइल निकालकर टेबल में रख रहा था, तभी नज़र पड़ी—लगभग दो बज चुके थे।

"कुछ देखेगा?"—उसने बड़े नरम वाले लहजे में पूछा।

"लगा दे मुझे कुछ भी..."

"बकचोदी मत कर",—और वो धीरे से मुस्कराया। और टीवी से टिक-टिक की आवाज़ आने लगी।

उसने यूट्यूब खोला ही था कि मैं बोल पड़ा—"सुन ना..."

"हाँ, बोल",—वो की-बोर्ड की तरफ देखते हुए ही बोला।

तब *खटक* की आवाज़ हुई और प्रियांशी उस कमरे से बाहर आई।

"मैंने बेडशीट बिछा दिया है, एक ओढ़ने के लिए रख दी है। तकिया चाहिए तो एक निकाल लेना उसके सिर के नीचे से, उसमें भी शर्माना मत। म सुत्न जाँदैछु, बुडा़, छिटो आऊ"—और वो फटाफट बोलकर, उनींदी-सी आँखें लिए दूसरे कमरे में चली गई, जिसका कमरा उसी के सामने था।

"क्या बोल रहा था तू?"—उसने नज़रें कमरे के दरवाज़े की ओर से हटाते हुए पूछा, फिर टीवी की तरफ देखा और मुझसे दोबारा पूछा।

"कुछ नहीं... बस ऐसे ही",—मैंने थोड़े अनमने मन से जवाब दिया।

"बोल नाsss!"—इस बार उसकी आवाज़ में थोड़ी तेज़ी थी।

"अबे कुछ नहीं यार, बस यही सोच रहा था कि कब सोने जाना है..."—मैंने बात काटते हुए कहा।

"तो जा, मौत को गले लगा.... जा... जा!"—वो थोड़ा चिढ़ते हुए बोला।

मैं बस मुस्कुरा दिया। फिर आधे मन से उसके चल रहे गानों में खो गया... कभी एड शीरन, तो कभी किशोर कुमार।

कुछ देर बाद उसने टीवी बंद कर दिया और बोला, "जा... सो जा!"—फिर सोफे से उठकर, बिना मेरी तरफ देखे, सीधे अपने कमरे में चला गया।

मैंने भी धीरे से अपना फ़ोन उठाया, हॉल की लाइट बंद की, दरवाज़े की कुंडी एक बार चेक की... और फिर अपने कमरे के बाहर जाकर दो मिनट तक बस खड़ा रहा।

फिर एक लंबी साँस ली... और दरवाज़ा खोलकर अंदर चला गया।

कमरे की लाइट वहीं राइट साइड पर थी। मैंने स्विच बंद किया, चादर खोली, तान ली। मोबाइल चलाते-चलाते कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला।

हाँ, हिम्मत नहीं हुई कि बेड के सिरहाने, जहाँ वो सो रही थी, तक जाऊँ और तकिया ले आऊँ।

अध्याय 5

खटखट... दरवाज़े पर जैसे किसी ने दस्तक दी हो। पहले तो मुझे लगा कि मैं कोई सपना देख रहा हूँ, लेकिन फिर एक हल्की सी ठक की आवाज़ आई और सबकुछ शांत हो गया। तभी मेरा दिमाग धीरे-धीरे होश में आया—शायद मीलामित ने दरवाज़ा खोला था।

मुझे एहसास हुआ कि मैं सीधा सोया हुआ था—दायाँ घुटना मुड़ा हुआ था, बायां पैर सीधा और चादर आधी फिसल चुकी थी, जैसे किसी ने मुझे मुड़-तोड़ दिया हो। शायद चेहरा ढका हुआ था, लेकिन पूरा शरीर नहीं। तभी मुझे अपने मर्द होने का भी अहसास हुआ और मैं झट से करवट लेकर पेट के बल लेट गया।

आधी नींद में ही था लेकिन करवट लेते वक्त यह तसल्ली हो गई कि जिस वजह से करवट ली थी, उसपर चादर खुद-ब-खुद ढकी हुई थी, तो शर्मिंदा होने का कोई सवाल ही नहीं था।

"अबे ओ ठाकुर.... साले, उठ जा!"

नेपाली शायद मेरे कान के पास बहुत ज़ोर से फुसफुसाया। मैं तेजी से कान ढकने लगा, फिर मछली की तरह हड़बड़ा कर घुटनों के बल उठा, पैंट और टी-शर्ट ठीक की और लड़खड़ाता हुआ सीधे बाथरूम में घुस गया।

सबसे पहले एक लीटर पेशाब किया, फिर बेसिन से मुँह में पानी भरकर दो-तीन छींटे मारे।

मुँह पोंछने के लिए कुछ दिख नहीं रहा था, तो कंधे से टी-शर्ट उठाकर पहले दाएँ और फिर बाएँ गाल साफ किये। बाकी हाथ से पोंछा और बाहर निकल आया।

बिस्तर पर गया और मोबाइल उठाया। बैटरी लो का सिंबल तो आ रहा था लेकिन अभी बंद नहीं हुआ था।

सुबह के शनिवार, 10:05 हो चुके थे। मैंने दोनों चादरें खींचकर बिस्तर पर रखीं और बिस्तर को गोल करके बेड के नीचे सरका दिया।

"अबे... बस कर। आ जा!"

चीखते हुए नेपाली ने हॉल से पुकारा। वहाँ से उस कमरे का थोड़ा कोना दिखता था जहाँ सोफ़ा रखा था। मैंने देखा तो मुझे मीलामित और अभिनय की हल्की सी झलक दिखाई दी।

मैंने दोनों चादरें वहीं रखीं जहाँ मीलामित का सिरहाना था और फिर बाहर निकल आया।

मैं टीवी यूनिट के दाईं ओर लगी सॉकेट पर गया और वहाँ लगे चार्जर पर अपना मोबाइल लगाया। मुझे मेरे कमरे से लेकर मोबाइल चार्ज लगाने तक—आँखों के कोने से महसूस हुआ कि मीलमीत मुझे बीच-बीच में देख रही है।

मैं फिर आकर अभिनय के दाईं ओर वाले सोफ़े में धम्म से बैठ गया। डॉबल सीटिंग सेफे में एक तरफ अभिनय बैठा था और दूसरी तरफ मीलमीत। प्रियांशी हॉल से लगे किचन में कुछ कर रही थी।

टीवी जो सामने चल रही थी—शायद कोई नेपाली ब्लॉग चल रहा था। शायद मीला ने ही चलाया होगा क्योंकि रिमोट उसके सामने रखा था।

अभिनय अपनी आँखों के कोने से मुझे घूरे जा रहा था। मैं भी उसे गुस्से से घूरने लगा।

"कस बे? के भन छ? सपना मा?"—अभिनय व्यंग्यात्मक होकर मुस्कराते हुए नेपाली में बोला।

"हम्म… क्या हुआ?"—मैंने अभी भी नींद से पूरी तरह बाहर आने की कोशिश करते हुए पूछा।

"क्या-क्या हुआ? क्या बक रहा था सपने में?"—वो फिर झिड़कते हुए और हँसते हुए बोला।

"क्या बोला मैंने?"—मैंने आवाज़ तेज़ करते हुए पूछा और देखा कि प्रियांशी किचन से मुस्कुरा रही थी और मीलमीत टीवी देखते हुए।

"दीदी, हम रात तक पढ़ रहे थे इसलिए लेट हो गये एग्ज़ाम को। दीदी, हमें मत मारो दीदी। मम्मी... मम्मी…"—हाहाहा करते हुए अभिनय बहुत तेज़ हँसने लगा। मीलमीत भी हँस रही थी, बस उसकी हँसी में आवाज़ नहीं थी। प्रियांशी की तो पीठ थी हमारी तरफ, पर लग रहा था कि वो भी हँस रही थी।

"क्या??? फिर वही सपना???"—मैं फिर अपने ख़यालों में खो गया।

बहुत बार जब मैं जयश्री के साथ फोन पर सो जाता था—तब रात को चलती हुई कॉल पर जयश्री बताया करती थी कि उसने रात में मेरे हड़बड़ाने और चिल्लाने की आवाज़ें सुनीं—"दीदी, मत मारो… मुझसे खुन्नस खाई है इसलिए फेल कर दिये सर… मत मारो…" या कभी-कभी मेरे एग्ज़ाम मिस हो जाने, स्कूल लेट पहुँचने पर दीदी और कभी-कभी पापा की मारकर सपने।

दीदी, जो मुझसे 6 साल बड़ी थी, पर पिता स्वरूप ही मेरे जीवन में रही, अब गुड़गाँव में अपने पति के साथ रहती है और पीहू के होने के बाद काम छोड़ दिया है।

मेरे और पापा के बीच तो जैसे जीवन भर एक खाई रही, पर दीदी से थोड़ी कम लेकिन दूरी बनी रही। आज भी जब 2-4 महीने में उनसे बात होती है, वो हमेशा उसी लहजे में बात करती हैं, जैसे मैं अब भी 13 साल का हूँ। उन्हें ये नहीं लगता कि अगर वो 37 की हो गई हैं, तो मैं भी अब 30 का हो गया हूँ।

मैं पीहू से बहुत प्यार करता हूँ लेकिन मेरी बदकिस्मती यही है कि उससे भी बात नहीं हो पाती।

इसलिए जब अपने से 5 साल छोटे भाई ने ये इच्छा जताई कि वो दिल्ली जाकर B.Sc के बाद MA-हिंदी Literature करना चाहता है, तो मैंने जितनी मेरी चल सकती थी, उतनी मदद की.... क्योंकि कहने को घर का बड़ा बेटा हूँ लेकिन मैं हमेशा ‘बीच’ का ही रहा। मुझसे जल्दी सलाह नहीं लिए जाते, वो हमेशा दीदी के हिस्से ही आते रहे। और इन सब मार-पीट और डर की वजह से ही मैं लखनऊ से जल्दी निकल जाना चाहता था।

"ये लो…" अचानक एक कप मुँह के सामने आया, जिसमें से गर्म-गर्म भाप निकल रही थी। प्रियांशी ने कॉफी का भरा मग मेरे सामने करते हुए कहा और मैंने कप उसके हाथ से लेते हुए अपने ख़यालों से वापसी की।

"चल, आ जा…”,—अभिनय ने सोफ़े से उठते हुए मेरे हाथ पे हाथ मारा और बालकनी की ओर बढ़ गया।

मैं भी उठकर बालकनी में उसके पास जाकर दाईं ओर खड़ा हो गया और अपनी कॉफी की पहली सिप सड़क देखते हुए ली।

अभिनय ने अपनी बॉक्सर के पीछे वाली पॉकेट से सिगरेट का डिब्बा निकाला—एक सिगरेट मुँह में लगाई, टक-टक करके लाइटर जलाया और लाइटर रखते हुए उसी हाथ से सिगरेट निकालकर मुँह से एक बड़ा कश मारा।

हम दोनों फिर चुपचाप खड़े होकर सामने वाली बिल्डिंग को देखने लगे—तो नीले और पीले रंग की इमारत धूप में ज़्यादा ही चमक रही थी, आँखों में चुभने जैसा।

"कब बात करेगा?"—उसने मुझसे फिर धीमी आवाज़ में पूछा, ताकि आवाज़ हॉल में उन तक न पहुँचे।

"क्या बे?"—मैंने कहा, "वो मुझसे क्यों ही बात करेगी?"—मैंने फिर अपनी कॉफी की सिप के साथ कहा।

"क्यों, तेरे काँटे लगे हैं?"—वो फिर व्यंग्यात्मक होकर धीरे से बोला।

"अबे... तू बात तो कर! नहीं हुआ, तो कोई नहीं। वैसे भी मरेगा ही तू उसकी याद में उस कमरे में", वो झिड़कते हुए फिर धीरे से बोला।

"ह्म्म्म्म....", मैंने कहा और चुपचाप अपनी कॉफ़ी पीता रहा।

अध्याय 6

लेप्चा—सिक्किम और दार्जिलिंग के पहाड़ों में रहने वाली ऐसी जनजाति थी, जो पहले 'शमा' धर्म को मानती थी। फिर तिब्बत से बौद्ध लोग आए और धीरे-धीरे लेपचाओं ने बौद्ध धर्म को अपना लिया।

इसी तरह उनकी खुद की लेपचा भाषा भी है, जिससे वे अपने परिवार के बीच में बात करते हैं। पर नेपाली मुक्ताह सिक्किम में 'लिंगुआ फ्रैंका' यानी आम लोगों की बोलचाल की भाषा बन गई है क्योंकि ब्रिटिश काल में पलायन के कारण नेपाली लोग सदियों पहले वहां आ गये थे और यह भाषा, संस्कृत ट्राइब आदि के ज़रिये फैली। इसलिए जब भी मीला कभी अपने घर में बाप से बात करती थी और मैं सुनता था, तो मुझे समझ नहीं आता था। पर नेपाली उसकी जैसी साफ़ और व्याकरणिक तो नहीं, पर मैं अभिनय के साथ रहते-रहते समझने लगा था।

उसके साथ कई बार अच्छी फ़िल्में भी देखीं, जब हम साथ रहते थे। ये मैंने तब गूगल किया था जब मैं पहली बार, आज से लगभग एक साल पहले मीला से मिला था। वरना हमारे देश में इतनी खाईयाँ हैं कि मैं कभी मिल ही न पाया ऐसे किसी इंसान से।

यही सब सोचते-सोचते मैंने टूथपेस्ट का झाग थूका, कुल्ला किया और मुँह धोया। मैं अभी के कमरे में जो बाथरूम था, वहाँ ये क्रिया कर रहा था क्योंकि दो मिनट गेट पे खड़े रहने के बाद जब हैंडल घुमाया और खोलने की हिम्मत नहीं हुई, तो मैं अभिनय वाले बाथरूम में आ गया।

कॉफ़ी पी के तो प्रकृति के नियम का पालन किया गया और निपट के, तौलिए में हाथ-मुँह पोंछ के बाहर निकला।

मीला शायद अभी भी अंदर ही थी, दरवाज़ा बंद ही था। फिर मुझे एक हूक उठी कि मैं अंदर जाकर कम-से-कम हलचल ले लूँ, इसी बहाने जा सकता हूँ। पर फिर हिम्मत नहीं पड़ी और मैं आकर हॉल में इस बार बीच वाली 2 सीटर में बैठ गया और पैर फैला लिए।

जेब से मोबाइल निकाला और प्रणय को फ़ोन लगा दिया—है तो मुझसे 6 साल छोटा, लेकिन बहुत मामलों में मेरा बाप है।

"हाँ भैया.....", प्रणय ने फ़ोन उठाते हुए बोला।

"क्या कर रहे हो?", मैंने ठोक-ठाक ज़माने वाले अंदाज़ में पूछा।

"क्या करेंगे.... आज सैटरडे है, अभी हॉस्टल में हैं अभी अपने लौंडे-लपाड़ों के साथ..."—थोड़ी सी शेखी बघारते हुए बोला।

"ज़्यादा दिल्ली की हवा लग गई है क्या तुम्हें, बतायें पापा को?", मैंने अपने पूरे लखनऊ वाले अंदाज़ में बोला।

"अरे ऐसा नहीं है, भैया.... बस शनिवार था, थोड़ा निकल लिए, फिर रात एक असाइनमेंट का आना है तो बैठना ही है"।

"हाँ, ठीक है..... करो। थोड़ा ध्यान लगाओ पढ़ाई में। बड़ी मुश्किल से मनाया था मम्मी-पापा को"।

"मम्मी को मनाये होंगे आप, पापा को तो..."—और हँस दिया।

मैं भी खीं-खीं किया थोड़ा, फिर बोला—"ठीक.... रखते हैं हम। अभी अगर किसी चीज़ की दिक्कत हो, तो हमको बताना, मम्मी को न परेशान करना"।

"अरे हम सब काम चला लेते हैं जौन पापा भेजते हैं, आप परेशान ना होइये, अपना मजे में काम करिये बस"—वो फिर अल्हड़पने से बोला।

"ठीक है फिर",—और मैंने फ़ोन काट दिया।

मैंने फिर इंस्टाग्राम खोल लिया और स्क्रॉल करने लगा। मुझे मन कर रहा था कि रूम ही निकल जाता अपने, पर ये भी लग रहा था कि अभी नेपाली आएगा तो हौंकेगा कि क्यों चला गया जब मना किया था, कितना मनाना पड़ेगा तुझे एक दिन रोकने के लिए... और मैं बार-बार वही चीज़ नहीं सुनना चाहता था।

मैंने मोबाइल बंद किया, जेब में डाला और उठ गया। सोचा—"यार, अब जो भी है एक बार देख लेना चाहिए, काफ़ी देर से है अंदर, कहीं ये भी ना सोचे कि एक बार देखने भी नहीं आया"। पर डर भी उतना ही लग रहा था कि क्रीप ना लगे... और ये भी कि देख लेना चाहिए कहीं कुछ उल्टा-सीधा...

"नहीं-नहीं..."—मैंने अपनी सोच झटकी।

यही सब सोचते-सोचते मैं फिर गेट के पास जाकर खड़ा हो गया, हैंडल पकड़ा और फिर छोड़ दिया—ऐसे ठीक नहीं डायरेक्ट हैंडल पकड़ के अंदर जाना.... लड़कों का है, लड़का नहीं है।

मैंने खट-खट की एक नॉक, एकदम अपने दिल की धड़कनें महसूस करते हुए। जब कोई जवाब नहीं आया, तो फिर एक ठक-ठक की इस बार आवाज़ के साथ—"हे मीला, आप ठीक हैं?"

मैंने बड़ी हिम्मत करके अपने गले से आवाज़ निकाली। तब भी थोड़ी देर आवाज़ नहीं आई और फिर एक धीमी-सी आवाज़ आई—"हाँ, अंदर आ जाओ"।

और मैं हैंडल घुमा कर अंदर घुस गया।

मीला का फ़ोन बिस्तर के एक कोने में पड़ा था। वो औंधे मुँह लेटी थी, सिर तकिये में घुसा रखा था।

मुझे अंदर आता देख उसने तकिये से सिर उठाया, उठाकर सीधे बैठी, पीछे से एक तकिया लेकर गोद में रख लिया और पीछे बेड के सिरहाने की ओट लगाकर बैठ गई।

जैसे ही मेरी नज़र उसकी नज़रों से मिली, उसकी आँखें काफी लाल-सी लग रही थीं और उसके दूध जैसे गाल भी हल्के-हल्के मोटे पिंक हो गये थे। आँखों के कोनों में हल्का पानी गौर से देखने पे पाया जा सकता था। साफ़ समझ में आ रहा था कि वो काफ़ी रो रही थी।

"Hey, I'm sorry! I just wanted to make sure you are okay. बाहर दिल घबरा रहा था। आप इतनी देर से निकली हो नहीं, लगभग आधे घंटे हो गये, तो मुझे आना पड़ा। I did not mean to disturb you."—मैंने प्यारी और धीमी आवाज़ में बेड के पैर की तरफ खड़े-खड़े कहा।

उसने अपने मुँह को फिर नीचे कर लिया और बोली—"डिस्टर्ब क्या होगा, एक महीने से लगभग सब डिस्टर्ब ही है"।

"Sit na!"—मुझे हाथ से इशारा करते हुए वो उसी भरे गले वाली आवाज में बोली।

मैं वहीं उसके पैरों के बेड पर पास बैठ गया। उसने अपनी निगाहें बिस्तर की ओर झुका रखी थीं।

"I understand, Meela. I know what it feels"—मैंने उसे सांत्वना देने के भाव से, बड़ी मसक्कत के साथ कहा।

"ठाकुर, मुझे ऐसा लगता है जैसे सबकुछ खत्म सा हो गया है..."—और फिर फफक कर रो पड़ी। उसका एक बड़ा मोटा आँसू बिस्तर पर गिर गया।

मैं चाहता था मैं उसे बोलूं—"छोड़ो मीला, रोने से कुछ नहीं होगा", लेकिन रोक लिया, ये सोचकर कि मेरे बिना खुलकर रोए कौन-सा सबकुछ ठीक हो गया मेरे जीवन में—और मैंने उसे बहने दिया।

"You know Thakur, जब से ये सब शुरु हुआ, मैं तिल-तिल मरती रही। तभी तो रात को दो बजे भागकर यहाँ आ जाती थी प्रिया के पास, कि कम-से-कम सो सकूँ। लेकिन नींद तब भी नहीं आती थी। अब तो हल्की-फुल्की बची कुछ उम्मीद सी लग भी रही थी, वो भी आज खत्म हो गई। सब खत्म हो गया..."

वो रोते हुए, थोड़ी तेज़ आवाज़ में कहती हुई मेरी ओर देखने लगी। मैंने उससे नज़रें मिलाईं और उसकी नज़रों में सँभालने वाला कोई अपने की आस देखकर, पहले सोचा कि मैं उसे साइड हग ऑफर करूँ और उसे हिम्मत बंधाऊँ, लेकिन समाज की सारी कुरीतियाँ दिमाग में घूम गईं और मैंने सिर्फ नज़रें मिलाकर गर्दन हिलाई। उन आँसुओं के बीच अपनी असहजता को छुपाता रहा।

थोड़ी देर रो लेने के बाद जब वो चुप हुई और सिसक रही थी, तो मैं झटपट उठा और बोला—"You need something? Coffee? चाय? Water?"

उसने 'नहीं' की मुद्रा में सिर हिलाया।

मैं तब भी झट से कमरे से बाहर निकल गया और बोतल में फ़िल्टर से पानी भर लाया। फिर पैरों के पास बैठ कर बोला—"Have it."

उसने बोतल का ढक्कन खोला और एक घूंट लिया।

जब वो पानी पी रही थी, तब एक सेकंड के लिए मेरी नज़र फिर से उसी रोई हुई आँखों, गुलाबी गालों, अस्त-व्यस्त रेशमी बालों पर अटक गई। और जो एक-एक पानी की बूँद मुँह से बहकर बाहर छलक गई थी, उसके साथ

होते हुए मेरी नज़रें वक्ष तक भी नाममात्र के लिए रुकीं… और फिर अचानक मैंने अपनी नज़रें हटा लीं।

घूंट अंदर निगल कर उसने बोतल थमाई और धीमी आवाज़ में बोली—"आप सिगरेट तो नहीं पीते, मालूम है... पर एक कहीं कुछ मिल जाएगी क्या?"

वो थोड़ा अपनी आँखें फेरते हुए और गला साफ करते हुए बोली।

"देखता हूँ",—ये बोलकर मैं बोतल लेकर उठा, ख़ट से बोतल किचन में रखी और अभिनय के कमरे की तरफ गया।

सब जगह—मेज, ड्रावर, बिस्तर के गद्दे के नीचे भी देखा, पर नहीं मिली जहाँ वो पहले रखा करता था।

"साला, लगता है डिब्बा भी ले गया है..."—खीजते हुए बोला।

"नहीं मिली..."—मैं मन मसोसकर आया, मीला के पैरों के पास बैठ गया और मायूसी से बोला।

"पर अगर आप चाहो तो नीचे चेट्टा की दुकान में जा सकते हैं। थोड़ा मन हल्का हो जाएगा, एक चाय पी लेंगे"—मैंने एक साँस में, धीमे स्वर में आग्रह करते हुए कहा।

वो कुछ बोली नहीं, नीचे देखती रही। फिर बोली—"चलो, एक खा लेती हूँ"।

और बिस्तर से उठकर बाथरूम में घुस गई।

मुझे लगा वो नहीं बोलेगी या बोलेगी कि 'एक ला दोगे क्या', पर चलने को ही रेडी हो गई—ये अच्छा हुआ, मैं मन में सोच रहा था।

मैंने उसके बिस्तर के सिरहाने के कोने में पड़ा फोन उठाया और कमरे के गेट पर वेट करने लगा।

वो बाथरूम से निकली और अपना फोन ढूंढ़ने लगी।

"ये रहा",—मैंने उसे गेट से खड़े-खड़े फोन लहराते हुए दिखाया।

वो कमरे से बाहर आ गई। उसने अपना चेहरा पानी से अच्छी तरह धो लिया था और अपने बालों की एक छोटी सी चोटी बनाकर गोल करके क्लिप लगा ली थी।

अध्याय 7

अदरक वाली चाय हमने काउंटर से उठाई, उसने मुझे दो उंगली से इशारा किया और मैंने चेत्ता को कहा, "ना, वन लाइट्स"... और मीला की तरफ़ देखने लगा।

उसने आँख से इशारा किया और हाथ से लाइट उठाया, जो काउंटर पर ही पड़ा था। मैंने चेत्ता के हाथ से सफेद रंग की सिगरेट ली और मीला की ओर बढ़ा दी।

उसने मेरे हाथ से सिगरेट होठों पर लगाई, उसी हाथ से कट करके लाइट जलाया और सिगरेट सुलगा ली।

मैं पास ही पड़े दो प्लास्टिक के स्टूल को थोड़ा कोने में खिसका कर लगा दिया और फिर दोनों बैठ गये।

मीला बैठे-बैठे सिगरेट के धुएँ उड़ा रही थी और चाय की एक-एक सिप ले रही थी और सड़क की तरफ़ देखती हुई किसी ख़्याल में गुम लग रही थी। मैं भी सड़क की तरफ़ ही देख रहा था, पर कभी-कभी आँख की कनखियों से उसकी तरफ़ भी देख लेता।

"आपके रिलेशनशिप कितने दिन का था?"—उसने अचानक से पूछा बिना मेरी तरफ़ देखे।

मैं सकपका तो गया थोड़ा, जैसे चाय नाक में चढ़ जाएगी, पर एक हल्की खाँसी की आवाज़ के साथ सँभाला खुद को और उसी लोगों के आते-जाते हुए सड़क की तरफ़ देखते हुए खुद को सँभालकर बोला— "चार साल से ज़्यादा हो गये थे"।

वो काफ़ी देर चुप रही और सिगरेट-चाय पीती रही फिर बोली—"माइन वाज़ 7.5, स्टिल वी वेर नॉट एबल टू मेक इट वर्क"।

वो थोड़ी धीमे आवाज़ में बोली।

उसकी चाय ख़त्म हो गई थी, उसने ग्लास को कोने में ही दीवार के पास रख दिया और सिगरेट का ध्यान छोड़ दी लेटी रही।

"ठाकुर, मुझे कभी-कभी लगता है मुझे गंगटोक से जाना ही नहीं चाहिए था बाहर कॉलेज के लिए शिलॉग और फिर ना बेंगलोर"—वह भारी दिल से बोली पर आँख में कोई आँसू नहीं था।

मेरी भी चाय ख़त्म हो गई थी, मैं भी झुककर अपनी ग्लास दीवार ज़ोन में खिसका दी और बोला—"मीला यार, अगर बंधन ही रिश्ते बांध के रखता तो मेरे पास भी इसका कोई जवाब नहीं है। शायद मैं भी अगर लखनऊ में होता, तो मेरे साथ भी ऐसा नहीं होता"।

मैंने इस बार उसकी तरफ़ कनखियों से नहीं देखा, बस अपने ख़्याल में ही गुम-सा रहा।

"वैसे आपका क्या प्रॉब्लम हुआ था?"—मीला ने इस बार मेरी तरफ़ हल्की दुखी और हल्की उत्साहित आँखों से देखते हुए पूछा।

मैं फिर अंदर ही अंदर घबरा गया कि क्या बताऊँ अब इसको। अभिनय के अलावा किसी को नहीं पता ठीक से कि क्या हुआ है मेरे साथ।

"बस वही सब घरवालों के नाटक, छोटे शहरों के चोचले"—मैंने ये दबे स्वर में बोलकर बात टाल दी।

"हम्म..."—उसने बोलते हुए फिर मुँह सड़क की तरफ़ कर लिया।

हम थोड़ी देर ऐसे ही बैठे रहे, सड़क की तरफ़ सारी आती-जाती गाड़ियों को देखते रहे।

"चलो पेमेंट कर देता हूँ"—और मैं उठकर स्कैन किया QR कोड और अन्ना से पूछ कर पेमेंट कर दी।

वो भी उठ गई और हम दोनों फिर चलते हुए फ्लैट पर आ गये। रास्ते में दोनों अपने-अपने ग़म में ही शायद मशगूल रहे और किसी ने कोई बात नहीं की।

वो फिर जाकर रूम पे बिस्तर पर लेट गई, मैं वहीं हॉल पर सोफ़े में बीच वाले डबल सीटर में बैठ गया और फिर अपने उन्हीं ख़यालों में हो गया।

"ठाकुर... ठाकुर... ठाकुर, आप सुन रहे हो?"—एक धीमी सी आवाज़ मेरे कान पर पड़ी और मैं कमरे के दरवाज़े की तरफ़ देखा। मीला हाथ के इशारे से मुझे बुला रही थी।

मैंने आँख उचकाकर इशारा करके पूछा कि—"क्या हुआ?"

उसने फिर बोला चिल्लाने वाले लहजे में—"यहीं आ जाओ..."।

मैं सोफ़े से उठा और कमरे में पहुँच गया और उसके पैरों के पास जाकर बैठते हुए पूछा—"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं, अजीब-सा लग रहा था, सोचा आप ही को बुला लूँ"।

"हूँ..."—मैं जवाब देते हुए उस बेड पर बेतरतीब बेड़ा लेट गया और पंखे की तरफ़ देखने लगा। वो भी मोबाइल में कुछ देखने लगी, फिर झल्ला कर तेज़ से बोली—"अरे यार!"

मैं अपनी दुनिया से वापस आया और पूछा—"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं, ये दिनभर, लड़के Hi-Hello भेजते रहते हैं Insta पर...।"

मैं हल्का-सा मुस्कुराया और फिर नज़र पंखे पर टिका दी।

"ग़लत ज़रूरत है, पर खूबसूरत लोगों को तो मैसेजेज़ आएँगे...''—मैंने मुस्कुराते हुए पर अपने दिल को फड़फड़ाता महसूस करते हुए कहा।

"अच्छी बात होती है एक हद तक, पर एवरीवन सी विद लस्ट। नोबॉडी एक्चुअली केयर्स व्हाट वी फील''—वो फिर रुआँसी-सी होती हुई बोली।

मैंने ये देख मुस्कुराना बंद कर दिया और उसकी नज़रों से नज़रें मिलाई।

"क्या बोलूँ आपको... अब अपनी एक्सटेंडेड फैमिलीज़ तक में अलर्ट रहना पड़ता है। ये तो खूबसूरत जो भी हों, पर हर लड़की को ही सहना पड़ता है ये तो''—वो हल्की सी उत्तेजित आवाज़ में बोली।

"नहीं... नहीं, मेरा वो मतलब नहीं था''—मैं उठकर बैठ गया और उसकी तरफ़ देखते हुए बोला।

"हाँ, मैं समझती हूँ आप जो कह रहे, बस मैं अपना ऐंगल बता रही हूँ''— उसने मुझसे नजर हटाते हुए फिर नज़रें मोबाइल में गड़ा दी।

"कब तक आएँगे ये लोग?"—मैंने बात काटने के लिए जेब से फ़ोन निकाला और अभिनय को फ़ोन लगा दिया।

"हैलो?"—मैंने तेज़ से कहा।

"बोल...''—अभिनय ने कहा।

"कब तक आएगा?"—मैंने उत्सुकता से पूछा।

"क्यूँ? बीच में हड्डी ना बनूँ, इसलिए पूछ रहा?"—वो फिर अपने सर्कास्टिक अंदाज़ में बोला।

"अबे.... भो..."—मैं फिर रुक गया, इतना बोलते ही मीला धीमी-धीमी मुस्कान से मेरी तरफ़ देख रही थी, मैंने कनखियों से देखा।

"हाँ हाँ, 1-2 घंटे और लगेंगे। सैटरडे है साले, टाइम लगता है, याद नहीं क्या?"—वो फिर सर्कास्टिक होते हुए बोला।

"हाउ..."—मैंने हामी भरी और फोन काट दिया और वहीं बैठे-बैठे इंस्टाग्राम खोल लिया।

"कितने बजे तक आएँगे?"—वो थोड़ी देर बाद बोली।

"2 घंटे और लगेंगे, मतलब लगभग 2:30 के बाद ही आ पाएँगे"—मैं फिर बिस्तर में उसके पैरों के तरफ लेटते हुए बोला।

काफी देर चुप रहने और अपने-अपने फोन में घुसे रहने के बाद अचानक से फिर उसने पूछा—"वैसे आप यहाँ आते क्यों नहीं?"

उसने अपने मोबाइल में नज़रें गड़ाए हुए धीमे से फिर पूछा।

मैं अचानक से यह प्रश्न सुनकर अपनी स्क्रॉलिंग में रुक-सा गया और सोचने लगा कि इसका क्या जवाब दूँ। पर मेरे कुछ बोलने से पहले ही वो फिर बोल पड़ी—"वैसे तो वीकेंड में यहाँ ज़्यादा आती हूँ, वीकेंड्स में कभी-कभी रात में या प्रियांशी बुला ले, तब। पर पिछले लगभग एक महीने से कह सकते हैं कि मैं यहीं पड़ी रहती हूँ। मेरा फ्लैट में जाने का मन नहीं करता। ऊपर से मेरी फ्लैटमेट का बॉयफ्रेंड भी आधे टाइम वहीं आता रहता है। बीच में दो-तीन बार मेरे सामने ही अभिनय ने ये बोला कि ठाकुर को बुलाता हूँ, पर आप हर बार मना कर देते थे"।

उसने अपने सवाल को जायज़ ठहराते हुए मोबाइल से नज़र हल्की हटाई और कनखियों से मेरे चेहरे की तरफ़ देखते हुए यह पूछा।

मैंने मोबाइल मुँह के सामने से हटाया और उठकर बैठ गया, पर मैं सामने दीवार की तरफ ही देख रहा था। मुझमें हिम्मत नहीं थी कि मैं उसकी आँखों में आँखें मिलाकर जवाब दे सकूँ।

"बस... वो तो ऐसे ही..."—मैंने धीमे से एक झूठी हँसी के साथ कहा।

"अब मैं यहाँ आके क्या करूँ? अब उसकी अपनी लाइफ़ है... मैं बीच में नहीं आना चाहता"—मैंने दीवार में देखते-देखते कहा।

"मुझे पता है क्योंकि पिछले इतने दिनों से जो मैं सह रही हूँ, मैं बिल्कुल वैसा ही समझ सकती हूँ कि आप कैसा महसूस करते होंगे। और इस वक़्त मुझसे बेहतर शायद कोई ना हो जो कम-से-कम इस चीज़ को समझ सके"—उसने फिर से धीरे-धीरे मोबाइल में आँखें गड़ाते हुए कहा।

मैं कुछ नहीं बोल सका। मुझे नहीं समझ आया कि मैं उसकी हालत का ढाँढ़स बंधाऊँ या अपनी बातें बताऊँ। मैं इसी दुविधा में था कि फिर वो बोली—"पर कमरे में घुसे रहने से भी तो कुछ ठीक नहीं होगा। इसलिए मैं यहाँ चली आती हूँ", उसने उसी अंदाज़ में फिर कहा।

"ऑफ़िस भी तो तीन दिन जाना होता है"—मैंने दीवार में ही देखते हुए उसे जवाब दिया।

"हाँ... चार से छह घंटे आकर फिर घर से ही तो करते होंगे"—उसने थोड़ी तेज़ आवाज़ में प्रश्न वाले लहजे में पूछा।

"हम्म..."—मैं उठ गया बिस्तर से, उसकी तरफ मुख़ातिब हुआ और पूछा—"कॉफ़ी पियोगी क्या? बना दूँ?"

"अभी तो चाय पी है..."—वो मोबाइल से सिर हटाकर मेरी तरफ़ देखती हुई बोली।

मैं थोड़ा मुस्कुराया, मुड़ा और रूम से निकल गया।

मैं किचन में गया, बर्तनों के ढेर से चाय का पैन उठाया और फिर अपने ख़्वाबों में खो गया।

“क्या कर रहा हूँ मैं? मुझे कोई हक़ नहीं है ज़्यादा फ्रैंक होने का, अपनी चीज़ें बताने का। वैसे भी अगर बता दूँ, तो क्या कोई समझेगा? शायद जिसपर जो बीतती है, वही समझ सकता है, बाक़ी कोई नहीं... कोई भी नहीं।

पर मीला मुझसे इतनी क्यों बात कर रही है? क्या वो मूव ऑन होना चाहती है? या क्या ये दर्द उसका इतना बड़ा है कि वो इसे झेल नहीं सकती और दूसरा ऑप्शन तलाश रही है कि इस दर्द को ज़्यादा सहना ही न पड़े?

नहीं... नहीं यार... वो कितनी गंभीर है... उसकी सिर्फ़ आँखें देख के पता चलता है क्योंकि खाली बैठेगी तो उसे याद आएगा। इसलिए कोशिश कर रही है कि मोबाइल में ज़्यादा समय घुसी रहे”।

इन्हीं सवालों के घेरे में पड़-पड़कर मैंने दो कप में दूध वाली कॉफ़ी निकाल ली, दोनों एक-एक हाथ में पकड़ी और रूम की ओर बढ़ गया। धक्का देकर दरवाज़ा खोला। वो अभी भी बिस्तर पर ही थी, पैर पसारे हुए।

मैं बिस्तर में उसके सिरहाने तक गया। "ये लो कप”—उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला।

उसने ना-नुकुर नहीं की, कप ले लिया। पैर फिर मोड़ लिए और सिराहने की टेक लगाकर बैठ गई। न कोई सवाल किया... ये भी हो सकता है कि उसे कॉफ़ी की महक पहले ही आ गई हो। लड़कियों की नाक इस मामले में बहुत तेज़ होती है।

मैं उसके पैरों के पास बेड में बैठ गया और दोनों कॉफ़ी सुड़कने लगे।

अध्याय 8

खाना खाकर सभी वहीं हॉल में बैठे थे—सिंगल पर मैं, बीच वाले डबल सीटर पर अभिनय बैठा था जिसके सामने टेबल पर पैर थे। उसके पीछे से प्रियांशी के पैर निकले हुए थे और वो लगभग उसकी ओर सिर करके लेटी थी। उसके बगल में, मेरे सामने वाली सीट पर मीला बैठी थी। उसने भी अपने पैर टेबल पर पसार रखे थे। अभिनय कुछ फ़ुटबॉल के वीडियो देख रहा था यूट्यूब पर। मीला और प्रियांशी लगी हुई थीं बात करने में और एक-दूसरे के फ़ोन में दिखाने में—"ये ड्रेस देख Myntra पे.... कितनी अच्छी है! इसके साथ ये सेट अच्छा है" वगैरह-वगैरह।

साफ़ पता चल रहा था कि सबका आलस आसमान पर था।

मैंने भी अपना फ़ोन जेब से निकाला। अभिनय जो टीवी में देख रहा था, ने देखा कि टाइम 4:30 हो गया था। लगभग 3.5 घंटे बाद जाना है मूवी के लिए।

मैं अपने ख़यालों में फिर धीरे-धीरे खोने लगा। हल्की-हल्की सी घबराहट, बेचैनी-सी होती है मुझे हमेशा नए लोगों से मिलने में या कहीं जाने में—शायद यही आजकल का fancy word 'Introvertness' होता होगा।

कितने ही साल… लगभग जब 4-4.5 साल पहले शुरु-शुरु में जयश्री से बात शुरु हुई थी और फिर बहुत महीनों की मशक्कत के बाद जब पहली बार उससे हज़रतगंज के कॉफी शॉप में मिलने का प्लान बन पाया… तब से सोचूँ, तो ऐसी फ़ीलिंग कभी हुई ही नहीं..... और आज फिर उसी बेचैनी से पैर फड़फड़ा रहा, दिल मानो जल्दी-जल्दी धड़ककर साँसें ही ख़त्म कर देना चाहता हो।

ऐसा नहीं था कि उसके बाद जयश्री से मिलने में बेचैनी नहीं होती थी। होती थी, पर शायद पहली सी नहीं।

वो भी क्या समय था—जब स्कूल की common friend तो नहीं, बस जान-पहचान या नाम जानते हुए भी प्रियांशी ने तो शुरु में भाव ही नहीं दिया था मुझे। संजीव की कृपा बनी थोड़ी, तो धीरे से बात को धक्का लगा।

आज जब वो दिन याद करता हूँ... जब वो कॉफी शॉप में चिकनकारी पहने आई थी—काली कुर्ती, सफेद पलाज़ो... कानों में दो झुमके, गुच्छेदार, दाईं तरफ़ की एक लट बाहर, कंधे में टाँगने वाला एक काला पर्स, काले रंग का मास्क और काली हील।

वो कोविड आने से पहले ही लखनऊ का कंस्ट्रक्शन देख-देखकर मास्क पहले ही लगाने लगी थी।

क्या दिन थे वो... उसके बाद ही जीवन बदल गया था।

शायद मृत्यु के वक़्त जो कहा जाता है कि 20 मिनट तक दिमाग़ चलता है और तुम्हारे जीवन के सारे दृश्य दिखाता है... तो इतना है कि अगर ये बात सच होती होगी तो उसका अच्छा-बुरा, उसके साथ और मेरे स्वयं के साथ जो भी हुआ, दुख-सुख के सारे लम्हे, सब न दिखे... पर ये कॉफी वाला दिन ज़रूर याद रहेगा।

एक हाथ मेरे आँखों से आगे से निकल गया, जब मुझे कुछ समझ नहीं आया तब तक एक आवाज़ आई धीरे से—"अबे, ठाकुर! ठाकुर..."

और मैं फट से अपने ख़यालों से बाहर आया।

"आ इधर.... बालकनी में....", अभिनय ने सोफ़े से उठते हुए कहा और उसने उंगली से सिगरेट का इशारा किया।

मैं भी उसके पीछे-पीछे बालकनी में आ गया।

वो दीवार की तरफ़ ओट लगाकर खड़ा हो गया और मैं दूसरी तरफ़ की दीवार पर। वो फिर अपार्टमेंट की तरफ़ ही देख रहा था, सिगरेट जला ली थी।

मैं भी सामने वाले अपार्टमेंट की तरफ़ ही देखता रहा, कुछ बोला नहीं मैंने।

"सोच रहा हूँ अमा को कुछ दिन के लिए यहाँ ले आऊँ", उसने अचानक से धीरे से कहा।

मैंने ये सुनकर उसकी तरफ़ देखा और बोला—"तेरा भाई?"

"रह लेगा कुछ दिन, वैसे भी उसका समझ नहीं आता क्या करना चाहता है।"

"मतलब?"

"कभी बोलता है म्यूज़िक ट्राय करेगा, कभी UPSC करेगा, कभी टैक्सी बिज़नेस"।

"ओह, तो डिग्री छोड़ दी?"

"नहीं… कर रहा है डिस्टेंस से", वो रुक-रुककर कश मारते हुए बोलता जा रहा था।

"ओह, यहीं ले आ फिर उसे भी कुछ दिन..."

"वो नहीं आएगा, उसकी एक गर्लफ्रेंड है। उसी में और अपने फ्रेंड-सर्कल में लगा रहता है दिनभर।"

"हम्म..."—मैं कुछ कह नहीं सका।

"देखो क्या करता है—बिज़नेस करेगा या प्रेपरेशन", उसने सिगरेट बुझाकर बालकनी की रेलिंग में फेंकते हुए कहा।

और हम दोनों फिर वहीं कुछ देर बिल्डिंग की तरफ़ देखते रहे।

"चल छोड़... तू जा आज मज़े करके आना, शक्ल ठीक कर ले—अब तो इतने दिन बाद कहीं जा रहा है", वो मेरी तरफ़ मुख़ातिब होते हुए बोला।

मैंने बस मुस्कुरा दिया और हम दोनों फिर अंदर आ गये।

सोफ़े में बैठते हुए अभिनय बोला—"कति बेला मूवी छ?"

मीला, जो उस एक सीटर सोफ़े में लगभग पूरा मुड़-तोड़ से पसार चुकी थी और अभी भी मोबाइल में घुसी थी, बिना अभिनय की तरफ़ देखे बोली—"१० बजे"।

उसने मेरी तरफ़ देखा और बोला—"तो तू रूम मत जा, मेरा कपड़ा लगा ले—हो जाएगा। मेरा XL शर्ट तुझको L जैसा आ जाएगा"।

"अबे नहीं, जा के आता हूँ, नहा भी लूँगा", मैंने फिर धीरे से कहा।

"अबे हाँ, तेरा XL वहीं पड़ी है, यहीं नहा ले",—किचन के D-Mart वाले बैग्स की तरफ़ इशारा दिखाते हुए उसने कहा।

मीला और प्रियांशी दोनों खिखिया दीं मोबाइल में घुसे हुए और मैं फिर शर्मिंदा हुआ।

मैं फिर कुछ नहीं बोला।

अभिनय का फोन घूँ-घूँ कर के वाइब्रेट होने लगा। उसने जल्दी से फोन उठाया और बालकनी की तरफ़ चला गया।

उसके जाते वक़्त मैंने प्रियांशी को देखा—वो उसे घूर रही थी, जब तक वो बालकनी में नहीं पहुँच गया।

मैंने भी अपना मोबाइल फिर जेब से निकाला और लग गया इंस्टाग्राम स्क्रॉल करने में।

"आप रूम नहीं जाओगे?"—मैंने मीला की तरफ़ देखते हुए पूछा।

उसने मोबाइल से नज़रें हटाईं और मेरी तरफ़ अपने उस मायूसी वाले चेहरे से देखा।

"क्यों? भगाना चाहता है तुम क्या?"—प्रियांशी पट से बीच में बोल दी।

मुझे वो थोड़ा अटपटा, अजीब लगा। पर मैं सिर्फ़ मुस्कुरा दिया—कोई जवाब नहीं था मेरे पास इसका, न मैंने देने की कोशिश की।

"नहीं, At least आज तो उसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी, वहाँ से some of my stuffs and clothes are here."

"ओह..."—मैंने 'ओह' कहा और फिर कुछ नहीं पूछा, वापस मोबाइल में लग गया।

अध्याय 9

कपड़ों में मेरा L और अभिनय का XL एक जैसा ही था।

कॉलेज के लगभग आख़िरी साल से जब हमने बढ़ना छोड़ दिया था, तब से कपड़ों का यही हिसाब-किताब रहा।

हाँ, मेरी कमर अब 28 से 32 हो गई है और अभिनय की 30 से 32। मैं दोगुनी तेजी से बढ़ा इन 9–10 सालों में।

कितनी ही बार वो पहले डेट्स में मेरे कपड़े और मैं उसके कपड़े पहन कर चला जाता था।

दीपक के कपड़े हमें नहीं आते थे क्योंकि वो थोड़ा भारी था और तब ओवरसाइज़ ट्रेंड में नहीं था, पर उसके जूते हम पहन लेते थे।

8 नंबर के जूते तीनों को आ जाते थे।

ख़ैर, फटेहाली के दिनों में जो काम आए, वही जीवन भर याद रहते हैं। मैंने नीली जीन्स, काली टीशर्ट और उसके काले कैनवस शूज़ पहन लिए। मैं हाल में आया, जहाँ अभिनय मोबाइल हाथ में लिए टीवी चला रहा था। मेरे आते ही मेरे तरफ देखकर वो खी-खी करके हँसने लगा।

मैं सोफे पर धम्म से बैठ गया और उसकी ओर ग़ुस्साते हुए देखकर बोला—"क्या हुआ बे?"

वो फिर टीवी की तरफ़ यूट्यूब चलाते हुए बोला—"कुछ नहीं, सही है"।

"समझ रहा हूँ... तेरा सही है...", मैं टीवी की तरफ देखते हुए बोला।

तब तक गेस्ट रूम वाला दरवाज़ा खुला—मीला एक डार्क नीले रंग की ड्रेस पहने, जो घुटनों तक जाती थी।

कान में मैचिंग ईयररिंग्स और हील्स पहने और एक पर्स साइड में नीले रंग का, हॉल के फ़र्श से टक-टक करते हुए बाहर आई। उसके पीछे-पीछे प्रियांशी।

सोफ़े के पीछे पहुँचकर मीला बोली—"बुक करूँ कैब?"

मैं अभी तक जो उसकी ख़ूबसूरती देखकर अवाक था—जो मुझे किसी भी मॉडल से कम आकर्षक नहीं लग रही थी—अचानक से फिर अपने होश में आया और जल्दी से अपना मोबाइल निकालकर कहा—"मैं करता हूँ...”।

उसने ना ‘हाँ’ कहा, न ‘ना’।

वो आकर उसी वाले सिंगल सीटर पर बैठ गई और टांग के ऊपर टांग चढ़ा ली। प्रियांशी अभिनय के बगल में आकर बैठ गई।

"कति बजे आउनुहुन्छ?"—प्रियांशी ने मीला की तरफ़ देखते हुए पूछा।

"एक बजेसम्म त मुभी छ”—मीला ने कहा।

"2 मिनट में आ रही है”, और मैंने अचानक से बीच में ही कहा।

अभिनय अभी भी टीवी की आवाज़ भले थोड़ी धीमी की थी, पर वो उसी में लगा था। थोड़ी देर तक शांति रही, सब अपने मोबाइल में घुसे रहे और कैब आ गई।

"चलो, आ गई...”,—मैंने मीला की तरफ़ बिना देखे ही हवा में कहा, सोफे से उठकर दरवाज़े की तरफ़ आ गया और गेट खोल दिया।

मीला भी उठी और उनसे बोली—"आउँछु ला”।

उसके पीछे प्रियांशी ने ‘Bye’ कहा और गेट बंद हो गया।

मैं लिफ्ट के सामने मुँह किये लिफ्ट दबाकर इंतज़ार कर रहा था। मीला भी पीछे आकर खड़ी हो गई। तब तक *घटक* की आवाज़ के साथ लिफ्ट आ गई। हम दोनों उसमें घुसे, लिफ्ट खाली थी। मैं दाएँ था, वो मेरे बाएँ खड़ी थी। हील पहनने की वजह से काफ़ी लंबी भी लग रही थी। उसका परफ्यूम पूरे लिफ्ट को महका उठा—जैसे परियों का उद्गम यहीं से हुआ हो।

ग्राउंड फ्लोर आ गया। हम दोनों बाहर निकले और मैंने बढ़कर कैब का दरवाज़ा उसके लिए खोल दिया, वो बैठ गई।

मैं भी बैठने जा ही रहा था, एक पैर अंदर घुसाकर ऊपर देखा—रात हो गई थी, तो रोशनी कम थी, लेकिन मैं सामने वाली बिल्डिंग की लाइट्स की वजह से साफ़ देख सकता था—फ़र्स्ट फ़्लोर की बालकनी में आधा झुका अभिनय, एक हाथ में सिगरेट जलाए और दूसरे हाथ से 'ठीक है' का इशारा कर रहा था। मैंने भी उसे एक हाथ वाला ही इशारा किया।

"3298" ओटीपी बताया, दरवाजा बंद किया और कैब चल पड़ी।

मीला अपने मोबाइल में लगी रही और उसके परफ्यूम की महक ने वातावरण को फूलों से सजा दिया था, ।

मैंने खिड़की का शीशा थोड़ा नीचे किया।

बाहर की बिल्डिंग, बादल छाया आसमान देखते हुए मैं फिर अपने ख़यालों में खो गया—"फिर इतने सालों बाद ऐसे अकेले किसी लड़की के साथ बाहर जा रहा हूँ"।

अध्याय 10

पिक्चर श्री जे. आर. ओपेनहाइमर जी पर थी, जिन्होंने इस क्रूर वर्ल्ड को सबसे क्रूरतम हथियार दे दिया। उस बम की नजर से आजकल के समाचार देखकर लगता है कि कल ही दुनिया खत्म हो जाएगी।

ख़ैर, पिक्चर स्लो थी पर मेरे लायक थी—इंटरेस्टिंग थी।

पर हाफ़ टाइम आते-आते मीला, जो मेरे दाईं वाली कुर्सी पर बैठी थी, वो झुकने लगी। मेरी नज़र बीच-बीच में जब उसकी तरफ़ जाती, तो उसकी आँखें फ़िल्म की रोशनी में झपकियाँ लेती हुई बंद होती, खुलती दिखाई देती थीं।

हाफ़ टाइम होने से ठीक पहले उसे ज़ोरदार एक झटका लगा—शायद क्योंकि वो मेरी तरफ झुकी हुई थी, दाएँ हाथ से अपने सिर को टिकाया हुआ—वो फिसल गया और काफ़ी तेज़ का झटका लगा। मैं झट से खड़ा हो गया। मुझे लगा कि उसे नींद अब बहुत तेज़ आ रही है और ये पिक्चर पूरी देखना ज़रूरी नहीं है।

"चलो... चलो, चला जाए..."

वो अधनींद में मेरी तरफ देखकर फिर बोली—"क्या हुआ?"

मैंने बोला—"कुछ नहीं... आओ, चला जाए घर ही... इंटरवल होने वाला है"। और उसे इशारा किया निकलने का।

पीछे की सीट वाले लोग 'सिट डाउन, सिट डाउन!' चिल्लाने लगे, तो मैं थोड़ा झुक गया।

मीला खड़ी हुई, अपना पर्स सम्भाला, मैंने उसके हील हाथ में उठा लिए और हम थिएटर के बाहर लॉबी में आ गये।

मैंने पूछा हल्की आवाज़ में—"कैब बुक करता हूँ… घर चला जाए?"

"हम्म...", वो बोली। अभी भी नींद में ही थी मानो।

"रेस्टरूम से आती हूँ", वो बोली। मैंने झुककर उसकी हील उसके पैरों के पास रख दिये।

इससे पहले कि मैं ऊपर उठता, उसने मेरे सिर का सहारा लेकर हील में अपने पैर डालने शुरु कर दिये, तो मैं स्थिर खड़ा था।

पहले दायाँ और फिर हाथ बदलकर बायाँ पैर डाला और अपनी हील पहन ली।

मैं उठा और उसकी आँखों में देखकर मुस्कराया। उसने भी मुस्कराते हुए मेरी तरफ देखा और 'थैंक्यू' बोलते हुए बाथरूम की तरफ चली गई।

मैंने झट से मोबाइल निकाला और तब तक कैब बुक कर ली—कैब 7 मिनट में आ रही थी।

थोड़ी देर बाद मैं और मीला नीचे आ गये, हम पहले की तरह ही कैब में बैठ गये। इस बार मीला एकदम उस कोने में नहीं बैठी थी और मेरा दिल भी धड़क तो बहुत तेज़ रहा था, लेकिन मैं भी सहजता बनाए रखते हुए बाईं तरफ से थोड़ा सीट के बीच की तरफ बैठने का प्रयास कर रहा था। बस, मुझे इस मोमेंट में यही समझ नहीं आ रहा था कि ये जो मैं कर रहा हूँ, वो ठीक है या ग़लत।

मैंने OTP बताया और अन्ना ने गाड़ी बढ़ा दी।

वो थोड़ा और खिसककर सीट के बीच की तरफ आई और अपना सिर सीट के सहारे पीछे लगाया और फिर शायद नींद लेने की कोशिश करने लगी।

मैं भी सीधे देख रहा था, पर फिर मैंने अपनी तरफ़ वाली खिड़की की ओर मुँह फेरा और बाहर देखने लगा और हल्का-सा खिसकने की कोशिश की—खिड़की की ओर—कि मीला को असहजता न महसूस हो। तभी मुझे एक ख़याल हुआ कि उसका बैग बीच में रखा है। मेरी नज़र उसके बैग की तरफ़ गई—उसमें से एक बटर पेपर का पाउच झाँक रहा था, शायद उस बैग का बटन खुल गया था।

मुझे लगा ये क्या है—और मैंने धीरे से उसे निकालने की कोशिश की, ऐसे कि आवाज़ न हो और मीला की आँख न खुल जाए।

थोड़ी देर की कोशिश के बाद मैंने वो पाउच निकाल लिया। उसमें कुछ गोल-गोल जलेबी की तरह चीज़ें रखी थीं।

मैंने खाने से पहले जो भी थोड़ी-बहुत रोशनी कैब में रोड की लाइट से आ रही थी—उसके सहारे गूगल लेंस से उसकी फोटो ली और गूगल सर्च किया: **Sel Roti**—चावल से फ्राई करके बनाई जाने वाली एक डिश जो सिक्किम, दार्जिलिंग, उत्तराखंड, नेपाल, और भी देशों के कई जगहों पर खाई जाती है।

मैं वो पढ़ते हुए एक पीस तोड़ने की कोशिश कर रहा था कि थोड़ी बटर पेपर की आवाज़ हो गई और मीला जग गई।

मेरे हाथ में Sel Roti का पाउच देखने से पहले ही, कोई सवाल किये बिना, मेरी तरफ़ बिना देखे हुए उसी उनींदी-सी आवाज़ में वो बोली—"ये बाहर आ गया था..."

वो अधनींद में सी आवाज़ में बोली—"निकाला नहीं... निकाला आपने..."

और मुस्कुराते हुए मेरा कंधा अपनी ओर थोड़ा झुकाया और अपना सिर उसपर रख दिया।

मैं फिर अवाक रह गया। मेरा दिल फिर बहुत तेज़ धड़कने लगा।

"सेल रोटी है... आमू ने भेजा था... खा लो आप", वो इतना कहकर बेफिक्री से फिर सोने का प्रयास करने लगी।

मैंने फिर वो टूटा हुआ पीस निकाला और उसे मुँह में रखा। चावल की सटीकता से बना, मिठास भरा ये फ्राय जलेबी Sel Roti—नहीं पता क्यों, पर उस वक़्त वो मुझे दुनिया की सबसे स्वादिष्ट चीज़ लगी।

ये मीला की आमू का प्यार था, मीला का था या मुझे भूख लगी थी, इसीलिए—पर उस वक़्त जो भी था... यही था।

उस पूरे रास्ते में हम दोनों ने ये चावल की जलेबी खत्म कर दी। मीला उसी आधी नींद में रही, बस ठीक से सोई नहीं।

हम पहुँचने ही वाले थे कि मीला का फ़ोन बजा।

"निद्रा लागिरहेको थियो, पूरै फिल्म हेरिनँ"—मीला ने कहा।

"हेर्छु, रूममा जान्छु, तिमीहरू सुत्" मीला ने फिर उसी नींद भरी आवाज़ में बोला और फ़ोन काट दिया।

"प्रियांशी पूछ रही थी, कब तक आओगी...", उसने फ़ोन बगल में रखते हुए कहा।

"मैं देखती हूँ रूम जाऊँ कि नहीं। नहीं... मैं नहीं करती... मुझे वो जेनिफर और उसके बॉयफ्रेंड के टाइम पे रूम में रहना..." वो थोड़ी नाराज़ होती हुई बोली।

"कुछ नहीं... जाना ही होगा... कहाँ सोऊँगी कहाँ, वरना..."—उसी अंदाज़ में उसने फिर कहा।

"अगर आप कम्फ़र्टेबल हो, तो... चलो मेरे यहाँ..."—मेरी हकलाती हुई ज़ुबान ने फट से ये निकाल तो दिया, लेकिन दिल मानो बाहर निकलने को था।

"अरे... फिर आपको अनकम्फ़र्टेबल नहीं होगा?"—उसने मेरी तरफ अचानक देखते हुए कहा। शायद उसे अचंभा हुआ, वो एक्स्पेक्ट नहीं कर रही होगी कि मैं उसे अपने यहाँ स्टे करना ऑफर करूँगा।

"नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं है... एक गद्दा मेरे बिस्तर के नीचे भी रोल करके पड़ा है..."—मैंने मुस्कुराकर कहा।

वो भी मुस्कुरा दी।

"Ohh... तब ठीक है। चादर तो है न एक्स्ट्रा? कल रात चादर होकर भी आप कितनी गहरी नींद में थे, पता चल रहा था सुबह..." और वो ठहाका मार दी।

मैं थोड़ा मुस्कुराया, पर शर्मिंदा भी हुआ।

अध्याय 11

घूँ... घूँ... घूँ... टन-टन... मेरे कानों में एक धीमी-सी आवाज़ पड़ी पर शायद अब मेरे सपने में भी कोई घंटी बजा रहा था।—टिन-टिन... टिन-टिन... और लगातार घंटी बजने लगी।

तभी बगल से तकियों की दीवारों को पार करते हुए मीला का हाथ आया और मुझे थोड़ा हिलाने की मुद्रा में हिलाते हुए बोली—"ठाकुर... ठाकुर... देखो कोई आया है...”। और मैं होश में आया... और झटके से उठ गया।

मैंने सिरहाने से मोबाइल उठाया—6 मिस कॉल—अभिनय के।

टिन टॉन्ग—फिर से घंटी बजी।

दिन के 8 बज चुके थे। मैं समझा वही होगा—“पर वो क्यों आया है इतनी सुबह?” मैंने ऐसे ही एक सरसराती नज़र मोबाइल स्क्रीन से हो रही रोशनी में मीला की ओर डाली, वो चादर लेकर पेट में बल खाए उलटी सोई हुई थी।

ख़ैर, मैं उठकर गेट की तरफ़ जाने को उठा, एलेक्सा के पास जाकर सिसकी भरी आवाज़ में बोला—"Ahhlexxaa... turn on hall light..."। और फिर गेट की तरफ़ बढ़ गया।

मैंने माइक्रो-आई से देखा—अभिनय आगे खड़ा था और उसके बगल से मुझे कुछ बाल दिख रहे थे। वो प्रियांशी ही थी उसके पीछे।

मुझे अचंभा हुआ—“ये दोनों यहाँ इतनी सुबह क्या कर रहे हैं? बताया तो था इसे कि मीला यहीं आ गई है रात को!”

मैंने अंदर से ही आवाज़ दी—"कौन है?" और दरवाज़े की कुंडी खोली... और दरवाज़ा खोल दिया।

दरवाज़ा खुलते ही प्रियांशी बिना आ-ऊ देखे अभिनय के पीछे से निकली और मुझे रास्ते से धकियाते हुए अंदर सरसराते हुए चली गई।

"यो मुजी चिक्नी यहाँ सुती राखिछ। म मर्निङदेखि यसलाई कल गर्दै छु, यसका बाबुले मलाई बिहानै फोन गरेर उठाइदिनुभयो—अनि यसले त केही भनिन पनि, कि यहाँ आएकी छ। उठ जा था। तेरी कण्डो न हाल्दुँछु उठ!"—उसने मीला के नितम्बों पर थपकी जैसे एक-दो चाँटे मारे।

मैं और अभिनय कमरे के गेट के पास खड़े थे—और चाँटे पड़ते ही हम दोनों एक-दूसरे को देखकर अपनी हँसी को रोकने का प्रयास करने लगे।

मीला हाथ से शफराती हुई, कंबल से मुँह निकालकर उठी और सिरहाने के बल बैठते हुए बोली—"के भयो?"

उसने मोबाइल उठाया और बोली—"आमा...आमा... मा बाबाले किन यति धेरै फोन गर्नुभएको?"

मीला ने ज़ोर देकर अपनी आँखें खोलते हुए कहा।

"के? उहाँहरूलाई ब्रेकअपको बारेमा थाहा भयो?"—प्रियांशी ने ग़ुस्से से उसकी तरफ देखते हुए कहा।

"ओहो, थाहा भयो रे? छे, भगवान्..."—मीला ने थोड़ा दुखी और अफ़सोस जताते हुए कहा और मोबाइल में कुछ टाइप करने लगी।

"बिहानै निद्रा बिग्रियो, अनि राति यहाँ आएकी थिई भनेर भनिन पनि छैन"—प्रियांशी फिर गुर्राई और मेरी तरफ भी घूर कर देखा इस बार।

"बाबालाई टेक्स्ट गरिसकेँ, पछि कुरा गर्छु। ए, निद्रा बिग्रेर पो झर्किरहेकी रहिछ"—मीला ने प्यार से मुस्कुराते हुए कहा।

"च्यह मुजी!"—और प्रियांशी भी मुस्कुरा दी, और वो उसके बगल में अब सिरहाने लगाकर बैठ गई,

मेरी तरफ देखकर बोली—"चलो ठाकुर जी, चाय पिलाओ"।

"ठीक है... बनाता हूँ..."—मैं प्रियांशी की ओर बिना देखे और मीला की ओर एक तिरछी मुस्कान के साथ देखकर किचन में घुस गया।

अध्याय 12

लगभग एक बजे चुके थे। हम चारों चेत्ता की दुकान में बैठे थे। हम चारों ही फुटबॉल की जर्सी और शॉर्ट्स में थे और बैग्स में स्पाइक वाले जूते थे।

मैच हम 3-1 से हार गये थे। अभिनयअभिनय ने ऐप से कोई ग्रुप जॉइन किया है, उसी से आपस में लोग आके खेलते हैं। उसमें ज़्यादातर लोग नॉर्थईस्ट के ही हैं।

मीला मेरे सामने स्टूल पर थी और बगल में अभिनय, फिर प्रियांशी। मैं तो चाय ही सुदक रहा था। मीला और प्रियांशी ने मौसंबी जूस लिया था और अभिनय ने चाय और सिगरेट का। उसके धुएँ की हवा छत छूने को थी।

इतने सालों में ये तो हुआ कि मेरा प्यार क्रिकेट की तरफ से थोड़ा आकर्षण फुटबॉल की तरफ हुआ। अभिनय की वजह से ही था। ऐसा कि अब मैं वो विदेशी यूरोपी लीग तो नहीं देखता पर अपने इंडियन मैचेस जब सुनील छेत्री और उनकी टीम खेलती है तो देख लेता था, जैसे - सैफ कप हुआ था।

स्कूल में तो हमें सिर्फ़ गोल पता था, फुटबॉल के पीछे भागते रहते, गोल होता तो कर देते बस। इसके साथ इतने साल रहते थोड़ा बहुत समझ आ गया है—डिफेंडर, मिडफील्डर, फॉरवर्ड्स, पेनल्टी क्या होता है।

इसको देखकर समझ आता है—कोलकाता और दार्जीलिंग से लेकर मिजोरम तक पूरा का पूरा बेटका कितना उत्साहित रहता है फुटबॉल के लिए। लड़के तो लड़के, लड़कियों का भी क्या कहना। कभी-कभी मुझे

बताता था कॉलेज टाइम में ये लड़की हम लोगों के साथ फुटबॉल खेलने आती थी स्कूल टाइम पे, अभी स्टेट टीम में है।

उसके बातों को सुनकर पता चलता था कि सपनों के टूट जाने की आवाज़ नहीं होती पर उसका शोर जीवन के हर ख़ामोशी में सुनाई देता है।

मैंने उठाकर अपनी ग्लास काउंटर पर रख दी और स्कैन करने लगा।

पीछे थोड़ी दूर से एक 'खी खी' की आवाज़ सी आ रही थी। दो-तीन लड़के चाय लिए कुछ अपने में बात कर रहे थे। मैंने एक नज़र मारी, उसमें एक लड़का जाना-पहचाना लगा। उसे मीला जहाँ पहले प्रोटानशी भी रहा करती थी, वाली गली में मुड़ते हुए देखा है बहुत बार और इसी चाय दुकान पर भी कई बार, जब अभिनय के साथ आया करता था।

"क्रीम मोमो है?" और खी-खी की धीरे से आवाज़ में हँसने लगे।

मुझे सुनाई दे गया। मुझे अजीब-सा उबाल अंदर से आया पर मैंने नज़रअंदाज़ किया कि शायद ग़लत सुना है और उनकी तरफ देखा—वो लोग बेफिकर से बैठे थे। मुझे नहीं पता उन्होंने सुना कि नहीं।

मैं पैसे देकर वहीं बैठने के लिए जा रहा था कि फिर मेरे कानों में आवाज़ पड़ी—"नूडल्स खाके नूडल्स जैसे ही हगते होंगे... खी-खी... इनकी लड़कियों की गा..." बस इतना सुनते ही मैं मुड़ा और उनकी तरफ उछल पड़ा।

"क्या बोल रहा है बे भोसड़ी के....! अभी औकात दिखा दूँगा!"

मैंने उनके नज़दीक जाकर आँखों में आँखें डालकर बोला।

तब तक दुकान के पीछे से चेत्ता आ गये छुड़ाने के लिए। तब तक अभिनय उठकर आ गया—" क्या हुआ बे?"

"अरे... ये साला उल्टा-सीधा बोल रहा है!"—मैं गुस्से से एकदम ऊँची आवाज़ में बोला।

मीला और प्रियांशी भी मुझे ऐसे देखकर डरते हुए भागकर मुझे छुड़ाने के लिए आईं।

"क्या बोल रहा.... अब.... अब ना भोसड़ी के..."—मैंने उसके मुँह में लगभग घुसते हुए कहा।

जिसके सामने मैं था उसके पीछे दीवार थी और उसके दोनों दोस्त मुझे धीरे-धीरे छाती में धक्का देते हुए कह रहे थे, "अरे, जाओ न आप भैया...!"

"क्यों जाऊँ साले, बोल अब...!"

"मीला, मेरे बैग से स्पाइक निकालना... बोलो ना भोसड़ीवालो! अभी सिर खोलता हूँ तुम्हारे..."—मैं मीला से हाथ का इशारा करते हुए स्पाइक्स माँगते हुए कहा।

फिर उसके एक बंदे ने मुझे पीछे धकेला, तो मैंने तेज़ से चिल्लाते हुए कहा—"धक्का मत दे!आ तेरी औकात दिखाता हूँ!"

अब थोड़ा-बहुत जो अवधीपन मेरे अंदर बचा था, बाहर आ रहा था। अभिनय ने मुझे पीछे से पकड़ा हुआ था।

"छोड़ ना दाजू, छोड़ बे, इसकी औकात दिखा दूँगा आज यहीं!"

अब भेदभाव की पराकाष्ठा तो यही है। कुछ शब्द उन्होंने इस्तेमाल किये, जो मुझे बेइज़्ज़ती करने वाले लगे पर मेरा 'दाजू' बोलना मुझे सार्थक लगता है। यही बीमारी है हमारे समाज की, कि हमें अपनी चीज़ें सही लगती हैं। काले को 'कलुआ' बोल देना प्यार-सा लगता है, मोटे को 'मोटा', पतले को 'सुकड़ा' और उसे एक प्यार के लहजे में ले लिया जाता है।

"बोला क्या उसने? बोल तो!"—अभिनय ने चिल्लाते हुए कहा।

"कुछ नहीं... देना.... बूट देना... बताता हूँ अभी इसे। मीला, दो ना!"—मैंने चिल्लाते हुए मीला की तरफ़ देखा, तो वो बेचारी चौंक गई शायद।

प्रियांशी ने इशारे से मीला को मना कर दिया—मैंने वो भी देखा।

"दो न प्रिया प्लीज़, ये आपलोगों को मोमो बोल रहा है और भद्दी बातें बोल रहा है!" मैं प्रियांशी की तरफ़ देखते हुए बोला।

"छोड़ न, बोलने दे..."—प्रियांशी ने मेरे सामने आते हुए बोला।

तब तक उसका एक दोस्त बोला—"भैया, हमने कुछ नहीं बोला..."।

"रुक बेटा! अभी तुझे आर्टिकल 21, IPC 153 में अंदर करवाऊँगा न, तब पता चलेगा!"—और मैंने मेरे सामने वाले लड़के का गला पकड़ लिया।

जो भी पढ़ा था कॉलेज के बाद कुछ समय के लिए—पापा के कहने पे UPSC के लिए कुछ किताबें उठा ली थीं—वो सब बक दिया।

सब मुझे छुड़ाने लगे। चेत्ता तेज़ से चिल्लाकर बोला—"भैया, आपलोग बाहर जाओ, इधर गड़बड़ नहीं करना!"

मेरा दायाँ हाथ तब तक अभिनय की पकड़ से छूट गया और मेरा लहराया हुआ घूँसा एक लड़के के गाल की हड्डी पर लगा—भगवान का शुक्र था कि आँख पर नहीं लगा।

और घूँसा पड़ते ही तीनों लड़कों ने मिलकर मुझे दोगुनी ताकत से खींचा, पर उसके दोस्त उसे लगभग घसीटते हुए वहाँ से ले गये।

मैं लगभग गिरते-गिरते बचा और चिल्लाता रहा—"दिख मत जाना यहाँ, सालों! वरना तमीज़ से पेश आना सिखा दूँगा!"

अध्याय 13

शाम हो चली थी, इतवार ख़त्म होने को था।

कल से फिर ऑफिस है—वो बेचैनी जो अकसर हम जैसे काम करने वालों को रहती है।

एक अजीब-सी बेचैनी कि कल फिर से आज़ादी छिन जाएगी।

ये बेचैनी इतनी आम होती जा रही है कि ये हमें अपने कामों से, जिनमें कभी रुझान हुआ करता था, उनसे भी दूर ले जाती है।

शायद इन बड़े दफ़्तरों के लोग अब बहुत छोटे होते जा रहे हैं।

ख़ैर, खाना खाकर हम चारों गेस्ट रूम वाले बेड पर पसार गये थे।

शायद 6–7 महीनों में ये पहला वीकेंड ऐसा निकला था जिसमें मैंने बात-चीत, खाने-पीने से लेकर मार-पीट, हाथापाई—सब कर लिया था।

अभिनय और प्रियांशी सिरहाने की तरफ़ टेक लगाकर बैठे थे। मैं, अभिनय के पैरों की तरफ़ अधलेटा-सा बैठा था और मीला आड़ी लेटी-सी, लगभग बैठी थी—उसने मुँह पर हाथ से टेक भी लगा रखी थी। सब अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त थे और बातें भी थोड़ी-बहुत चल रही थीं।

"कल वो बग रिज़ॉल्व करना है यार?" अभिनय ने अचानक से कहा।

"क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"अरे कुछ नहीं… फ्राइडे को एक एप्लिकेशन क्रैश हो रहा था बे। फिक्स ही नहीं हो पाया। कल सुबह से मेरे ऊपर चढ़ जाएगा वो, कि पहले फिक्स करो उसे जल्दी", अभिनय ने मायूसी से कहा।

"ओह, कहाँ… लोकल में फट रहा है या पाइपलाइन में?" मैंने पूछा।

अभिनय और मैंने लगभग साथ ही अपना करियर शुरु किया था। वो शुरु से डेवलपमेंट लाइन में चला गया और मैं पहले टेस्टिंग, फिर धीरे-धीरे डेवऑप्स इंजीनियरिंग का काम करते-करते डेवऑप्स इंजीनियर बन गया। जयश्री ने भी उस वक़्त मुझे अभिनय के साथ-साथ बहुत प्रोत्साहित किया था, वरना प्रोफ़ाइल स्विच करना थोड़ा कठिन हो जाता।

"पाइपलाइन में", अभिनय ने कहा।

"अच्छा, तो तुम लोग…" मैं इतना कह ही रहा था कि प्रियांशी ने बीच में टोका

"यार, तुम अपनी इंजीनियरिंग की बातें सबके सामने मत किया करो"।

मैं ठिठक गया और चुप हो गया। अब उसे कौन बताए कि जब हम अकेले मिलते भी हैं कभी, तो सिर्फ़ प्रोजेक्ट्स की बात नहीं करते। हम 70 चीज़ों पर बोल-विचार लेते हैं—जैसे, पॉलिटिक्स, क्रिकेट, फ़ुटबॉल, फलाना-ढिमका।

कभी-कभी लड़कों की ऐसी दोस्ती, काश लड़कियां समझ पातीं।

"भोलि कति बजे अफिस जान्छयौ?"—अभिनय ने मोबाइल से नज़रें हटाकर मीला की तरफ़ देखते हुए पूछा।

मीला ने मोबाइल की अपनी छोटी-सी दुनिया से बाहर आकर कहा, "9:30 बजे"।

"यो पनि त्यही बाटो जान्छ, वाइटफिल्डको अफिससम्म पठाइदिन्छ", अभिनय ने मीला से कहा।

मैं थोड़ा सकपका गया और अभिनय की तरफ़ देखने लगा। उसने मेरी तरफ़ देखा और आंखों से आश्वासन देते हुए हल्की-सी पलकें झपकाई। मैंने मगर अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिये और उसी तरह मोबाइल में लगा रहा।

तब तक प्रियांशी बोल पड़ी, "हाँ, छोड़ देना ना ठाकुर, रोज़ सुबह ऑटो नहीं मिलता, फिर मुझे बोलती है ड्रॉप करने को"।

मैंने प्रियांशी की तरफ़ हल्की-सी मुस्कान के साथ देखा और कहा, "ठीक है, बोलेंगी तो छोड़ दूँगा। वैसे मैं भी आधे समय ऑटो से ही जाता हूँ"।

"तब तो मैं आपको छोड़ दूँगी", मीला बीच में बोल पड़ी और सब हल्का-सा मुस्कुरा दिये।

कभी-कभी शाम यूं ही बढ़ती जा रही थी। सब अपने-अपने में थोड़ी-बहुत बातें करते हुए भी फोन में लगे हुए थे। मैं अपने आधे लेटे हुए शरीर को और आराम देता हुआ पूरा लेट गया। अभिनय के बाद एक-एक करके हम सब फैलकर लगभग सीधे हो चुके थे। जाने मुझे क्या हुआ, अपने कमरे में तो रात को भी नींद नहीं आती और यहां झपकी लगने को थी कि सपनों ने मुझे घेर लिया।

शायद पास में बैठे किसी के मोबाइल की 'गू-घू' की आवाज़ से यह सपना शुरु हुआ, जिसमें मुझे अचानक श्री का फोन आया। जयाश्री को मैं ज़्यादातर 'श्री' कहकर ही बुलाता था। मैं अपने कमरे की ही मेज़ पर बैठा ऑफिस का कोई काम कर रहा था। फोन देखते ही मैं सकपका गया—शादी के इतने दिनों बाद क्यों फोन कर रही है? ऐसा क्या हुआ? पहले तो मैं

इंस्टाग्राम वगैरह चेक कर लिया करता था, लेकिन अब तो धीरे-धीरे इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप, हर जगह से ब्लॉक हो चुका था, तो फिर ये अचानक?

मैंने बड़ी हिम्मत करके फोन उठाया और एक सिसकती हुई आवाज़ कानों में पड़ी।

"हम्म... भानु..."

"क्या हुआ, आपने अचानक फोन किया?"

"हाँ... वो एक रिक्वेस्ट थी"।

"हाँ, बताओ ना"।

"इनको पता चल गया है पिछला सब। शक तो था ही, उड़ते-उड़ते कुछ-कुछ सुना भी था, पर अब जीमेल सिंक हुई चैट्स और ड्राइव में पहले की बहुत-सी फ़ोटो देख ली हैं"।

मैं कुछ बोल ही नहीं सका।

"बात घर तक चली गई है। भैया से लड़ाई-झगड़ा हो रहा है कि ऐसी बात थी और आप लोगों ने झूठ बोलकर शादी कराई। यही सब इतने दिन से चल रहा था, इसीलिए तुम्हें हर जगह से ब्लॉक कर दिया और अपने अकाउंट भी डिलीट कर दिये"।

"हम्म..."

"बिनती कर रही हूँ तुमसे कि इंस्टाग्राम, फेसबुक या कहीं भी कुछ मत रखना, मत डालना। गूगल ड्राइव में भी प्लीज़ सब डिलीट कर देना। और इंस्टाग्राम ध्यान से देखना, किसी लड़की की फेक प्रोफाइल बनाकर तुम्हें रिक्वेस्ट भेजेंगे, चेक करने के लिए। थोड़ा सतर्क रहना, भानु। मेरा तो हो गया जो होना था, अब मेरे जाने के बाद भी मेरी बदकिस्मती तुम्हारा पीछा न छोड़े, मैं क्या करूं"।

"नहीं… ऐसी कोई बात नहीं है"।

"ऐसी ही बात है। मुझे धमकी दी है। ये पुलिस में हैं, तो कह रहे थे हेडक्वार्टर्स से तीन साल की कॉल डिटेल्स निकलवाऊंगा, खुद ही पता चल जाएगा"।

"ऐसे नहीं होता, बिना मेरी मर्ज़ी के मेरी डिटेल्स निकलवाई तो प्राइवेसी केस कर दूँगा मैं"।

"पता नहीं क्या होगा, बात बहुत आगे बढ़ा दी है। बस पापा की इज़्ज़त खराब न हो, इसलिए इतने सोच-समझकर दोस्त के यहां बहाना बनाकर आई हूँ, अनब्लॉक करके कॉल कर रही हूँ। इसके बाद नंबर डिलीट कर दूंगी और कॉल लॉग क्लियर कर दूंगी। सारे सोशल मीडिया अकाउंट्स भी डिलीट कर दिये हैं"।

"हम्म…"

मेरे गले में शब्द अटके हुए थे, जैसे किसी ने ज़बरदस्ती दबा दिये हों। मुझे अंदाज़ा था कि ये ज़िंदगी में आखिरी बार है जब मैं उसकी आवाज़ सुन रहा हूँ।

"बहुत 'गुनाहों का देवता' पढ़वाते थे ना मुझे… आज मैं सुधा आखिर में बन ही गई। बस सुधा की तरह जाना ही बाकी है इस दुनिया से। देखना, कभी यार-दोस्त से तुम्हारी खबर मिले तो अच्छी ही मिले। चलो, हम जाते हैं अब… हमारी बिनती स्वीकार करना"।

"हैलो… हैलो… श्री… हैलो…"

और फोन कट गया।

"अरे ओ, ओ ठाकुर!"

अभिनय ने मुझे झकझोर दिया और मेरी आंखें खुल गईं।

"हां..."—मैंने अचानक कहा।

"क्या हुआ बे, फोन छाती पर रखा है और 'हैलो-हैलो' चिल्ला रहा है?" अभिनय ने व्यंग्यात्मक अंदाज़ में कहा।

मेरे पास उसका कोई जवाब नहीं था। बस सोच यही रहा था कि चार महीने पहले आया फोन... अब अपनी बारी लगाकर आजकल आए दिन लौट-लौटकर आ रहा है। वो मेरी उससे आखिरी बात थी... जो अब कभी भी बासी नहीं होती।

मैं उठ गया और फोन में देखा—लगभग 7 बज चुके थे। मुझे चाय पीने का मन तो हो रहा था, पर दोपहर की घटना के बाद मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी कि जाऊँ या नहीं। कश्मकश में पड़ा मैं उन तीनों को देख रहा था। वो लोग अब भी वैसे ही पड़े हुए थे।

वैसे तो मैं आजकल उनसे ज़्यादा मिलता नहीं था और मीला से तो मिलना-जुलना वैसे भी कम होता था। ये लोग फुटबॉल खेलने के अलावा शायद ज़्यादा कुछ करते नहीं। अब मीला और प्रियांशी नहीं करतीं तो शायद अभिनय भी नहीं करता, या फिर उसके अंदर इतना बदलाव आ गया है कि अब वो पहले जैसा नहीं रहा, या कोई और वजह हो—पता नहीं। पहले तो हर वीकेंड कभी फुटबॉल खेलने चला जाता, कभी मैच देखने और कभी-कभी पब्स में भी। या फिर पूरे दिन टीवी सीरीज़ ख़त्म करते रहते। अब उसके जीवन का वो दृश्य बदल चुका था।

ख़ैर, मैंने मन मसोसकर नज़रें उनसे हटाईं और उठकर हॉल की तरफ़ जाने लगा कि अभिनय ने टोका, "क्या हुआ बे?"

मैं उसकी तरफ़ मुड़ा और बोला, "कुछ नहीं, हॉल में जा रहा हूँ"।

"क्यों?"—वो फिर थोड़े व्यंग्यात्मक लहज़े में बोला।

मैं बस हल्का-सा मुस्कुरा दिया और आगे बढ़ा ही था कि उसने आवाज़ दी, "चलेगा, चाय दुकान?"

मैं कमरे के दरवाज़े पर ठिठक गया। कभी-कभी कैसे-कैसे वो समझ जाता है कि मेरे मन में क्या चल रहा है।

मैं बिना मुड़े ही बोला, "आ जा", और हॉल में आ गया। जाकर बालकनी में खड़ा हो गया। मेरा मन कुछ ठीक नहीं लग रहा था और सपने के आने से प्रियांशी नाम की याद मुझे चारों तरफ़ से घेरने लगी थी।

अगर जीवन आसान होता, तो मैं भी ऊपर वाले फ़्लोर पर अभिनय की तरह रहता। सब कितना सही होता—चारों-पाँचों लोग काम पर जाते, मेरे चेहरे पर भी खुशी होती।

"क्या हुआ? चल"—अचानक अभिनय ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मैं हल्के झटके से वास्तविकता में लौट आया।

"हम्म… चल", मैंने कहा।

हम दोनों कमरे से निकल आए और लिफ़्ट का इंतज़ार करने लगे। हम दोनों ही चुप थे।

अध्याय 14

हमेशा की तरह मेरे हाथ में चाय और अभिनय के हाथ में चाय के साथ एक किंग्स जल रही थी।

"अब मीला भी धीरे-धीरे तुझसे खुलने लगी है", अभिनय ने कहा।

मैं कुछ नहीं बोला, बस सड़क की तरफ़ देखता रहा।

"देख, जो तू सोच रहा है ना, ज़िंदगी ऐसे ही निकाल देगा—ऐसा होने वाला नहीं है। कहीं नहीं भाग सकता तू इन सब से। मुझे देख, साला मैं कितना बोलता था… मैं कहाँ निकल पाया सब से, भाई? नहीं सकेगा तू भी। ये सब बातें दारू पी के सोचने में सही लगती हैं, लेकिन प्रैक्टिकल नहीं हैं। कोई किसी के यार में ज़िंदगी नहीं काट सकता और जो काटता है, उसे लोग पागल बोलते हैं—लिख के ले ले मुझसे। कोई एस्केप नहीं है। हमें यही करना पड़ेगा जो हम कर रहे हैं"।

और वो अपनी चालू धुन में उड़ता रहा।

"हम्म्म…"—मैंने फिर कोई भारी प्रतिक्रिया नहीं दी।

"दे, लिख के"—मैंने अचानक कहा।

"क्या?"—अभिनय ने हैरानी से पूछा।

"कि हमें यही करना पड़ेगा, हम अपनी लाइफ़ बदल नहीं पाएंगे। जो भी सोचा था, उसका पचास प्रतिशत भी नहीं"—इस बार मैंने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा। शायद मैं उसका आत्मविश्वास चेक करना चाहता था।

"हाँ तो ले ले",—उसने आधी ख़त्म हुई चाय का ग्लास नीचे रखा, दायें हाथ से मोबाइल निकाला, व्हाट्सऐप में गया और लिखा—

"हमलोग कीड़ा ही पैदा हुआ है, हम यही काम करेंगे। रोज़ रोएंगे, रोज़... और एक दिन यही करते-करते मर जाएंगे। हमलोग अपना लाइफ़ कभी ठीक नहीं कर सकेगा"।

"'सकेंगे' लिख",—मैंने उसकी हिंदी सुधारने के लिए थोड़ा पिंच मारा।

उसने बिना कोई जवाब दिये लिखना जारी रखा—"सकेंगे। यही हमारा फेट है - Abhi" और उसने भेज दिया।

मेरे मोबाइल में 'टिंग' की आवाज़ हुई। मैंने बाएं हाथ से मोबाइल निकाला और मैसेज पढ़ लिया।

वो बोला, "स्क्रीनशॉट कर और उस स्क्रीनशॉट का एक मेल भी भेज अभी"।

"अबे, हो गया, हो गया। कोई नहीं, गुस्सा क्यों हो रहा है?"

"नहीं, भेज ना तू। मेल में पड़ा रहेगा"—उसने मोबाइल अंदर रखकर चाय उठा ली और फिर अपनी पुरानी मुद्रा में आ गया।

मैं उसकी बात अब और नहीं टालना चाहता था। स्क्रीनशॉट लिया, जीमेल में जाकर मेल कर दिया, मोबाइल रख दिया और फिर चाय पीने लगा।

"अब तू मेरी बात मान, स्टार्ट कर, डेट करना इसको"—उसने फिर कहा।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

"क्या बोलूँ बे तुझे अब... पहली बात तो बुड्ढे हो गये हैं, कोई मिलेगी नहीं। मिली भी तो टिंडर-विंडर, बम्बल और जो भी बकचोदी है, उसका आजकल कोई भरोसा नहीं है"।

"वो छोड़... मम्मी को कब लाएगा, वो बता?"—मैंने बात करते हुए और चाय का ग्लास काउंटर पर रखते हुए कहा।

"वो तो नहीं पता अभी, वहाँ भी देखना होगा। भाई भी है"—वो सिगरेट बुझाते हुए और चाय के आखिरी घूंट पीते हुए बोला।

"हम्म्म…" इसके आगे मैं नहीं पूछना चाहता था कि क्या हुआ। मुझे लगता है कि आजकल ये किसी प्रॉब्लम में है। जितनी बार भी इन महीनों में मिला, पूछना चाहा, लेकिन हमेशा चुप रह गया। आज भी वही किया।

मैं उठकर स्कैनर से पेमेंट किया और हम दोनों फिर रूम की ओर बढ़ गये।

तभी रास्ते में चलते हुए मैंने पूछा, "मीला क्या अब यहीं रहने लगी है क्या?"

"हाँ बे, समझ ले। अब क्या करेगा… और कोई है भी नहीं यहाँ। न ऑफिस के कोई ऐसे दोस्त हैं और प्रियांशी की जगह जो रूममेट आई है, उसमें इसके साथ थोड़ा-बहुत झगड़ा होता रहता है चीज़ों को लेकर। तो इसका मन है। कभी-कभार कुछ ज़रूरत पड़ी, कपड़े वगैरह लाने हों तो जाती है, वरना ज़्यादातर यहीं रहती है। ख़ासकर जब से उसका ब्रेकअप हुआ… और कहते-सुनते हम लिफ्ट में आ गये"।

"इसलिए तुझे कह रहा हूँ, पर तू पता नहीं क्या सोच रहा है"।

"हम्म्म… ठीक है, देखेगा"—मैंने फिर रूखा जवाब दिया।

हम लिफ्ट से निकलकर दरवाज़े के सामने थे। उसने घंटी बजाई और हम फिर हॉल में दाख़िल हो गये।

कुछ चढ़ चुका था। मीला इस बार किचन में थी। प्रियांशी सोफ़े पर बैठी, टेबल पर पैर रखे टीवी देख रही थी।

मैं जाकर दाएँ वाले सोफ़े में बैठ गया और मोबाइल निकाल लिया। अभिनय प्रियांशी के बगल में बैठ गया।

"आज के बन्दै छ त? साथी!"—अभिनय ने ज़ोर से चिल्लाकर मीला को आवाज़ दी।

"भात!"—मीला ने उसी लहज़े में जवाब दिया।

"आनि भात सँगै?"—अभिनय ने फिर पूछा।

"बन्दा गोभी!"—मीला ने फिर जवाब दिया।

"ला…" और अभिनय चुप हो गया।

मुझे अब लगा कि चलना चाहिए, खा-पीकर फिर लेटूँ। कल ऑफिस भी जाना होगा।

"चल, निकलता हूँ",—मैंने अभिनय से कहा।

"सुबह जा सकेगा ना? तो क्यों हड़बड़ा रहा है… 2–3 मिनट में तो रूम पहुँच जाएगा, तब भी साला"—अभिनय ने बिना मेरी तरफ़ देखे व्यंग्यात्मक लहज़े में कहा।

अब मैं प्रियांशी के सामने बोलना तो नहीं चाहता था, पर फिर कह दिया, "अबे, फिर वही बात… कहाँ रुकूँगा यहाँ, दो ही रूम हैं"।

जैसे परसों रुका था… और जैसे उसने ये जवाब, मुँह पर ही लगा रखा था। अब क्या बोलूँ उसे… जितना मैं अकेले रहने की कोशिश कर रहा हूँ, ये उतना ही मुझे बाहर रहने को मजबूर कर रहा है।

ख़ैर, मैं सोफ़े से नहीं उठा और बैठा रहा।

थोड़ी देर में खाना बन गया। हम सबने थोड़ी-बहुत हँसी-ठिठोली के साथ खाना खाया। सब बीच-बीच में अपने मोबाइल से चिपके भी रहे और सामने नेपाली व्लॉग चलता रहा। वो नेपाली व्लॉग अब अभिनय के घर में ऐसा लगने लगा था जैसे कोई मॉडर्न सीरियल ही हो।

मैं समझ सकता था बेचारे पर क्या गुज़रती होगी। जैसा कि नॉर्थईस्ट में कोरियन कंटेंट ज़्यादा ट्रेंड में रहता है, लेकिन अभिनय को तो वो भी उतना पसंद नहीं आता था। कभी-कभी अपने बचाव में कह भी देता—"अनरियलिस्टिक है ये सब। ये इंडिया है, इंडिया कभी कोरिया या जापान नहीं हो सकता। इंडिया सिर्फ इंडिया रहकर ही आगे बढ़ सकता है"। पर कुछ

लोग ये नहीं समझ पाते थे कि वो कोरिया को गलत नहीं कहता था, बस अपने देश को आगे रखने की बात करता था। पर कभी-कभी भैंस के आगे बीन बजाने जैसा हो जाता है। ऐसे लोग कम ही होते हैं, पर होते ज़रूर हैं।

ख़ैर, खा-पीकर रात के करीब दस बज चुके थे। अभिनय और प्रियांशी अपने कमरे में चले गये। मुझे लगा अभिनय शायद खाने के बाद वाली सिगरेट कमरे में ही पिएगा। मीला भी किचन से हाथ धोकर अपने कमरे की तरफ़ जा रही थी कि शायद उसने मुझे सोफ़े पर बेसहारा-सा मोबाइल चलाते हुए देख लिया।

"आप नहीं सोएंगे क्या अभी?"—कमरे के दरवाज़े पर खड़े होकर उसने पूछा।

मैं थोड़ी असहज मुस्कान बिखेरते हुए उठा और कमरे की तरफ़ आ गया।

मीला बिस्तर पर चढ़कर दायीं ओर बीच में दो तकिये रखकर बोली—“अरे, आप ऐसे रोज़-रोज़ नीचे लेटोगे तो अच्छा नहीं लगेगा”।

मैं कुछ कह पाता उससे पहले ही उसने हँसकर कहा—“घबराइए मत, खाऊँगी नहीं आपको”।

"अरे नहीं-नहीं..."—मैंने भी मुस्कुराते हुए सिरहाने से चादर उठाई और दायीं ओर लेट गया। बायीं ओर मीला थी।

अब तक मैं मीला के आस-पास रहने या उससे बात करने में भी असहज हो जाता था क्योंकि पहले तो कभी-कभार ही मिलना होता था या थोड़ी-बहुत बात। पर अब पिछले एक-दो दिनों में कम-से-कम उसकी झिझक तो निकल गई थी। मेरी धड़कन भी सामान्य थी, लेकिन बगल में हल्की-सी तकिये की दीवार के पास लेटना फिर भी अजीब-सा एहसास दे रहा था। आकर्षण भी एक अजीब चीज़ है—मन को कई समंदरों से गुज़रना पड़ता है।

मेरा ईयरबड तो कमरे में ही रह गया था। आज मुझे बिना किसी यूट्यूब के ‘थंडरस्टॉर्म’ साउंड लगाए ही सोना था। पर दिमाग़ के तूफ़ान को शांत करने का और कोई ज़रिया मेरे पास नहीं था। अगर इस वक्त अभिनय यहाँ

होता तो ज़रूर कहता—“रिलैक्स करने का अपना तरीका रख”। ख़ैर, उसके तरीके हर आदमी पर लागू भी तो नहीं होते।

मीला करवट लेकर मोबाइल में कुछ देख रही थी और मैं भी उसी ओर था। मेरा ध्यान उसके मोबाइल से आती आवाज़ों पर टिका रहा, शायद कोई मौका मिल जाए बात करने का।

दो-तीन बार सोचा, कुछ बोलूँ… लेकिन यही अंतर्मुखी स्वभाव बार-बार मुझे रोक देता था।

ख़ैर, हिम्मत करके मैंने पूछ ही लिया—

"आप भी डेली फुटबॉल खेलते हैं क्या, सिक्किम में?"

मीला ने मोबाइल स्क्रॉल करना बंद किया, करवट बदलकर सीधी हुई और बोली—

"डेली तो नहीं, पर हाँ…"

"हमलोग जब स्कूल में थे ना, तब हमारी टीम होती थी। संडे को… गंगटोक में बीच में एक बहुत बड़ा ग्राउंड है, पालजोर स्टेडियम। सुना होगा आपने? बहुत सारे सिक्किम के प्रोग्राम वहीं होते हैं”।

और मुझे कितनी कोफ़्त हो रही थी कि बचपन से मुझे सिक्किम के बारे में गंगटोक राजधानी होने के अलावा कुछ नहीं पता था। कभी-कभी अगर न्यूज़ में कुछ बड़ा सुन लिया तो बस। या आर्मी से जुड़ी खबर। शर्म-सी आ रही थी—अपने ही देश के इतने खूबसूरत और महत्वपूर्ण राज्य के बारे में इतना कम पता था।

मीला ने कहना जारी रखा—

"हमारी टीम थी लड़के-लड़कियों की मिक्स। अब भी जब घर जाती हूँ तो खेल लेती हूँ”।

नॉर्थईस्ट की तरह मीला की बोलचाल में भी 'हम', 'सकता', 'सकते' और स्त्रीलिंग-पुल्लिंग का फेर रहता था। कभी-कभी गलत भी हो जाता था, लेकिन मुझे उससे बात करना बहुत अच्छा लगता था।

"तो आपका टीम है क्या अभी भी?"—मैंने फिर पूछा।

"नहीं… अब वो स्कूल वाला टीम तो नहीं रहा। आधे लोगों की शादी हो गई। पहाड़ों में वैसे भी काम की कमी है—जैसे उत्तराखंड, हिमाचल, वैसे ही दार्जिलिंग, कालिम्पोंग, सिक्किम। सब लोग गंगटोक के ही नहीं थे। कोई लाचुंग से, कोई नामची से, कोई पेलिंग से, कोई नाथूला के पास के गाँव से। सब मिलकर स्कूल में पढ़ते थे। अब कोई बचा नहीं हमारे टाइम का। सबको जिम्मेदारियों ने घेर लिया है। तो जब भी जाती हूँ, एक-दो लोग पहचान के मिल जाते हैं, उन्हीं के मिक्स टीम में खेल लेती हूँ"।

उसकी बातें सुनकर मुझे अपना स्कूल याद आ गया—हमारी क्रिकेट टीम, कैसे मैं, संजीव, रोहित, विवेक, कुलदीप और सब मिलकर खेलते थे। कितनी स्ट्रॉन्ग टीम थी हमारी। और अब वही लखनऊ, जितना बड़ा होता जा रहा है, उतना ही मेरे लिए वीराना बनता जा रहा है।

"आप कभी सिक्किम नहीं गये?"—मीला ने अचानक पूछा।

मैं अपने चेहरे पर भाव नहीं आने देना चाहता था। मैंने ज़ोर से कहा—"Alexa, turn off all the lights."

पर ये मेरा कमरा नहीं था, न यहाँ एलेक्सा थी।

मैंने कहा—"ओह…" और उठकर हाथ बढ़ाया। बिस्तर के पास लगे स्विच से लाइट बंद कर दी। मुझे अच्छे से पता था किस स्विच से कौन-सी लाइट बंद होगी—मैं पहले यहीं जो रहता था।

मीला हल्का-सा मुस्कुराई। और मैं अपने बचाव मोड पर आ गया—शायद अपनी नाकामी छुपाने के लिए।

"नहीं मीला… मैं कहीं नहीं गया। मैं घूमने वाला इंसान ही नहीं हूँ"।

"ओह, अच्छा... मैं ज़्यादा तो कहीं नहीं गई। पर कभी-कभी उसके साथ इधर-उधर"।

"हम्म्म... बस एक बार शिलॉन्ग गया था, कॉलेज में, दो दिन के लिए। अभिनय के साथ। वरना यही कॉलेज किया, फिर जॉब। थोड़ी बहुत जगह अभिनय के साथ घूमा, वरना मैं कहीं नहीं गया। शायद... मैं बहुत बोरिंग इंसान हूँ"।

"अच्छा... मैं तो गई हूँ कॉलेज टाइम पर। मेघालय और थोड़ा असम। फिर उसके साथ सिक्किम की जगहें, सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग, कालिम्पोंग, जयगाँव, कोचबिहार तक। उसके बाद डायरेक्ट बैंगलोर आ गई"।

"सही है... आप तो इतनी जगह गईं भी। मैं लखनऊ में रहते हुए न कभी वाराणसी गया, न इलाहाबाद, न आगरा, न मथुरा। घरवाले बहुत सख़्त थे। आप लोगों के यहाँ एक उम्र के बाद आज़ादी मिल जाती है। हमारी तरफ़ अब वो लोग बदलने की प्रक्रिया में हैं। वक्त लगेगा उन्हें समझने में कि कब बच्चों पर लगाम रखनी है और कब ढीली देनी है। कभी-कभी वो ये नहीं समझ पाते कि इतनी कड़ी लगाम लगाने के चक्कर में जो अपना ही लगता है, वो और दूर निकल जाता है"।

"उफ़्फ़ो... आपकी हिंदी!"—मीला बीच में बोली।

"क्या हुआ?"—मैंने पूछा।

"कुछ नहीं... आपकी हिंदी बहुत अच्छी है"।

"हाँ, शौक़ था मुझे पढ़ने-लिखने का। पर हो नहीं पाया। भाई को भी लिटरेचर में इंटरेस्ट था, तो मैंने चाहा वही करे।

"ओह, अच्छा... करना चाहिए था आपको। बहुत अच्छे राइटर बनते आप"।

"हा हा... छोड़ो, अब तो ज़िंदगी निकल गई उस सब के लिए"।

"अरे, अभी कहाँ निकली है? अभी तो हमलोग थोड़े ही बुड्ढे हुए हैं"।

"और आपको क्या पसंद था वैसे?"—मैंने बीच में पूछ लिया।

"मुझे? मुझे तो बहुत-सी चीज़ें पसंद थीं। जैसे टीचिंग, फुटबॉल, डांस, गाना। पर 11वीं-12वीं में लगा कि गंगटोक के MG रोड वाले अमीर एरिया में मैं एक अच्छा-सा लेप्चा कैफ़े खोलूँगी। जहाँ देश-विदेश से आने वाले लोग हमारा कल्चर देखेंगे, हमारा हैंडलूम खरीदेंगे। चाय-कॉफ़ी के अलावा लेप्चा लोकल डिश कैफ़े में मिलेगा। बहुत अच्छा एक्सपीरियंस होता। पर हो नहीं सका"।

"ओह्ह... सही है। आपका प्लान तो बहुत अच्छा है। ये तो आप कभी भी वापस जाकर भी कर सकती हो"—मैंने कहा।

"नहीं... स्टूडेंट लोन था पापा पर, वो सब अभी भर रही हूँ। फिर जो थोड़ा-बहुत होमस्टे और टैक्सी से आता है, उसी से घर चलता है। अच्छी लाइफ़स्टाइल देने के लिए घरवालों को, कमाना ही पड़ेगा। ज़िंदगी बिता दी उन्होंने दो कमरों के घर और एक टैक्सी चलाते-चलाते..."

मीला की आवाज़ थोड़ी रुक-रुककर आने लगी थी। शायद उसका गला भर आया था।

थोड़ी देर की खामोशी रही और फिर मीला ने पूछा—

"आपके पापा?"

"हूँ... मेरे? उत्तर प्रदेश विद्युत विभाग, इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड में थे। कुछ साल पहले रिटायर हो गये"।

"और भाई-बहन?"

"भाई है, दिल्ली में, वही लिटरेचर ही कर रहा है। एक दीदी हैं, जिनसे ज़्यादा बात हो नहीं पाती। बाकी बचे मम्मी-पापा, वही तो... वही लखनऊ में रहते हैं"।

"आप लोगों के गाँव नहीं होते क्या?"

"हा हा... होते हैं। प्रतापगढ़ और इलाहाबाद के बीच में पड़ता है। पर एक बार जो घर से निकल जाता है, वो कभी घर वापस नहीं जा पाता। जैसे वो वापस वहाँ नहीं पहुँचे, वैसे ही मैं वापस लखनऊ नहीं पहुँचा। हमलोग जीवन में कहीं-न-कहीं से निकलते हैं, पर वहाँ कभी पूरी तरह लौटकर नहीं जा पाते। कुछ न कुछ रह ही जाता है—किसी और शहर, किसी और गाँव, किसी और कमरे में"।

मैं मीला की प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रहा था, पर वो सो चुकी थी।

मैं भी करवट बदलकर दूसरी तरफ़ अपनी ही दुनिया में खोते-खोते सो गया।

सुबह लगभग 8:30 के अलार्म से नींद खुल गई, तब एहसास हुआ कि आज मैं यहाँ सोया था। मैं सरपट उठ गया और जाने के लिए अपने कपड़े ठीक किये, मोबाइल उठाया और बाहर आते वक्त एक नज़र मीला की तरफ़ झांका। वो चादर को किसी साँप की तरह लपेटकर सोई हुई थी। मैंने कमरे का दरवाज़ा बंद कर दिया।

मैं गेट की तरफ़ जा रहा था कि बालकनी में देखा, अभिनय वहीं सिगरेट पीता झुका हुआ था। मैंने उसे नहीं टोका। मैं दरवाज़े की कुंडी सरकाने ही वाला था कि उसने बालकनी से बिना देखे ही कहा—"ऑफ़िस जाने से पहले इस टाइम पे उसे भी छोड़ देना"।

मैंने बस "हम्म्म" में आवाज़ कर दी, बजाय इसके कि पूछता "आ जा, चाय पी लेते हैं"। फिर लगा, शायद प्रियांशी ने बना दी होगी। और मैं कमरे से बाहर निकलकर सीधा लिफ़्ट में घुस गया।

मन नहीं हुआ चाय पीने का, सीधे अपने कमरे में ही आ गया। उसी कोठरी में, जो मेरे सारे ग़म की साक्षी रही है।

मैंने देखा, मेरा लैपटॉप टेबल पर वैसे ही पड़ा है जैसे शुक्रवार को छोड़कर चाय पीने चला गया था। एक बात का एहसास हुआ कि कितने बेमाने से ज़िंदगी काट रहा हूँ। शायद मैं आना नहीं चाहता अभिनय के रूम

से, पर आना पड़ता है। पर मैं ये भी नहीं चाहता कि मैं उन लोगों के आस-पास रहूँ। पर कभी-कभी लगता है, अगर अभिनय के साथ रहता तो ये वक्त थोड़ा आसान होता। कभी-कभी मीला के पास रहना या उसे देखना भी अच्छा लगता है और उतनी देर के लिए मैं पुरानी चीज़ें थोड़ी देर को भूल जाता हूँ। साथ ही प्रियांशी की तीखी बातें चुभती तो हैं, पर सह जाना और उसपर कुछ न कहना ही ठीक लगता है। ये कैसी अजीब-सी स्थिति है—मैं अपने ग़म से निकलना नहीं चाहता, पर कभी मन करता है कि…

ये सब सोचते-सोचते, कभी अपनी कमियाँ निकालते, कभी अकेले सब सह जाने की बातें सोचते-समझते मैं नहा-धोकर निकल आया।

कपड़े पहने—ब्लू जीन्स, काली शर्ट, शूज़। बैग में अपनी किस्मत का पर्यायवाची लैपटॉप डाला और बैठ गया। मोबाइल में 9:17 हो रहे थे। मैं इंतज़ार करना चाहता था कि मीला शायद मैसेज करे—“Are you coming?” या “Are you picking me up?” या कुछ।

थोड़ी देर मैसेज देखे, स्टेटस देखे, मोबाइल स्क्रॉल किया। 9:35 तक लगा कि शायद वो नहीं करेगी और ऑटो से चली गई होगी। सोमवार है, ट्रैफ़िक तो होगा, पर उसका रोज़ का आना-जाना है, इसमें क्या है।

मैंने अपना हेल्मेट उठाया, रूम बंद किया और नीचे पार्किंग से मोटरसाइकल निकाल ली। तभी मेरा फ़ोन वाइब्रेट हुआ।

"2–3 ऐप से ट्राई कर लिया, एक-दो हुआ भी पर ऑटो कैंसिल हो गया। If you don’t mind और आप अभी भी रूम में हैं तो क्या मुझे भी छोड़ देंगे? It’s on the way. I’m really sorry to bother Monday morning."

ये मीला का मैसेज था। मैंने ऊपर से मैसेज पढ़ लिया और फिर “Ok in 2 mins, coming” लिखकर भेज दिया।

मैं हल्का-सा मुस्कुराया—“चलो, किया तो मैसेज”।

मैं अभिनय के अपार्टमेंट के नीचे पहुँचा और एक छोटी-सी हॉर्न की आवाज़ दी। तब तक व्हाइट पैंट, काली शर्ट, हल्का-सा काजल, शायद फ़ाउंडेशन या सनस्क्रीन लगाकर मीला आज बकमाल लग रही थी। सैंडल और साइड लैपटॉप बैग भी उसकी सुंदरता को और बढ़ा रहे थे।

मैंने नज़र थोड़ी हटाई, फिर उसकी नज़रों से मिलाते हुए एक हल्की-सी स्माइल पास की। उसने भी मुस्कुराकर "हाय" कहा और पीछे वाली सीट पर बैठ गई।

मैंने उसे हेल्मेट के अंदर से कहा—"अंदर वाले रास्ते से चलेंगे, आपके पास हेल्मेट नहीं है। जैसा कि बेंगलुरु में होता है—दो हेल्मेट की सख़्ती"।

"ठीक है", उसने धीरे से कहा।

मैंने अपना बैग आगे नहीं किया, ताकि उसे ऐसा न लगे कि स्पर्श का कोई बहाना ढूँढ रहा हूँ।

मैंने सरसराती नज़र मारी—अभिनय की मोटरसाइकल खड़ी ही थी। स्कूटी भी। वो लोग अभी तक नहीं गये थे। ख़ैर, मैंने मोटरसाइकल बढ़ा ली।

15–20 मिनट में मीला के ऑफिस पहुँचा। मैंने उसे ड्रॉप किया। मैंने "बाय" कहा और उसने "See you"। दो-तीन मिनट बाद मैं अपने ऑफिस पहुँचा।

अब मेरे दिमाग़ में शुक्रवार का पाटा सब कम चल रहा था। मोटरसाइकल खड़ी करके लिफ़्ट ली और पहुँचा बनावटी बातों और झूठी हँसी के समुद्र में। अपनी डेस्क पर जाकर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद एक मैसेज आया—"You reached kya?" मीला का था।

मैं ऊपर से देख तो लिया था, पर फिर थोड़ी देर बाद रिप्लाई किया—"Han, I have reached."

उधर से एक स्माइल का इमोजी आया। मैंने भी seen पर नहीं छोड़ा और वही भेज दिया। अक्सर मुझे इतनी बार seen पर छोड़ा गया कि अब मुझे किसी को seen पर छोड़ देना एक rude behaviour लगता है। पर आजकल लोग इसे अपनी value create करना कहते हैं। पता नहीं कैसे।

ख़ैर, पूरा दिन काम में—कोड पाइपलाइन और सर्वर डिबगिंग में ही निकल गया। कुछ बेवजह की मीटिंग्स और कुछ वजह की। बाकी, मैं अब दोपहर को खाना नहीं खाता—चाय-कॉफी पीकर ही दिन काट देता हूँ। टीम में एक-दो से बातें अच्छी हैं, पर ज़्यादा किसी के साथ उठना-बैठना, खाने-पीने का सिलसिला मुझे नहीं भाता। ज्यादातर बातें काम तक ही सीमित रखता हूँ।

6 बजे मैं फिर एक्सपेक्ट कर रहा था कि शायद मीला बोले—“Drop bhi kar hi do.” लेकिन काफ़ी देर इंतज़ार करने के बाद भी जब उसका मैसेज नहीं आया तो मैं घर निकल आया।

मुँह-हाथ धोकर मम्मी से दो मिनट बात कर ली और खाना मँगवा लिया।

खाना भी आ गया, खा भी लिया। पता नहीं कब, लगभग 9 बजने को थे, एक मैसेज भी मीला का नहीं आया। मुझे ये भी नहीं पता मैं चाह क्यों रहा था कि वो करे। दो दिन किसी बातचीत के और एक दिन ऑफिस ड्रॉप करने से कोई इतना ख़ास तो नहीं हो जाता।

9:30 तक मैंने अपने कमरे की बत्तियाँ बंद कर दीं और सिरहाने वाली छोटी-सी लाइट जलाकर किताब उठा ली “सूरज का सातवाँ घोड़ा” (धर्मवीर भारती)।

अधिकतर समय मैं मोबाइल में ही बिता देता हूँ। रात 1–2 बजे अगर नींद आ जाए तो सो लेता हूँ, वरना कितनी ही रातें बस ऐसे ही जागते-जागते कट गई हैं।

जबसे जयाश्री गई, तबसे किताबों के क़रीब और ज़्यादा आ गया हूँ। वरना उससे बातों में ही समय निकल जाया करता था। बीच-बीच में जो पढ़ लिया, वही काफी था।

ख़ैर, थकान ज़्यादा थी। शायद आज 11 बजे तक किताब रख दी। फिर मोबाइल चलाने लगा और 12–12:30 तक आते-आते दो-एक झोंके आए और सोने की कोशिश की।

शायद किसी सपने से 5:30 तक ही नींद खुल गई, पर 8:30 तक समय काटना था, तो जयाश्री की यादों को समेटते हुए खोए रहने की कोशिश करता रहा। कभी झपकियाँ-सी लगीं, पर नींद आई नहीं।

मैं आज भी कल की तरह 8 बजे ही उठ गया। नहाया-धोया, बीच-बीच में तैयार होते हुए फ़ोन की तरफ़ भी नज़र डालता रहा कि शायद आज मैसेज आए—"छोड़ दोगे क्या आज"—लेकिन 9 बज गये, साढ़े नौ भी हो गये, पर ऐसा कोई मैसेज नहीं आया।

मैं तैयार होकर गेट बंद करके नीचे आ गया और मोटरसाइकिल लेकर निकल गया। बीच में लगा कि एक नज़र के लिए अभिनय वाली गली में घूमा लूँ, पर फिर सोचा—नहीं यार, ठीक नहीं है। अभिनय का भी कोई मैसेज नहीं आया, सब ऑफिस के काम में बिज़ी होंगे। क्या ही जाऊँ उधर और अगर ग़लती से देख भी लिया तो ऊपर आने को बोल दे। या फिर क्या पता, हफ़्ते में तीन दिन ही ऑफिस जाना होता है, शायद आज भी गये हों। कह नहीं सकते। जब इतने महीनों से ज़्यादा ताल्लुक़ नहीं था तो अचानक इतना घुसना ठीक नहीं है। और मैं अपनी मोटरसाइकिल सीधे ऑफिस ही ले गया।

कल की ही तरह आज का भी दिन—अपने बेमाने से काम में मन लगाना, मीटिंग्स, झूठी मुस्कान के साथ दो-चार बातें और बस। फिर शाम को वापस आ गया। थोड़ी देर घर से लैपटॉप में लॉगिन रहा और फिर टाइम ख़त्म होते ही बंद कर दिया। खाना मंगवा लिया, मम्मी से दो मिनट बात की, बेमन से खा लिया, थोड़ी देर किताब पढ़ी, मोबाइल चलाया। बार-बार दिमाग़ में आता रहा कि एक मैसेज भी नहीं आया—कम-से-कम हालचाल

के लिए ही सही। फिर थोड़ी देर बाद सो गया, लगभग 1 बज गये थे। नींद ने अपने झोंके दिये।

आज नींद खुलते-खुलते 7 बज गये। बेमन-सा पड़ा रहा। 8:30 उठा, नहाया-धोया, मोबाइल में नज़र मारी कि शायद आज मैसेज आ जाए, पर नहीं आया। मोटरसाइकिल उठाई, ऑफिस गया। जो काम था, वो किया। एक-दो मीटिंग्स कीं, झूठी मुस्कानें बिखेरीं। मोटरसाइकिल उठाई, निकल आया। और थोड़ी देर घर से लॉगिन रहा। मोबाइल चलाया, खाना मंगाया, मम्मी से बात की, किताब पढ़ी, फ़ोन चलाया और सो गया। आज 1:30 बज गये थे।

जितनी मुझे इस वक्त ये लिखने में आलस आ रहा है या कोफ़्त हो रही है कि बार-बार वही लिख रहा हूँ, पर जब मैं जी रहा होता हूँ तो हर दिन लगभग एक साल जैसा लगता है। उसे हर दिन जीना पड़ता है। मुझे नहीं पता, ये दुख की बात है या सुख की। क्योंकि अगर मैं कहूँ कि ये बड़े दुख की बात है तो लोग मुझे एहसास कराते हैं कि "थैंकलेस मत बनो। देश में ऐसे काम करने के लिए लोग मरते हैं। 80 प्रतिशत लोग इस चीज़ को कभी कर ही नहीं पाते"। देश की भुखमरी, ग़रीबी देखते हुए ये बात सही लगती है।

दूसरी तरफ़ हालात हैं—कितने मायूस, लगभग अपना मानसिक संतुलन खो चुके लोग दिखते हैं। पिसते हुए लोग, न बोल पाने वाले, मशीन जैसे लोग जो बस लगे रहते हैं। राजनीति करने वाले, मेहनत करने वालों का हक़ खा जाने वाले। लोग जो रोज़ सोचते हैं कि यहाँ से भाग जाऊँगा और रोज़ अपने को पिंजरे में पाते हैं। कितने मायूस और बेचैन लोग इस इंडस्ट्री में हैं। दोनों तरफ़ देखने के बाद मैं कोई राय आज तक नहीं बना पाया। ख़ैर।

मुझे ऑफिस तीन दिन ही जाना होता है, पर कभी-कभी मैं चार-पाँच दिन भी चला जाता हूँ, ताकि अगर कभी मौक़ा आया कम दिन जाने का तो कह सकूँ कि मैं तो ज़्यादा दिन आया करता हूँ। पर अभी इमरजेंसी की वजह से नहीं हो पा रहा।

मैं गुरुवार को शाम को निकल ही रहा था कि मोबाइल की बत्ती जली।

"आप निकल गये क्या ठाकुर??"—मैसेज मीला का था।

मैं वो मैसेज देखकर ठिठक गया। दो मिनट तक सोचने के बाद रिप्लाई किया—"नहीं, अभी तो ऑफिस में हूँ। 10 मिनट में निकलूँगा। आप ऑफिस गये हो आज?"

"हाँ, कल WFH किया था",—मीला ने भेजा।

मैंने "ओके" भेजा और इंतज़ार करने लगा कि शायद वो कुछ बोले।

"I was asking, if you can do a favour and pick me up. Seems much traffic today."—मीला का मैसेज था।

"Sure, meet me at your office gate in 5 mins",—मैंने भेजा और निकल गया।

थोड़ी देर में मैं मीला के ऑफिस गेट के पास एक चाय दुकान पर खड़ा हो गया और टेक्स्ट किया—"Reached."

"In 2 mins",—उसने रिप्लाई किया।

और थोड़ी देर में वो गेट पर आ गई। आज वो काली टी-शर्ट और नीली जीन्स में काफ़ी जच रही थी।

एक-दूसरे को स्माइल कही। वो पीछे बैठ गई। मैंने अपना बैग आगे नहीं किया, ताकि शरीर का स्पर्श ज़्यादा न हो और उसे अजीब या असहज न लगे। पीछे वाला रास्ता लिया।

10–15 मिनट में हम अभिनय की बिल्डिंग के नीचे पहुँच गये। रास्ते में ज़्यादा बातें नहीं हुईं। मेरी भी हिम्मत नहीं हुई कि मैं कुछ पूछूँ।

एक-दूसरे को "बाय" कहा। वो उतरकर गेट के अंदर चली गई और मैं रूम आ गया।

मोबाइल चलाया, खाना ऑर्डर किया, मम्मी से बात की और खाना खाकर लेट गया। किताब पढ़ने लगा।

थोड़ी देर में मीला का मैसेज आया—"कल आप ऑफिस जा रहे हो क्या?" मेरा कल जाने का मन तो था नहीं, पर मुझे लगा शायद मीला जाना चाहती हो और कल मैं उसे ड्रॉप कर दूँ, इसलिए मैसेज कर रही हो। पर फिर जाने क्या हुआ, मैंने सच बोलते हुए रिप्लाई किया—"नहीं, चार दिन चला गया इस हफ़्ते। अब कल नहीं जाऊँगा सोच रहा हूँ"।

"तो कल यहाँ से WFH कर लो, प्रिया और उसका बुड्ढा बोल भी रहे थे",—मीला का मैसेज आया।

मैसेज पढ़कर मैं फिर सोच में पड़ गया—क्या सच में अभिनय ऐसा बोला है या ये खुद से बोल रही है? क्योंकि अगर ऐसा होता तो अभिनय मुझे बोलता, कम-से-कम टेक्स्ट करके। मैंने रिप्लाई किया—"बस ओह्ह"। और कुछ मैं बोल नहीं पाया।

थोड़ी देर बाद मीला का मैसेज आया—"तो फिर सुबह आ रहे हो?" मैं फिर सोच में पड़ गया कि इसका क्या जवाब दूँ। पहले लगा पूछ लूँ अभिनय से, पर फिर सोचा कहीं अभिनय वहीं बैठा हो तो ऐसा न लगे कि मैं उसपर विश्वास नहीं कर रहा।

"अरे, आप लोग करो आराम से। वैसे भी कल काफ़ी काम है, मेजर डिप्लॉयमेंट है",—लिखकर भेज दिया।

सीन तो हो गया, लेकिन कुछ रिप्लाई नहीं आया। थोड़ी देर बाद मीला के नंबर से ही फ़ोन आने लगा। मैं फिर सकपका गया कि अब क्या बोलूँगा सुबह आने के लिए। कब तक मैं अपना जवाब तैयार करता, फ़ोन कट गया। मुझे लगा कोई नहीं, बोल दूँगा कि मैं सो गया था। लेकिन फ़ोन फिर बजने लगा।

मैंने इस बार हड़बड़ी में उठा लिया कि जो आएगा, जवाब दे दूँगा।

मैंने फ़ोन उठाकर कहा—"हाँजी, मीला"।

उधर से जवाब आया—"तेरा बाप बोल रहा हूँ चूतिया। कल सुबह तुम आ रहा है कि नहीं"।

अभिनय की आवाज़ सुनकर मैं फिर सकते में आ गया। बस सोचा—“अब इसे क्या बोलूँ?”

"अरे, काम है कल। क्या करूँगा वहाँ आके मैं?"—मैंने कहा।

"फिर वही बात। इसलिए चार दिन डिस्टर्ब नहीं किया कि फिर तू कोई बहाना देगा आने के लिए। बोला तो—कल तुम आ रहा है इधर, बस। मैं और बात नहीं कर सकेगा”। और उसने फ़ोन काट दिया।

मैं कुछ बोल नहीं सका। मैं सोचने लगा। और जब मैं ज़्यादा सोचने लगता हूँ तो ईयरबड्स निकालता हूँ, यूट्यूब खोलकर थंडरस्टॉर्म की आवाज़ लगाता हूँ और सोने की कोशिश करता हूँ। और रही हुआ।

अध्याय 15

सुबह 9 बजे ही मेरी नींद खुली। मैं नहा-धोकर लैपटॉप को एक बैग में डाल चला दिया। बीच में रुककर चाय भी पी ली।

थोड़ी देर में मैं उसके घर के गेट के सामने था। मैंने एक लंबी सांस भरी और बेल बजाई। थोड़ी देर में प्रियांशी ने गेट खोला।

"आजा-आजा", प्रिया ने कहा और मैं उसके घर के अंदर आ गया।

आज तीनों ने ही वर्क फ्रॉम होम ले रखा था।

"उठा नहीं क्या?"—मैंने लैपटॉप बैग सोफ़े पर रखते हुए प्रियांशी से पूछा।

"नहीं, दोनों ही सो रहे हैं", उसने किचन में कुछ काम करते हुए कहा।

मैं फिर दायीं तरफ़ वाले सिंगल सीटर में बैठकर पैर फैलाए ही था कि मीला अपने कमरे से आधी नींद में हॉल में निकल आई।

"गुड मॉर्निंग",—मेरी तरफ़ मुस्कुराते हुए देखती हुई बोली और किचन की तरफ़ प्रिया के पास चली गई।

मैंने भी "गुड मॉर्निंग" कहते हुए धीरे से मुस्कुराकर जवाब दिया।

मैंने लैपटॉप ऑन करके लॉगिन कर लिया। एक-दो मेल और काम की चीज़ें देखीं, फिर लैपटॉप वहीं टेबल पर रखकर अभिनय के रूम में चला गया।

9:30 बजने को थे। उसका ऑफिस लगभग 10 बजे शुरु होता था। मैंने कहा—

"उठ बे, भैंस की तरह सोया है"।

उसने मसोसते हुए आँखों से मेरी तरफ़ हल्का देखा और बिना जवाब दिये फिर आँखें बंद कर लीं।

"उठ बे, टाइम हो गया",—मैंने फिर उसका शरीर हिलाते हुए कहा।

"मत कर... हमको पता है कब होता है हमारा टाइम... हम्म्म को लागा तुम्म्म नहींम्म्म..."—और बिना पूरा किये फिर आँखें बंद कर लीं।

"क्या? ठीक से बोल",—मैंने हँसते हुए फिर उसका शरीर हिलाया।

"मत कर गंदगीरी... मुझे लगा तुम नहीं आ सकेगा..."—वो उसी मुद्रा में सोने की कोशिश करते हुए बोला।

तब तक प्रियांशी रूम में घुस आई—

"तुम दोनों का ब्रॉमेंस हो गया, हो तो ये तो कॉफ़ी"।

प्रिया हमेशा ऐसे तीखे शब्दों का प्रयोग करती थी जब भी हमलोग मिलने लगते। और ये बात मुझे पहले भी कई बार चुभती थी। यही एक और कारण था कि मैं अभिनय से कम मिलता था।

मैंने ट्रे से कप उठा लिया और अभिनय भी उठकर बैठ गया और कॉफ़ी उठा ली।

उसी रूम के बाएँ वाले कोने में एक डेस्क और चेयर थी जिसमें प्रिया ने अपना काम करने का इंतज़ाम कर रखा था। लैपटॉप, कुछ चार्जर, किताबें, पेन-पेंसिल, माउस वगैरह सब रखा था। वो कुर्सी पर बैठ गई और ट्रे से कप उठा लिया।

अभिनय ने मुझसे कहा—"अलमारी से बैग दे"।

मैंने उठकर अलमारी से उसका बैग दिया।

उसने भी बैग साइड में रखकर लैपटॉप खोल लिया।

मैं तब तक उठकर अपना कप हाथ में लिए बाहर आ गया। मुझे लगा अब वो फ्रेश वगैरह होगा। फिर प्रियांशी की भी मीटिंग थी, तो ज़्यादा बोलना ठीक नहीं था।

मैं हॉल में आकर बैठा ही था कि मीला रूम से आई और बोली—

"अगर आपको बिस्तर पर बैठकर काम करना हो तो आ जाना, मैं एक तरफ़ कर लूँगी अपनी सारी चीज़ें"।

"नहीं-नहीं, ठीक है इधर",—मैंने उसकी तरफ़ देखते हुए अपनी कॉफ़ी का सिप लेते हुए कहा।

"ठीक है, बताना जैसा होगा। कुछ खाओगे आप?"—वो बोलकर किचन में चली गई।

"नहीं, ठीक है",—मैंने इस बार अपनी नज़र लैपटॉप में गड़ाते हुए कहा। Teams ग्रुप पर मैसेज आ रहे थे, किसी क्लाउड सर्विस से रिलेटेड, जिसकी वजह से एक DevOps कोड पाइपलाइन नहीं चल रही थी।

तब तीन-चार बिस्किट एक कटोरी में डालकर ले आई और बोली—

"खाओ ना आप, शर्माते रहते हो बस"।

मैंने कटोरी ले ली और टेबल पर रख ली। एक बिस्किट उठा लिया।

मीला अपने रूम की तरफ़ जाने लगी और बोली—

"आना होगा तो बिना पूछे बताए आराम से आ जाना, शर्माना मत", और थोड़ा-सा खिलखिलाकर हँसते हुए रूम में चली गई।

मैं बस रूम के दरवाज़े की तरफ़ उसे टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहने जाते हुए देखता रहा।

शायद अभिनय ने कॉफ़ी के साथ सिगरेट रूम में ही पी ली होगी, इसीलिए बाहर नहीं आया—मैंने सोचा। और फिर सब अपने-अपने काम में मशग़ूल हो गये।

क्योंकि दोनों के रूम के दरवाज़े खुले थे, तो कभी अभिनय की आवाज़ आती—“PR approval awaiting है”।

तो कभी प्रिया की—“Yes yes, it should be done today and it’s priority.” Bug is yet to be fixed.

तो कभी मीला की—“This is your reportee, aur this is your manager. This is your team and we have assigned you Buddy”

और इधर मैं अपनी क्लाउड और पाइपलाइन की दुनिया में खोया हुआ, खोजने की कोशिश करता रहा कि कहाँ एरर आ रहा है, कैसे हल होगा। और अपनी इस जीवन का दुख न उठा पाने के बोझ से हताश, अपनी नज़रें लैपटॉप में गड़ाए रहा।

ऐसे ही मीटिंग और काम का दौर चलता रहा, दोपहर के डेढ़ बज गये। प्रियांशी फिर किचन में आई। मैं अपने बोझ में इतना दबा हुआ था कि सोफ़े पर ही पैर पसारकर, पेट पर लैपटॉप रखकर काम कर रहा था।

प्रियांशी ने आवाज़ दी— “मुझे, अरे चले जा न रूम में”।

मैंने उसकी तरफ़ देखा, पर कोई जवाब नहीं था कि क्या बोलूँ। बस मुस्कुरा कर बात टाल दी।

वो किचन में कुछ करती रही, तभी मीला की आवाज़ आई— “आ जाओ, मैंने अपना सामान एक साइड कर लिया है”।

अब मुझे कुछ तो बोलना था, तो मैंने भी कहा— "हम्म्म, आया"। और फिर मैंने लैपटॉप, चार्जर खोला, बैग हाथ में लिया, मोबाइल जेब में डाला और रूम में चला गया।

बिस्तर में डेट और बेड टेबल पर लैपटॉप लगाते हुए मीला पैर फैलाकर बैठी थी। और ऐसा कुछ भी बिस्तर पर फैला नहीं था, सब उसने समेट दिया था। मेरी तरफ़ की दायीं साइड साफ़ पड़ी थी। मैं भी आकर बैग नीचे रखकर बिस्तर की टेक लगाकर बैठ गया। लैपटॉप दायीं ओर रखकर काम करने को जैसे ही तत्पर हुआ, तभी मीला बोली—

"तब से बोल रही थी खुद से, तो आप आ ही नहीं सकते"।

मैं बस मुस्कुरा दिया। और हम दोनों अपने-अपने काम में मग्न हो गये। मेरी कुछ कोड डिबगिंग की कॉल्स थीं, उनकी कुछ मैनेजेरियल डिस्कशन।

थोड़ी देर बाद प्रियांशी ने चावल-दाल दोनों के लिए प्लेट में निकालकर पकड़ाई।

"भात खान्चा कि ना?"

"खान्चु"।

हम दोनों ने प्लेट उसके हाथ से ले ली और वो फिर किचन में चली गई। और शायद अपना और अभिनय का खाना रूम में ही ले गई।

ऐसे ही दिन भर सबका काम चलता रहा और ये वीकेंड फिर मुहाने पर आकर खड़ा हो गया।

जबसे जयश्री गई, ये बिना काम के दिन कटते ही नहीं थे।

ख़ैर, पिछली बार की ही तरह शुक्रवार की रात शुरु हो गई। पर इस बार इनका प्लान था घर पर ही दो बीयर पीने का। और मैंने रेडबुल पर सहमति भर दी—हालाँकि मुझे वो भी ज़्यादा पसंद नहीं है।

मैं और अभिनय उसकी बाइक से जाकर 8 बॉटल बीयर ले आए। टीवी में कुछ ग़ज़ल या नेपाली गाने बजने के बजाय, रॉक नाम के जॉनर के पुराने गाने चलने लगे, जो मुझे कम ही समझ आते थे। टेबल सज गया था—बीयर मग में बॉटल से बीयर गिरने लगी, खाने का सामान, शराबियों की भाषा में जिसे "चखना" कहते हैं।

और हमेशा की तरह बीच वाले टू-सीटर में अभिनय और प्रियांशी, उसी वाले सिंगल में मीला और इधर वाले में मैं।

मैंने सामने टेबल पर ब्लू कलर का कैन खोलकर रखा और एक सिप लिया।

अभिनय जो अभी भी अपने गानों में डूबा हुआ था, कई बार मैं सोचता था कि अभी ये ग़मज़दा गीत सुनते वक्त किसे सोच रहा होगा। पर कभी-कभी मेरे दिमाग़ में जवाब आता था— नॉन्ग।

दरअसल जब कॉलेज के शुरुआती दिनों में हम मिले थे, उसकी एक प्रेमिका थी— नॉन्ग, पूरा नाम शायद नॉन्गसाई रैमबाई। तीसरे साल तक आते-आते वो रिश्ता ख़त्म हो गया। वो तब दिखाता था कि जैसे इन सब बातों से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, अपनी कोडिंग और हम दोस्तों के बीच मग्न रहता। लेकिन पहले भी जब मैं यहाँ रहता था मुझे पता था कि उसे फ़र्क़ पड़ता था। उसने कई बार ख़ुद पीने के बाद ज़िक्र भी किया, लेकिन मैंने कभी सुबह उसपर बात नहीं की।

ख़ैर, वो जब उठकर अपने कमरे में जाने लगा तो मुझसे बोला—

"भागेगा तो नहीं रात को? हम सुबह आएँगे तो तू साला यहीं दिखना चाहिए"।

"जा न, गुल्ले"। मैंने हँसते हुए जवाब दिया।

मीला अपनी फ़ोन में लगी थी और नशे में भी थोड़ी थी। मायूस लग रही थी। इतनी हँसी-ठिठोली करने वाली लड़की के चेहरे पर मायूसी कम ही अच्छी लगती है।

"जा रही हूँ, सोने"। बोलकर वो सीधा कमरे में चली गई।

अब हॉल में सन्नाटा था। दो कमरे बंद थे। मैंने सोचा आज हॉल में ही डबल सीटर और दोनों सिंगल सीटर को लगाकर ही हिसाब बनाया जाए। टेबल साइड किया और जो भी सामान पड़ा था वो टेबल के ऊपर-नीचे कर रख दिया।

मुझे लगा मीला हल्के नशे में भी है और बार-बार बहाना नहीं लगना चाहिए सोने का। और फिर बोल भी नहीं रखा कि जब सोने का मन हो तो बिना झिझक आ जाना। तो मुझे असहजता-सी महसूस हो रही थी। इतनी हिम्मत हो रही थी कि जाकर बेड के नीचे से गद्दा ही निकाल लाऊँ।

यही सब सोचते हुए मैंने आमने-सामने डबल सीटर के दोनों सिंगल सीटर लगा लिए और इस बार ध्यान रखा कि आवाज़ न हो।

जा लाईट बंद कर दी और उसी सोफ़े में आकर तिरछा होकर लेट गया ताकि पैर थोड़े एडजस्ट हो जाएँ। ख़ैर, पैर जैसे सोचा था वैसे एडजस्ट तो नहीं हुए, पर तोड़-मरोड़ कर रख ही लिया मैंने। और मोबाइल चलाते-चलाते, अपने ख़यालों में गुम होते हुए कब आँख लग गई, पता ही नहीं चला।

खिच्खिखपूऽऽऽ... एक बहुत तेज़-सी आवाज़ हुई और पैर की तरफ़ वाला सिंगल सोफ़ा सरक गया। मेरा बैलेंस बिगड़ा और मैं नींद में ही गिर पड़ा। काफ़ी तेज़-सी एक आवाज़ शरीर के गिरने की गूँजी। बस मेरा सिर बहुत ज़्यादा कोने पर था, तो वो लटका ही रह गया। मैं हड़बड़ा गया—एक पल के लिए लगा जैसे सपना था, जिसमें मैं किसी खाई में गिर रहा हूँ। पर ये असली था। मतलब, मानो प्राणों की वापसी हुई हो।

मैं झटपट उठा, दाएँ घुटने में थोड़ी चोट भी लग गई क्योंकि पूरा ज़ोर उसी पर आया था। थोड़ी देर हथेलियों में मुँह छुपाकर वहीं बैठ गया। और ये देखने लगा कि कहीं दोनों कमरों में से कोई आ तो नहीं रहा। पर कोई नहीं आया। शायद आवाज़ इतनी ज़्यादा…

क्या चाहोगे मैं इसे यहीं से आगे बढ़ाऊँ और दिखाऊँ कि उस सन्नाटे में आपका मन कैसा डर और बेचैनी से भर गया?

इतनी ज़्यादा नहीं कि कोई उठकर आ जाए। और नीचे तो पार्किंग ही थी। तभी मीला के कमरे की बत्ती जली और दरवाज़ा खुला। वो भागती हुई आई, पर बिना चिल्लाए फुसफुसाते हुए बोली— “क्या हुआ?”

मैंने अपनी हथेली से मुँह निकाला और उसकी तरफ़ देखा। अँधेरा था, पर बालकनी से आती हुई मद्धम-सी रोशनी में वो बहुत ख़ूबसूरत लग रही थी।

मेरे बिना बोले ही वो सोफ़ों की हालत देखकर समझ गई कि मैं क्या कर रहा था। उसने कुछ नहीं कहा। आँख मिचकाते हुए, हल्की-सी नाराज़गी में दोनों सिंगल सोफ़े अपनी-अपनी जगह लगाकर, मेरा हाथ पकड़कर अंदर ले गई। बिना कुछ बोले बीच में एक पतले तकिये की महीन दीवार बनाई और अपनी तरफ़ जाकर लेट गई। उसने इस पूरे समय मुझसे कुछ नहीं कहा—पता नहीं वो नाराज़गी ज़ाहिर कर रही थी या अपनी बेचैनी।

मैंने भी कुछ नहीं कहा। अपनी तरफ़ बिस्तर के दाएँ ओर जाकर लेट गया और मोबाइल बगल में रख दिया।

थोड़ी देर ख़ामोशी छाई रही। मीला बिस्तर में इधर-उधर करवटें बदलती रही, पैर चलाती रही। मुझे भी अब नींद नहीं आ रही थी, पर मैं कोशिश कर रहा था।

अब तकिये की दीवार ही थी हमारे बीच।

कुछ देर बाद मैंने धीरे से कहा,

“नींद नहीं आ रही क्या?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया। बस उसकी साँसों की धीमी लय कमरे में गूँज रही थी।

मैं चुपचाप उस पतली दीवार को हाथ से टटोलने लगा। उंगलियाँ कपड़े पर रुकीं और उसी पल मुझे महसूस हुआ—दूसरी ओर से भी उसकी उंगलियाँ हल्की सी काँपीं।

हम दोनों ने कुछ नहीं कहा। लेकिन अब वो तकिया दीवार नहीं रहा, बस एक बहाना भर रह गया।

मैंने हिम्मत कर हल्के से तकिया सरकाया। अंधेरे में उसकी आँखें मेरी आँखों से मिलीं। उसमें ना गुस्सा था, ना नाराज़गी... बस एक थकी हुई बात थी।

धीरे-धीरे उसने अपना सिर मेरी ओर खिसकाया। उसकी बालों की खुशबू मेरी साँसों में उतर गई। हम अब भी कुछ बोले नहीं, लेकिन हमारी खामोशी ही सबसे गहरी बातचीत थी।

उसने मेरी उंगलियों को थाम लिया और उसी छुअन में सारी बेचैनी घुल गई। मानो पूरी रात सिर्फ हमारे लिए ठहर गई हो।

पर फिर वो बोली, “ये ठीक नहीं है...” और धीरे से अपनी तरफ़ करवट ले ली।

मैंने भी बिना कुछ कहे तकिये की दीवार फिर से खड़ी कर दी।

कमरे में फिर वही खामोशी लौट आई। ना मैंने कुछ कहा, ना उसने।

शायद हम दोनों जानते थे कि कुछ भी आगे बढ़ा, तो दोंस्ती का भरोसा डगमगा सकता है।

लेकिन दिल की गहराई में जो लहर उठ रही थी, उसे कैसे रोका जाए?

मुझे नहीं पता ये चाहत थी, मोहब्बत थी या बस उस पल की कमजोरी…

पाप था या सच्चाई…पर एक बात साफ़ थी—हम दोनों अब पहले जैसे नहीं रहे।

उस रात हमने अपनी-अपनी हदें नहीं तोड़ीं, लेकिन वो खामोशी, वो रुक-रुक कर लिया गया साँसों का बोझ, हमारे बीच की दूरियों को कम कर गया।

करीब आना अभी बाकी था…मगर करीब आ रहे थे, ये तय था।

अध्याय 16

मुझे झिझक थी, मैं रात भर ठीक से सो भी नहीं सका। आँख खुलती-बंद होती रही। पता नहीं मीला क्या सोच रही होगी, पर वो भी उसी तरह सोच रही थी जैसा मैं सोच रहा था। यही सब सोचते हुए मैं जल्दी उठ गया। लगभग 8 बजे। मैंने सोचा जल्दी उठा हूँ, तो कमरे में चला जाऊँगा।

मैं बाथरूम में गया, बिना मीला की तरफ़ एक बार भी देखे और ब्रश करके निकल आया। आते वक़्त एक नज़र से देखा तो वो मुँह ढँके हुई थी। मैंने भी सोचा अच्छा मौका है, निकल जाता हूँ। मैंने कपड़े ठीक से पहने, बैग उठाया, बिना किसी आवाज़ के दबे पाँव निकलने लगा। बालकनी में भी नज़र मारी—उन दोनों में से कोई नहीं था। जैसे ही मैंने कुंडी खोली, मीला ही कमरे के बाहर निकल आई।

"कहाँ जा रहे हो?" वो मेरी तरफ़ देखती हुई बोली और किचन में चली गई।

मैं भी आकर किचन के सामने हॉल में खड़ा हो गया और बोला—"नहीं, वो सोचा था थोड़ा कमरे में जाता हूँ"।

"आप इतना अनकम्फ़र्टेबल मत होइए रात को बात से", वो ग्रीन टी एक ग्लास कप में निकालते हुए बोली।

*"नहीं-नहीं, मैं तो बस... सोचा कि जल्दी नींद खुल गई तो थोड़ा..."। और उसकी आँखों से मेरी आँखें मिलीं और मैं शांत हो गया।

"मुझे पता है आप अभी उसी फ़ेज़ में हो... और मेरा तो आपको पता ही है, मैं अभी उसी सब में फँसी हुई थी। अभी मुझे कुछ नहीं पता—ग़लत-सही।

मुझे लगता है मैं रेडी नहीं हूँ", उसने आवाज़ धीमी करते हुए कहा और फिर मुस्कुराकर "लास्ट" कहा।

मैं भी मुस्कुराकर "जी" कहा।

वो टीवी के सामने सोफ़े पर बैठ गई और मैं वहीं खड़ा रहा। मुझे नहीं पता था वो इतनी आसानी से सबकुछ कह देगी और सब नॉर्मल कर देगी।

मैं भी सोफ़े पर बैठते हुए बैग बगल में रख दिया। आज उसने मुझे खुद रिमोट दे दिया। मैंने शेमारू कॉमेडी का फिर हेरा फेरी 3 यूट्यूब पर लगा दिया और सुबह ठहाकों में गूंजने लगी।

इसी तरह अब मेरे दिन निकलने भी यही लगे। लगभग चारों लोग तीन दिन फिक्स करके ही ऑफ़िस जाते हफ़्ते में और वही दो दिन वर्क फ्रॉम होम करते। मैं अब हफ़्तों तक पड़ा रहने लगा। हफ़्ते में एक-आध बार कमरे में जाता—साफ़-सफ़ाई करके कपड़े निकालकर ले आता। धीरे-धीरे मेरे कपड़े भी मीला की अलमारी में जगह बनाने लगे। आखिरकार जो अभिनय इतने दिन से चाहता था, वो होने लगा। हालाँकि मैं अपनी चीज़ों से निकला नहीं था और बहुत बार उन तीनों के बीच मुझे अकेला भी महसूस होता था। पर मैं कोशिश करता रहा कि कम-से-कम अभिनय को अब बुरा न लगे। और मुझे भी दिन तो काटने ही हैं—फिर यहाँ मीला भी है।

ख़ैर, कई बार मीला अगर ज़्यादा पी लेती थी तो मैं नीचे का बिस्तर निकालकर ही सो जाता था उसपर। सुबह वो थोड़ा ग़ुस्सा भी करती थी कि अगर नीचे भी सोना है तो मुझे भी सुलाओ। पर हम उसे मज़ाक में टाल देते।

मैं और मीला दोनों अब इस घर के अस्थायी सदस्य थे, जो हफ़्ते-दो हफ़्ते में अपने कमरे के चक्कर भी काट आते थे।

मुझे नहीं पता मीला का, लेकिन अब वो मुझे और अच्छी लगने लगी। ऐसे बहुत से पल आते रहे इन दो–ढाई महीनों में, क़रीबी के, लेकिन दोनों ने ही उसे अनदेखा कर दिया।

उसके फ़ैशन स्टाइल से लेकर उसके बौद्ध धर्म के रीति–रिवाज़ तक, हर चीज़ में अपनापन-सा दिखने लगा। ये बिल्कुल वैसा ही था जैसा जयश्री के साथ मुझे लगा था। पर उस समय हमें ये नहीं पता रहता कि अगर ये सामने वाला शख़्स अचानक से चला गया, तो फिर ये सब और कितना याद आएगा। और शायद यही nostalgia की सबसे बड़ी समस्या भी है।

इसी बीच हम चारो गाड़ी बुक करके दो दिन के लिए ऊटी भी घूमकर आ गये। अभिनय भी मेरे होने से थोड़ा ज़्यादा बात–चीत करता था, वरना इन दोनों से तो वो ज़्यादा बोलता ही नहीं था।

बुधवार की दोपहर एक दिन मैं मीला को लेकर कमरे पहुँचा। नीचे अभिनय की बाइक खड़ी थी, तो मुझे लगा दोनों आ ही चुके होंगे। मैंने वहीं अपने कमरे में जाते वक़्त आवाज़ मारी— "कहाँ हो रे?" और जाकर बैग रखा, लैपटॉप लेकर हॉल में आ गया और वापस लॉगिन कर लिया। तब तक अभिनय के कमरे से कोई आवाज़ नहीं आई। मीला तब तक फ़्रेश होकर अपने लैपटॉप पर कुछ कर रही थी। मैं भी बाथरूम में जाकर कपड़े चेंज कर हॉल में लौट आया।

तभी दरवाज़े पर अचानक से चाभी की कचाकच हुई, पर दरवाज़ा ऊपर से बंद था, तो लगातार घंटियाँ बजती रहीं टिंग–टिंग–टिंग–टिंग की आवाज़ से पूरा फ़्लैट गूँज गया। मैं भागकर दरवाज़ा खोलने गया। मीला भी उठकर कमरे के गेट पर आ गई देखने कि क्या हुआ ऐसा। प्रियांशी फुफकारती हुई बोली— "कहाँ है ये?"

"कौन?" मैंने पूछा।

वो मेरी तरफ़ ग़ुस्से से, लाल आँखों से घूरते हुए बोली— "तेरो बोरा, जाठा"।

और लगभग मुझे धक्का देती हुई लम्बे क़दमों से तेज़ चलती हुई खटक से अपने कमरे का दरवाज़ा खोला।

"फोन किन उठाइरहेको छैनौ, लिन किन आएनौ?"

और दरवाज़ा सटक करके उसने बंद कर दिया। मैंने मेन गेट का दरवाज़ा बंद किया और मीला की तरफ़ इशारे से देखा और पूछा— "क्या हुआ?"

वो भी सहमी हुई थी, इशारे में ही बोली— "पता नहीं"। और कमरे में ही चली गई। उनके कमरे से ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं और बीच–बीच में अभीनय की बहुत धीमी सी आवाज़ सुनाई देती। पर क्या बोल रहे, किस बारे में बोल रहे हैं—कुछ ठीक से समझ नहीं आ रहा था।

मैं भी लैपटॉप के सामने आकर सोफ़े पर बैठ गया। मुझे भी बहुत बुरा लगा। आज पहली बार प्रियांशी से गाली खाई थी—कम-से-कम आज तक उसने ये लिहाज़ तो रखा था।

मैं लैपटॉप में नज़र गड़ाए था, पर मेरा ध्यान उनके कमरे की तरफ़ ही था। मीला भी लैपटॉप चेक करके हॉल में मेरे बगल में आकर बैठ गई। कभी मोबाइल देखती और कभी हैरानी से मेरी तरफ़ देखती और जब भी कमरे से ज़ोर की आवाज़ आती तो सहमकर मेरे और क़रीब आ जाती। थोड़ी देर की लड़ाई के बाद मैं उसे ढाढ़स दे रहा था और वो घबराई-सी मेरे कंधे से चिपक जाती। कमरे से चीज़ें टूटने की आवाज़ें आतीं तो वो सहमी-सहमी कमरे की तरफ़ देखती और कभी आँखें बंद कर लेती।

मैंने एक बार को सोचा कि उठकर जाऊँ और पूछूँ—"क्या कर रहे हो तुम लोग?" पर फिर सोचा कि अगर एक और गाली खा ली प्रियांशी से और

मुझे ग़ुस्सा आया तो मैं कुछ कहूँगा तो नहीं, पर तुरंत ही कमरा छोड़कर निकल जाऊँगा। उससे अच्छा है चीज़ें ख़त्म होने दूँ, समय दूँ।

थोड़ी देर बाद अभिनय के कमरे का दरवाज़ा खटाक से खुला और भड़ाम से उसने तेज़ी से दरवाज़ा बंद किया। पीछे से प्रियांशी की चिल्लाती हुई आवाज़ आई— "गयो, भयो…"। अभिनय बिना हम लोगों से नज़र मिलाए बालकनी में जाकर खड़ा हो गया। जेब से एक Kings निकाली, मुँह में लगाई और लाइटर से सुलगा ली।

मीला ने तब तक मुझे इशारे से कहा ही था कि "जाओ, उसके पास"। तभी उसका फ़ोन वाइब्रेट करने लगा, शायद कॉल आ रहा था। उसने मुझे इशारा किया और फ़ोन लेकर कमरे में चली गई। मैं उठकर बड़ी हिम्मत दिखाते हुए बालकनी में गया और उसके बगल में खड़ा हो गया। वो रेलिंग पर झुका हुआ सामने देखता रहा, ध्यान कहीं और ही था। न उसने कुछ कहा, न मैंने कुछ पूछा।

एक सिगरेट ख़त्म होते ही उसने दूसरी सुलगा ली और फिर उसी मुद्रा में खड़ा रहा।

"एक हफ़्ते का टाइम है?"—उसने धीमी आवाज़ में, कुछ और समय बीत जाने के बाद कहा।

मैंने उसकी तरफ़ देखा और पूछा—"मतलब? बाहर जा रहा है क्या?"

"नहीं रे, काश ऐसा ही होता। कुछ दिन पहले परफ़ॉर्मेंस इश्यू में डाला था जान-बूझकर—लगभग 30 लोगों को। डेवलपर, देवऑप्स, टेस्टिंग और सपोर्ट, सारे मिलाकर"।

"ओह्ह…", मैं कुछ नहीं बोल सका। ये मेरे लिए भी शॉकिंग था। मुझे पता ही नहीं था कि अब इस पर कैसे रिएक्ट करूँ।

"तूने बताया नहीं इतने दिन से?" मैंने कहा। "तो मैं तो यहीं था"।

वो कुछ नहीं बोला, बस सामने देखता रहा।

"फिर क्या सोचा है?" मैंने पूछा।

"देखते हैं, कुछ न कुछ तो इमीजिएट जॉइनिंग में एक महीने में हो जाएगा"।

"मार्केट तो ख़राब है..." मैंने कहा।

"हाँ, पर फुल-स्टैक में मिल ही जाएगा कुछ न कुछ"। उसने जवाब दिया।

"और अगर..."—मैं कुछ बोलना चाहता था, पर रुक गया।

"नहीं हुआ तो या तो शिलॉन्ग वापस जाऊँगा या तुझे वो रूम छुड़वाकर यहाँ लाऊँगा। और तेरी बुरी को भी। और तुम दोनों रूम का किराया और बाकी ख़र्च देखोगे। और ये किचन देखेगी। और क्या रास्ता है?"—वो तेज़ आवाज़ में बोला, पर फिर भी सोच में डूबा हुआ था। सिगरेट ख़त्म हो चुकी थी।

मैंने पूछा—"चाय पीने चलेगा नीचे?"

"नहीं, अब कुछ दिन पैसे बचा, भोसड़ी"।—और हम दोनों मुस्कुरा दिये।

हम हॉल की तरफ़ आ ही रहे थे कि मीला की रोने की आवाज़ आई। हम भागे उसके कमरे की तरफ़ कि "क्या हुआ?" वो बिस्तर में, फ़ोन तकिये में दबाए, सिसक-सिसक कर रो रही थी।

हम पूछ रहे थे—"क्या हुआ? के भयो?" पर वो कुछ नहीं बोल रही थी।

अभिनय भागकर प्रियांशी को उसके कमरे से हाथ पकड़कर ले आया। वो कपड़े बदल चुकी थी। वैसे तो वो ग़ुस्से में थी, पर मीला को ऐसे देखकर वो भागकर उसके सिर के पास बैठ गई और उसका चेहरा हाथों में भर लिया।

मैं उसके पैरों के पास बैठा था और बस उसके पैर सहलाता हुआ अपना हाथ उसकी एड़ी पर रख दिया।

"के भयो वैनी?" प्रियांशी ने फिर पूछा।

वो अब भी कुछ नहीं बोली, बस सिसक-सिसक कर रो रही थी।

"भन, के भयो?" अभिनय ने प्रियांशी के पीछे खड़े होकर पूछा।

वो सिसकते हुए बोली— "मेरो भूतपूर्वले फोन गर्यो"। और थोड़ा-सा उठकर बैठ गई।

"तिमीको बुबाको स्वास्थ्य धेरै खराब छ, छिट्टै घर आऊ"।—उसने धीरे से कहा।

"अनि?" प्रियांशी ने पूछा।

"बुबालाई के भयो?" प्रियांशी ने फिर कहा।

"ठीकसँग सास फेर्न सकिरहेको छैन"। मीला ने कहा।

"के अब तिमी जान्छौ?" अभिनय ने पूछा।

और मीला ने रोते हुए चेहरा हाँ की दिशा में हिला दिया।

"उसले तिमीलाई बोलाउन नाटक गरिरहेको छ होला"।—प्रियांशी ने कहा।

"दिदीलाई फोन गर्यौ?" अभिनय ने पूछा।

"लाग्दैन"।—उसने कहा और वो रोती-सिसकती रही।

"आसपासको कसैलाई प्रयोग गर्‍यो जस्तो लागायो"।—अभिनय ने फिर कहा।

"होटेल दाइलाई फोन गरेको थिएँ, उसले भन्यो आज अस्पतालमा देखाउन गयेको थियो"। मीला ने रूआंसी आवाज़ में कहा।

"तिमी आफैँ गयेको थियौ नि, म भन्दैछु कि त्यसले झुट बोलिरहेको छ"।—प्रियांशी ने फिर कहा।

"अरे, तिमी छोड"।—अभिनय ने तुरंत झकझोरते हुए प्रियांशी का कंधा पकड़ा।

"अफ़िसमा अर्जेन्ट लीव लागि वा 10-15 दिनको लागि WFH लिनको लागि मेल गर, म बिहानको टिकट हेर्छु"।—अभिनय ने कहा और अपना मोबाइल निकालकर देखने लगा और हॉल में चला गया।

मैंने भी उसके पैर पर एक-दो थपकी मारी और कहा—"हाँ, वर्क फ्रॉम होम के लिए डाल 10 दिन"।

उसके अलावा मैं कुछ नहीं कह सका। मैंने उसकी तरफ़ देखा, उसने मेरी तरफ़ देखा और हमारी दो सेकंड के लिए आँखें मिलीं। मानो उसकी लाचारी देखकर मैं कहना चाहता था—"मीला, मैं इस दुःख की घड़ी में तुम्हारे साथ हूँ। प्रेम में सिर्फ़ सुख में साथ नहीं देना होता, दुःख में साथ देना ही तो प्रेम है"।

प्रेम—हाँ, शायद उन कुछ दिनों से मैं फिर उस तरफ़ बढ़ने लगा था।

पर वो—कभी हमने कहा नहीं। या शायद था भी... या नहीं... पता नहीं।

मैं भी उठकर बाहर हॉल में आ गया। मीला के साथ प्रियांशी अंदर बैठी, उससे बात करती रही।

अध्याय 17

सुबह लगभग 6:30 बजे हम बैंगलोर के केम्पेगौड़ा एयरपोर्ट पर थे। 8:30 की उसकी फ्लाइट थी और लगभग 11:30 तक उसे बागडोगरा पहुँच जाना था।

हम सब एंट्री गेट के पास खड़े रहे। मीला और प्रियांशी एक-दूसरे से गले मिलती रहीं, मैं अभिनय के साथ पीछे खड़ा रहा।

मैं बस उस दौरान मीला की आँसुओं से भरी आँखों और चेहरे को देखता रहा। शायद पिछली पूरी रात भी मैं यही करता रहा था—और बीच-बीच में हमारी नज़रें मिलतीं, जैसे वो कह रही हो—“मैं जल्दी वापस आऊँगी”।

अभी भी वही हो रहा था।

“तू ठीक है?” अभिनय ने मुझसे पूछा।

“हाँ बे”, मैंने अचानक जवाब दिया।

“दिख तो रहा है तेरे चेहरे पर”, उसने मेरी तरफ बिना देखे कहा। मैंने एक नज़र उसकी तरफ देखा—वो मीला की ओर ही देख रहा था।

“मुझे पता है तू इस वक्त क्या सोच रहा है और क्या महसूस कर रहा है... लेकिन कोई नहीं, वो आ जाएगी। तब तक जॉब लेने में मदद कर”,

“हम्म...” मैंने कुछ नहीं कहा, बस मीला से नज़रें मिलाने की कोशिश करते हुए इतना ही बोला।

मीला अंदर जाने लगी। हमलोग कुछ कदम आगे बढ़कर उसे बाय बोले। उसने बारिश-सी आँखों से दोनों को गले लगाया और इस बार मेरी तरफ से जो गले मिलना हुआ—वो गहरा था, एक पल के लिए रुक जाने जैसा।

उसने इस बार खुद को नहीं रोका, ना मैंने उसे। वो वक़्त कुछ देर के लिए थम गया। फिर उसने हाथ हिलाया, अपनी उदासी भरी आँखों से नज़रें मिलाईं, हटाईं—और सिक्योरिटी चेक-इन के बाद अंदर चली गई।

और मैं वहीं थोड़ी देर के लिए रुक गया।

उसके जाने के बाद हमलोग उबर की लाइन में लग गये। थोड़ी देर में कैब आ गई।

मैंने फोन निकाला और व्हाट्सएप पर मीला को पर्सनल मैसेज किया—

“When you land Bagdogra, you text me…”

थोड़ी देर बाद रिप्लाई आया—

“At security check-in, of course I will.”

और लगभग एक घंटे बाद हम घर पहुँच गये।

रात को नींद न आने की वजह से हम सब लगभग सो ही गये।

अब उसी कमरे में जहाँ मीला के साथ मैंने इतना वक़्त बिताया था—वहाँ मुझे अकेले रहना था। मन कर रहा था अपने रूम में चला जाऊँ… और फिर घूम-फिरकर वहीं पहुँच गया जहाँ से निकलने की कोशिश कर रहा था।

हालाँकि परिस्थिति अलग थी, पर सबकुछ एक जैसा लग रहा था।

कभी-कभी जब आप खुश रहने की कोशिश करते हैं, प्रकृति शायद आपको बताती है कि “नहीं, तुम खुश रहने के लायक नहीं हो”, और आपको मजबूर करती है कि आप हमेशा अपने अतीत में ही जीते रहो।

और शायद यही मेरी सच्चाई है।

वर्तमान में रहने के लिए शायद मुझे ये पूरी ज़िंदगी छोड़कर एक नई ज़िंदगी शुरु करनी पड़े—वरना ये सब कभी ख़त्म नहीं होगा।

मैं बिस्तर की अपनी तरफ लेट गया।

मीला की तरफ अब खाली थी—बस उसके परफ्यूम की खुशबू, उसके बालों की महक तकिये से हल्की-हल्की आ रही थी… और मैं सो गया।

अभिनय लोग अपने कमरे में चले गये थे।

थोड़ी देर बाद मेरा फोन बजा—टीम्स का नोटिफिकेशन था।

12 बजे के आस-पास का समय था।

आज फिर लॉगिन लेट हो गया था, लेकिन जब फोन उठाया तो एक मैसेज था—

"Landed Bagdogra, took our taxi for Gangtok."

मैंने मैसेज पढ़कर बस इतना कहा—

"Thank God. Once you reach home, update us about uncle's health. We are worried."

मैंने "me" की जगह "us" लिख दिया था।

उसने फिर कहा—"Yes of course "

मन नहीं था, पर लैपटॉप खोलना पड़ा—काम शुरु करना पड़ा, अनमने से।

हॉल से आवाज़ आ रही थी—अभिनय की।

शायद किसी HR से बात कर रहा था, इनिशियल स्क्रीनिंग के लिए।

मैं बाहर आया। "कहाँ बे?" और हँस दिया।

मैंने पूछा, "कुछ हुआ, शेड्यूल?"

"नहीं, कल शायद एक होगा—फर्स्ट राउंड"।

"चल ठीक है, कम-से-कम कॉल तो आई"।

"कॉफी रखी है, पी ले", उसने कहा।

"हट बहन… चल, चेत्ता की दुकान"।

मैंने हाथ-मुँह धोया, ब्रश किया और हम दोनों लिफ्ट से नीचे चेत्ता की दुकान पहुँच गये।

मैंने दो चाय ऑर्डर कीं और कहा, "किंग्स?"

वो बोला, "नहीं बे, सुबह पी ली थी एक"।

मैं मुस्कुरा दिया, पर कुछ नहीं कहा—सोचा, "इतने पैसे भी मत बचा"।

हम वहीं स्टूल पर बैठे रहे।

"तो एक हफ़्ते बाद लैपटॉप देना है बस?" मैंने पूछा।

वो बोला, "हम्म… ID और लैपटॉप दे आऊँगा"।

"हम्मम…"

"वो पहुँच गई?" उसने पूछा।

"हाँ, गंगटोक जा रही है, अभी रास्ते में है"।

"हम्म, हो जाएगा ठीक सब"।

"किसमें है कल?" मैंने पूछा।

"सर्विस बेस्ड का ही है", उसने कहा।

“किसका बे? नाम तो बोल”।

“Accenture का ही है बे”।

“हम्म, तब तो हो जाएगा बे, कल ही देखना”।

“कैसे बे, एक दिन में थोड़े हो जाएगा”।

“अरे, मैंने दिया था LTI और TCS—एक ही दिन में दो टेक्निकल और एक मैनेजमेंट लेकर ख़त्म कर दिया था”।

“हम्म, देखो…”

थोड़ी देर बाद हम दोनों ऊपर आ गये।

प्रियांशी अपने रूम में काम कर रही थी और अभिनय हॉल में बैठा था—लैपटॉप में LinkedIn और Naukri InstaHire जैसी साइटें खुली थीं।

उन दोनों में अभी भी बात-चीत ठीक से नहीं हो रही थी।

वो शायद कुछ लोगों को फोन लगा रहा था रेफ़रेंस के लिए।

मैं अपने रूम में आ गया और काम में मशगूल हो गया।

दोपहर में खाने का मन नहीं था।

शायद आज प्रियांशी ने भिंडी की सब्ज़ी और दाल-चावल बनाया था।

4 बजे के आस-पास एक मैसेज आया—

“Dad is fine, he has been discharged. He has only some breathing issue.”

“Ohhh that’s great to hear, I hope you reached safely”, मैंने रिप्लाई किया।

"Yes, I did. Now reaching home."

मैंने कहा—"Okay, cool, take care."

उसने कहा—"Yeah, and you??"

मुझे कहना था—"तुम्हें याद कर रहा हूँ, आज इस कमरे में बैठकर काम करने का मन नहीं कर रहा"।

पर मैंने कहा—"Nothing, just office stuff, some meetings and implementation."

उसने हँसते हुए लिखा—

"Haha, as usual Thakur 😄"

और फिर लिखा—"Well, there is another thing too which I need to tell you…"

Well I felt Even I felt a Lil closeness between us after spending there many days but.

उसका एक और मैसेज आया।

और एक स्माइली बनाकर इसके साथ मैंने भेजा, पर मेरा मैसेज ही डिलीवर नहीं हुआ।

मैं इंतज़ार करता रहा, बीच-बीच में थोड़ा ध्यान काम में लगाने की कोशिश करता रहा, पर उसका जवाब नहीं आया।

डिनर के बाद मैंने ये अभिनय को भी बताया।

उसने कहा—"कोई नहीं, आ जाएगा, कभी-कभी नेटवर्क इश्यू हो जाता है, पहाड़ है भाई"।

मैंने “हम्म” कहा।

हम दोनों हॉल में सोफ़े पर बैठे थे, वहीं बैठे रहे।

थोड़ी देर बाद वो सोने चला गया—मुझे नींद नहीं आ रही थी। तब मैं कमरे में चला गया और लाइट बंद करके लेट गया।

मैं बार-बार फोन चेक करता रहा, शायद उसका एक मैसेज आए, लेकिन एक भी मैसेज नहीं आया।

मैं उसकी चैट पर जाकर पहले के सारे मैसेज पढ़ता रहा, याद करता रहा और धीरे-धीरे मैं सो गया।

मुझे नाम तो याद नहीं आ रहा, पर शायद किसी बड़े आदमी ने कहा था “मुश्किल वक्त में भी हमें नींद ही सबसे अपनी लगती है”, और वही हो रहा था।

मैं सो गया। सुबह शायद ऐसे ही किसी सपने से जल्दी उठ गया।

मीला का कोई मैसेज नहीं आया, ना मेरा डिलीवर हुआ।

मैं अकेले ही चाय पीकर आ गया। तब तक अभिनय उठ चुका था उसका 10 बजे से इंटरव्यू था।

वो हॉल में आ गया और थोड़ा परेशान लग रहा था कि जो जाए। मैं हॉल में ही बैठा रहा, बिना उसे डिस्टर्ब किये।

सोफ़े पर बैठकर, ईयरबड्स लगाकर, कुछ गाने सुनते हुए आँखें बंद किये बैठा रहा बिना कोई आवाज़ किये।

अभी ने पहला राउंड दे दिया था। मेरे कान में ईयरबड्स थे, इसलिए ज़्यादा सुनाई नहीं दे रहा था, पर बीच-बीच में जब मैं आँखें खोलता, उसकी नज़रें गड़ी होतीं लैपटॉप में।

10:40 के आस-पास शायद उसने फिर इंटरव्यू दिया, मैं समझ गया—दूसरा राउंड भी हो गया होगा।

11 बजे के आस-पास फिर एक बार और, वो वैसे ही बैठा मिला जब मैंने आँखें खोलीं।

मैंने अपने फोन में Teams खोला, जो मैसेज आने लगे थे उन्हें देखता रहा।

पर मैं उठना नहीं चाहता था सोचा कहीं वो डिस्टर्ब न हो जाए और अंदर उस कमरे में जाना भी नहीं चाहता था।

मैंने फिर हल्की आँखें बंद कर लीं और थोड़ी देर बाद लगा कोई मुझे पुकार रहा है।

“अरे बे, अरे बे सो गया क्या ठाकुर! अरे अभिनय बोल रहा था…”

मैं हड़बड़ाकर उठ गया शायद मेरी आँख लग गई थी फिर से।

अब मैं उसे क्या बताता, कल से मन नहीं लग रहा है… “क्या हुआ?” मैंने पूछा। “हाँ, तीनों राउंड आज ही ले लिए—immediate joiner हूँ शायद इसलिए”, उसने कहा।

“हम्म्म, चलो सही है, अब तो क्या बोला आगे का?” “एक-दो घंटे में मेल वगैरह करेगा, डॉक्युमेंट्स और पे-स्लिप के लिए”।

“हम्म ठीक है, लॉगिन करता हूँ”, और मैं उठकर लैपटॉप लेने आया और लेकर चला गया हॉल में।

“अरे, मैसेज गया?” अभिनय ने पूछा।मैंने लैपटॉप खोला ही था कि झेप गया।

"अरे कहाँ बे, कल से न एक मैसेज गया न आया! पता नहीं ऐसा कितना नेटवर्क इश्यू है", मैंने थोड़ा गुस्से में कहा।

"अरे साला इतना बेसबर मत हो तू, आ जाएगा"। तब तक प्रिया हॉल में आई आज वो भी ऑफिस नहीं जा रही थी।

मैं वहीं सोफे पर बैठा रहा, लैपटॉप में बिना मन लगाए नज़रें गड़ाए रहा और मोबाइल बगल में रखे रहा कि जाने कब मैसेज आ जाए लेकिन मैसेज आने का नाम ही नहीं ले रहा था।

अभिनय भी वहीं बैठा रहा।कभी-कभी उसे बीच-बीच में कॉल आती—किसी HR की, किसी रिक्रूटर की। कोई initial screening के बाद interview schedule करने का वादा करता, कोई कहता "बताते हैं आगे"। प्रिया भी अपने कमरे में ही काम कर रही थी शायद और अभिनय ने उसे ये भी नहीं बताया था कि उसका एक कंपनी में last round तक हो गया है।

मेरा तो मन भी नहीं था खाने का कुछ। अभिनय ने कुछ ऑर्डर ही कर लिया। आज प्रियांशी ने भी खाना नहीं बनाया।

इनके झगड़ों के चीते अब बाहर आने लगे थे। लगभग 5 बज गये।

एक unknown number से कॉल आया, Truecaller ने दिखाया—Tara।

मुझे कुछ समझ नहीं आया।मैं स्तब्ध फ़ोन की तरफ देखता रहा, वाइब्रेट होते हुए।

अभिनय ने अचानक कहा—"उठा बे!"

हाँ, तब मैंने हड़बड़ी से कॉल उठाया और बोला "Hello, who?"

मैंने इतना ही कहा कि उधर से मीला की आवाज़ आई "Thakur, listen—I don't want to keep you in dark.

He has taken my phone, but instead I switched it off and kept it with me.

See, I'm not sure, but I think we have always been a friend and we have not crossed the line.

Perhaps you too didn't want it. But honestly, I have always been stuck with him.

And I have only one last choice which he offers… so if"
और फोन कट गया।

मैं सन्न रह गया, hello hello बोलता रहा। मैंने उसी नंबर पर कॉल बैक किया—

कॉल गया, लेकिन उठा नहीं। मैं शायद तीन बार जल्दी-जल्दी फोन मिलाता रहा वो उठा ही नहीं रहा था। अभिनय ने पूछा—"क्या हुआ बे?"

"हुआ क्या!" वो चिल्लाता रहा, मैं झुंझलाता रहा। ये सब सुनकर प्रियांशी भी बाहर आ गई—

"के भायो? क्या हुआ?" मैं कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था।

मैं कमरे के अंदर गया, अपना बैग उठाया, लैपटॉप रखा और बैग बंद किया। दरवाज़ा खोला और निकल गया।

प्रिया और अभिनय हॉल में खड़े "क्या हुआ, क्या हुआ?" पूछते रहे।

मैं नीचे लिफ्ट से उतरा, खड़ा रहा कदम सड़क की तरफ बढ़ने ही नहीं पा रहे थे।

मैं सिर झुकाए बढ़ रहा था कि पीछे से किसी ने कंधे पर थपकी मारी। मैंने पीछे देखा—अभिनय था।

“अरे हुआ क्या बोल तो!” वो मुझे रोकने की कोशिश करने लगा और मैं कमरे की तरफ जाने की ज़िद करता रहा।

रास्ते में लोग भी देखने लगे दो-चार कि “क्या हुआ इन दोनों को?”

“कुछ नहीं बे! मुझे उस कमरे से बाहर आना ही नहीं चाहिए था! तेरी बात सुननी ही नहीं चाहिए थी!”

“अरे लेकिन बोल तो यार तू! क्या हुआ, तू ऐसा क्यों कर रहा है बे? चल, चेत्ता की दुकान पे चाय पीते हैं,

बैठ तो दो मिनट”।

मैंने उसकी बात सुन ली और चेत्ता की दुकान में बैठ गया।

अभिनय ऑर्डर देने के लिए खड़ा हुआ, उसका फोन बजा

उसने कहा, “Yes, I will send you in one hour.” शायद डॉक्युमेंट माँगने के लिए HR का कॉल था।

वो दो चाय लाया और बोला—“अब बोल, आराम से”। और मैंने जो हुआ सब बता दिया।

वो कुछ नहीं बोला, पर वो कुछ तो समझ गया था। मैं बोलता गया—वो बस सुनता रहा।

थोड़ी देर बाद बोला “आज मना नहीं करूँगा—जा अपने कमरे,

दो घंटे बाद आ रहा हूँ बाइक से, व्हाइटफ़ील्ड साइड चलना है कुछ काम है”।

आज पहली बार उसने खुद कहा “जा अपने रूम”।

और मैं फिर सिर झुकाए अपने रूम की तरफ बढ़ गया। चढ़ा, कमरा खोला,

Alexa से कहा—“Light on करो”। कमरे की धूल बता रही थी,

वहाँ अब सिर्फ़ शैतान ही रहते थे। और अब मैं फिर आ गया था उनके बीच रहने। मैं सीधा जाकर औंधे मुँह बिस्तर पर लेट गया।

मैं फिर चाहता था कि आज कोई आँसू निकल जाए पर निकल नहीं पाए।

तो मैंने माँ को फोन लगा दिया।

इस दुनिया में दुःख के समय माँ के अलावा लड़कों का कोई नहीं हुआ।और चाहे ये दुनिया कितनी भी तरक़्क़ी कर ले,इस दुनिया में शायद माँ के अलावा उनका कोई नहीं होगा।शायद समय के अंत तक, मौत के अलावा सिर्फ़ यही एक अटल सत्य बचा रहेगा।

अध्याय 18

मैं मम्मी से थोड़ी देर बात करने के बाद वैसे ही औंधे मुँह लेटा रहा।

आँखें बंद थीं, दिल का उफान आँखों में सँभालते हुए।

पहले फोन के वाइब्रेट होने की आवाज़ आती रही—

थोड़ी देर बजने के बाद जब मैंने नहीं उठाया तो कमरे की घंटी बजी।

अभिनय शायद आ गया था।

मेरा रत्ती भर भी मन नहीं था कहीं बाहर जाने का—

बस अब मैं इसी कमरे में समा जाना चाहता था।

पर फिर मैं उठा, कमरे से बाहर आया,

हॉल में जाकर दरवाज़ा खोला।

"अरे, कल offer भेज देगा", अभिनय खीसे बाड़ी करते हुए बोला,

और झुककर मेरे चेहरे का भाव शायद देखना चाहता था।

मैंने कहा, "चल, बढ़िया",

और फिर मुड़कर आकर बिस्तर पर औंधे मुँह लेट गया।

"चलेगा न क्या साला तू?"

वो सीधे अंदर आकर टेबल पर रखे कुछ कपड़े बिस्तर पर फेंकता हुआ बोला,

और धम्म से बैठ गया।

मैंने कुछ नहीं कहा।

"चल बे, बोल के भेज था तेरको हम!"

वो लगभग चिल्लाते हुए बोला।

मैं फिर भी कुछ नहीं बोला।

मुझे उम्मीद थी वो फिर कुछ बोलेगा,

पर वो इस बार कुछ नहीं बोला।

मैंने भी आँखें नहीं खोलीं।

थोड़ी देर कमरे में असहज सी शांति बनी रही।

वो एक सिगरेट साथ में लाया था,

जो सावधानी से पॉकेट में रखी थी—

शर्ट की ऊपर वाली जेब में।

उसे उसने निकाला और लाइटर से कट-कट करते हुए जला ली।

"मैंने पता करवाया प्रिया से मीला के यहाँ क्या हुआ"।

उसने बहुत ही सहज आवाज़ में धीरे से कहा।

मैंने ये सुनते ही अपनी आँखें खोल दीं।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद मैंने पूछा,

"किससे पूछा?"

मैं देखना चाहता था कि मेरा जानबूझकर फोन न उठाना कोई वजह थी या कुछ और।

"प्रियांशी तो काफ़ी लोगों को जानती है उसके यहाँ",

वो अभी बोल ही रहा था कि मैं बीच में बोल पड़ा—

"बात किससे की?"

"उसकी दीदी से"।

मैं कुछ नहीं बोला, उठकर बैठ गया।

मैं इतना कमज़ोर महसूस कर रहा था कि उससे नज़रें नहीं मिलाना चाहता था—

कभी मोबाइल देखता, कभी छत की तरफ़।

उसकी सिगरेट ख़त्म हो गई थी।

वो भी अब चुप बैठा रहा।

मेरे मन में ऐसे-ऐसे ख़याल आ रहे थे कि मैं 'क्या हुआ' पूछना भी चाहता था,

पर जवाब सुन पाने की ताकत नहीं थी—

शायद इसलिए छोड़ देना भी चाहता था।

उसने खुद ही बोलना शुरु कर दिया।

"तेन्ज़िन का ब्रेकअप हो गया, या जिस लड़की के साथ था शायद उसने भाव नहीं दिया होगा,

तो उसके पास कोई और तरीका नहीं था।

शायद मीला के पास वापस आने की या इतनी हिम्मत नहीं उससे बात करने की।

तो अंकल की साँस में तकलीफ़ को उसने जानबूझकर इतना बड़ा बना के present किया

कि मीला को आना पड़े"।

"उसने reception में homestay के और जो एक-दो लोग वहाँ काम करते,

उन्हें सबको पता लिया था।

उसने दीदी तक को उसी तरीके से बुलाया गया सिलीगुड़ी से,

ताकि अगर मीला और दीदी की बात हो तो ऐसा न लगे कि इतना भी ज़्यादा सीरियस नहीं है"।

"हम्म्म…" मैंने कहा।

"अब सिचुएशन उसने ऐसी बना दी है,

और मीला भी उससे बाहर निकलने की कोशिश तो कर ही रही थी,

पर शायद निकल नहीं पाई पूरी तरह"।

वो बोल रहा था कि मैं फिर बीच में बोल पड़ा—

"Chat तुझे जाना था न?"

और वो चुप हो गया।

मुझे सुनने में डर लग रहा था—

क्या सुनूँ? जिस चीज़ का डर था,

शायद वही हो गया।

मैं उन्हीं कपड़ों में उठा,

वो बाहर निकला,

मैंने दरवाज़े को ताला मारा और नीचे आ गया।

हम बाइक पर बैठे हुए थे कि उसने कहा—

"चलेगा?"

मैं बोला—"हां"।

"तेरा साला, कुछ तो mind divert होगा"।

और उतरकर बाइक के पीछे आ गया।

मैंने बाइक स्टार्ट कर दी।

रूम आकर लैपटॉप तो खोलना ही भूल गया।

आज जाने क्या हुआ होगा—

ऐसा एक विचार दिमाग में आया और गया।

और फिर अचानक से मैंने उससे पूछा—

"तो फिर अब?"

"पता नहीं बे, कुछ ठीक-ठीक… कुछ भी हो सकता है"।

"कुछ भी मतलब?" मैंने पूछा।

मेरा कान पीछे ही लगे हुए थे—

बस मेरी आँखें मानो सामने बाइक की रफ़्तार को balance कर रही थीं,

और दूसरी ओर आती-सीटी गाड़ियों की रोशनियाँ

कभी-कभी आँखें चौंधिया भी रही थीं।

"मतलब ये कि तेन्ज़िन लगभग हमारी उम्र का है—

एक-दो साल छोटा होगा।

तो क्या पता शादी न हो जाए…"

"अरे इतनी जल्दी शादी?"

मैंने पीछे सिर घुमाकर उसे एक नज़र देखा,

और फिर आगे मुड़ गया।

"मैं बस guess कर रहा हूँ,

क्योंकि अब जितना desperate वो बनके बैठा है,

क्या पता वो कैसे फँसा ले सबको, मना ले सबको।

कुछ न सही तो शादी fix ही कर ले—

या court marriage"।

"क्या बोल रहा है बे!

North East में भी होगा क्या ऐसा?

UP नहीं है!

वहाँ तो women को फ़्रीडम है,

इतनी उनकी चलती है—

सिर्फ़ male dominated थोड़ी है"।

मैंने लगभग सवाल करते हुए कहा।

"अरे बात male domination की नहीं है,

बात है अब उनके रिश्ते के उस मोड़ की—

जो अब dating की तरफ़ जाता हुआ नहीं दिख रहा।

फिर दोनों की फ़ैमिलीज़ भी जब involve हो चुकी हैं,

तो क्या पता क्या हो…"

“हम्म्म…”

मैं कुछ बोल नहीं सका।

“चलेगा न शादी में?”

वो थोड़ा मज़ाक करते हुए बोला।

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

“तो कुछ हो नहीं सकता?”

मैंने बहुत धीरे से पूछा।

वो बोला—

“जब मैंने इतनी बार तुझे कहा कि बात आगे बढ़ा,

खुलकर propose कर,

तूने मेरी एक बात नहीं मानी।

हो सकता है मीला को भी कहीं न कहीं ये लग गया हो

कि शायद तू भी नहीं चाहता उसके साथ रिश्ता बनाना।

पर ऐसा तो नहीं था न, यार?”

“अरे, लड़कियों के पास बहुत options होते हैं हमारे देश में—

North, West, East, India कहीं से फर्क नहीं पड़ता।

समय रहते उन्हें assurity देना ज़रूरी…

ये साला कौन ऐसे बाइक चलाता हुआ आ रहा बे!”

वो तेज़ से बोला।

मैं बोला—“कहाँ?”

"वो देख, सामने इतनी तेज़ी से आ रहा है—सँभाल बे!"

सामने से beam flashing light जलाते हुए

एक बाइक बहुत तेज़ी से आ रही थी।

जब तक मैं slow करता,

वो लोग लगभग बगल में आ चुके थे।

अगर मैं अचानक से brake मार देता

तो पीछे की कार हमें मार ही देती।

वो लोग हमारी बाइक के बराबर आ चुके थे।

तभी मैंने देखा—

वो तीनों helmet लगाए हुए थे,

और लातें चला रहे थे।

तभी एक लात मुझे लगी,

मेरी बाइक बहुत तेज़ disbalance हुई

और मैं लगभग उड़ता हुआ दायीं रोड की तरफ जाकर

कंधे के बल गिरा।

वो तो ऊपरवाला था कि divider के किनारे से

कोई चारपहिया नहीं गुज़री,

वरना इस कहानी को कहने के लिए भी मैं नहीं रहता।

मेरा कंधा बहुत ज़ोर से टकराया,

और helmet समेत मेरा सिर भी तेज़ी से divider में लगा।

इतनी तेज़ कि कुछ देर के लिए

मुझे कुछ समझ नहीं आया कि मैं कहाँ हूँ,

क्या कर रहा हूँ।

जब तक कुछ समझ में आया,

और कंधे से उठने की कोशिश की,

मैंने बाइक की तरफ देखा—

बाइक के साथ अभिनय गिर चुका था।

बायाँ पैर उसका बाइक के नीचे था,

और दायें पैर पर वो तीनों लड़के

लातें और डंडे से मार रहे थे।

अभिनय लगभग अचेत-सा पड़ा था,

बचने की कोशिश कर रहा था।

वो कार भी वहीं रुक गई थी।

मैं तेज़ से चिल्लाया—

“Help sir! Help! Mere bhai ko bacha lo sir!

कोई मेरे भाई को बचा लो!”

पर शायद मेरी आवाज़

वो खुले हेलमेट के अंदर ही रह गई।

मैं सीधा हो नहीं पा रहा था,

उसी divider के बगल में पड़ा

लाचार-सा उठने की कोशिश करता हुआ

अभिनय की तरफ देखता रहा।

“कोई बचा लो मेरे भाई को! बचा लो!”

और मैं रोता रहा।

मुझे नहीं पता—

वो मेरे कंधे के टूटने का रोना था,

अभिनय के पिटने का,

या मीला-जयश्री जैसी लड़कियों के

मेरी ज़िंदगी से चले जाने का क्रंदन था।

जब तक मुझे होश रहा,

मेरे आस-पास कुछ पैर आकर खड़े होते हुए दिखे,

और उन पैरों के बीच से देखा कि

लोगों ने उन लड़कों को भगाया

और वहाँ भीड़-सी बन रही थी।

मुझे जब थोड़ा-थोड़ा होश आ रहा था बीच में,

तब मैंने खुद को हिलती हुई सफ़ेद गाड़ी में पाया—

वो ambulance थी शायद।

मेरे आस-पास दो-तीन अनजाने चेहरे थे,

और उसी में सामने अभिनय भी पड़ा था।

कुछ लोगों ने उसका दायाँ पैर ऊपर हवा में उठा रखा था।

उसके बाद तो सीधे अपने को अस्पताल के वार्ड में पाया।

जब नर्स रोड से छीले घावों पर Dettol या Betadine लगा रही थी,

तो तीन-चार बेड छोड़कर जब नज़र मारी

तो कोई चिल्लाया—

"ठाकुर! ठाकुर भैया! मेरा दोस्त!"

मैंने आसपास के लोगों से पूछा,

"मेरा दोस्त कहाँ है?"

तो उन्होंने उंगली से इशारा कर दिया—

तीन-चार बेड दूर एक और बेड था,

जिसके आसपास तीन चार लोग खड़े थे।

उसका दायाँ पैर सीधा करके रखा गया था,

और बाकी हाथ-पैर में भी

छोटी-छोटी पट्टियाँ सी दिख रही थीं। पर उसका चेहरा नहीं दिख रहा था।

"भैया, क्या हुआ मेरे दोस्त को?"

मैं पास खड़े एक आदमी—शायद अटेंडेंट—से पूछना चाहता था।

उसने कहा, "You relax first, you too have injuries."

"सर, प्रिया मुझे मार डालेगी प्लीज़ मैम",

मैंने नर्स से विनती की—

"बताइए न, प्लीज़!"

और मैं रोने लगा।

नर्स ने तब तक मेरा दायाँ हाथ मोड़कर

मेरी छाती पर रखा,

बेड को कमर से ऊपर उठाया।

और उसने सफ़ेद कपड़ा लिया,

मुझे पीछे से उस आदमी की मदद से आगे किया।

तब मुझे इतना दर्द हुआ कंधे में

कि लगा जान निकल जाएगी।

मुझे एहसास हुआ कि मेरा कंधा सूजकर इतना ऊपर आ गया है

कि मैं हाथ तक नहीं हिला पा रहा था।

मुझे उस वक़्त बिस्तर पर पड़े-पड़े

ऐसा लग रहा था कि मैंने

हम दोनों की ज़िंदगी ख़राब कर दी।

काश उसने मुझे बाइक चलाने को ही न कहा होता।

और मैं दर्द में बड़े-बड़े आँसू लिए यही सब सोचता रहा।

मुझे कुछ injections दिये गये शायद दर्द के।

मैं तब एकटक अभिनय के बेड की तरफ़ देख रहा था मुझे उसका शरीर दिख रहा था, चेहरा अब तक नहीं,

क्योंकि लोग खड़े थे।

और शायद injection के असर से

धीरे-धीरे नींद आने लगी थी कि तभी मुझे प्रियांशी का

घबराया हुआ धुंधला चेहरा दिखा, जो कमरे में रोते हुए घुसी।

और मेरी नींद आती-आती चली गई दर्द का एहसास और बढ़ गया।

प्रियाभदवास सी हुई अभिनय के बेड के पास पहुँची। पहुँचने पर मेरी तरफ़ से तो भीड़ थी, इसलिए मैं कुछ भी नहीं देख सका।

लेकिन उसकी ज़ोर-ज़ोर से रोकर चिल्लाने की आवाज़ और कभी सिसकने की आवाज़ आ रही थी।

जो लोग पहले बेड पर थोड़ा झुककर खड़े थे, वो लोग सीधे हो गये।

मैं बस यही सोच रहा था कि वो अभिनय से लिपट गई होगी,

वो इस दृश्य को कैसे सहन कर रही होगी।

मैंने उसका पूरा हँसता जीवन ख़राब कर दिया।

मैं भगवान से संवाद करने लगा—

कि मेरा जीवन जो था, वो था,

पर मेरे जीवन का मनहूस साया अब उसके जीवन में भी क्यों पड़ रहा है।

बीच-बीच में उसकी आवाज़ आती रही—

कभी रोने की, कभी चिल्लाने की।

सब लोग वहाँ बस मूर्तियों की तरह खड़े रहे

और मैं उस बिस्तर की तरफ़ नज़रें गड़ाए रहा।

तभी उस कमरे में दो पुलिस शायद कॉन्स्टेबल दाख़िल हुए।

उनके हाथ में कुछ काग़ज़ जैसे सामान थे।

वो अभिनय के बेड के पास जाकर खड़े हो गये—पर थोड़ा दूर।

वो सीधे भीड़ के बीच नहीं गये।

उन्होंने शायद कुछ सवाल किये—जो मुझे ठीक से सुनाई नहीं दिये,

और साथ ही उसकी टांगों की तरफ़ भी नज़र दौड़ाते रहे।

भीड़ हटने पर मुझे अभिनय दिखा—

वो मेरी तरफ़ मुँह किये पड़ा था।

उसी के सिर के पास रोती हुई, मुँह से लाल हो चुकी प्रियांशी का चेहरा दिखा।

अभिनय का चेहरा बाईं तरफ़ से सूजा हुआ था और हल्के-फुल्के खरोंच के निशान थे।

मुझे लगा—या तो उन लड़कों ने मुक्के मारे होंगे,

या इसका चेहरा भी ज़मीन से लगा होगा। पता नहीं।

मेरी नज़रें अभिनय से तो मिलीं,

पर ना वो हँसा और ना उसने कोई प्रतिक्रिया दी।

पर जब प्रियांशी से नज़र मिली—

तो उसके चेहरे पर मुझे गुस्सा दिखा।

मुझे एहसास हो गया कि अब वो शायद मुझसे ज़िंदगीभर नाराज़ ही रहेगी।

मेरे कर्म कभी मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे—

तब तक पुलिस मेरे बेड के पास आ गई

और मेरे दाईं ओर खड़ी हो गई।

उसके पीछे अभिनय के पास वाली बेड के भी दो लोग आ गये।

पुलिस ने मेरे पास खड़े आदमी से पूछा—

“Did you bring them here?”

“Yes sir”, कहकर उसने सिर हिलाया।

फिर उसी कॉन्स्टेबल ने मुझसे पूछा—

“How did this happen? Do you remember?”

मैंने कहा,

“Not exactly after falling sir, but I remember they were coming from opposite direction

and probably they were using the high beam light.

Not sure—there were two or three.

But probably they hit us with the leg and thrown away from the bike.”

“Okay, were you drunk?”

“No sir, I don’t drink at all.”

“Were they drunk?”

“I’m sure about that sir.”

“Do you have licence?”

“Yes, I have sir, but not sure where is mobile and wallet now?”

पास खड़े आदमी ने कहा, “We have submitted at nurse station.”

“Oh okay, thank you sir”,

मैंने उसकी तरफ़ देखकर कहा।

कॉन्स्टेबल ने फिर पूछा,

“Tell me, will you be able to recognise the bike they were coming on?”

“No sir, I’m not sure which bike and who all were there.”

“Hmmm okay. Who is that guy?”

उसने अभिनय के बेड की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा।

“He is my friend sir, since college”,

मैं अपनी सफ़ाई में कोई कमी नहीं रखना चाहता था।

“His wife has come? Yours is also coming? Are you married?”

“No sir, I am not.”

“Is there anyone who can come?”

मैंने अभिनय के बेड की तरफ़ देखा—

कम-से-कम उसके साथ उसके दुख में प्रियांशी थी।

मेरे तो अभिनय के अलावा यहाँ अपना कोई नहीं था।

“No sir”,

मैंने बहुत धीरे से बोलते हुए सिर हिला दिया।

“Well all right, we are taking this as a written complaint for now

since the people who brought you here have reported us.

But for FIR you guys have to decide.

Since you are not in condition, we will see this from our side.”

“Sure sir, thank you sir.”

पुलिस वाले और तीनों आदमी चले गये।

जो आदमी मेरे पास खड़ा था, उसने “take care” कहा और पुलिस के पीछे चला गया।

नर्स भी चली गई।

मैं वहीं लेटा रहा।

पुलिस दो मिनट अभिनय के बेड के पास रुकी, फिर सब चले गये।

अभिनय के बेड के पास एक स्टूल पर प्रिया बैठ गई।

अभिनय उससे बात कर रहा था,

और प्रिया बड़े-बड़े आँसू भरे उसकी नज़रों से नज़र मिला

उसका सिर सहलाते हुए बात कर रही थी।

मैंने उनके बेड की तरफ़ से मुँह फेर लिया।

मेरी तरफ़ दीवार थी और मेरी आँखों से कुछ आँसू बह गये।

मुझे नहीं पता—

मैं जो किया उसपर रो रहा था

या इस मुश्किल वक़्त में जब मेरा हाथ ऐसा लग रहा था जैसे कट गया हो,

और उस वक़्त मेरे साथ कोई नहीं था।

ख़ैर, जॉब भी है—

मैंने सोचकर अपने को सँभाला

और अपने बाएँ हाथ से आँसू पोंछ लिए।

आँखें बंद करके वैसे ही लेटा रहा।

थोड़ी देर में दो वार्ड बॉय और एक नर्स आई।

उन्होंने थोड़ी थपथपाहट की,

सिर पर हाथ रखकर जगाया—पर मैं सोया नहीं था।

सलाइन वगैरह निकाली गई।

जब मैं कुछ समझ पाता,

मेरा बिस्तर चलने लगा।

“Ma’am, where?” मैंने नर्स से पूछा।

उसने बिना मेरी तरफ़ देखे कहा—“Going for X-ray.”

मैंने नज़र मारी—

अभिनय का बेड भी मेरे आगे थोड़ी दूर था

और उसके पीछे-पीछे प्रियांशी जल्दी-जल्दी चल रही थी।

थोड़ी देर में हम दोनों के बेड एक के पीछे एक एक्स-रे रूम के आगे इंतज़ार कर रहे थे।

मैंने एक नज़र हॉल में डाली—

वो लगभग खाली था।

दीवार पर एक घड़ी लगी थी जिसमें लगभग 11 बजने को थे।

इतनी देर में इतना कुछ हो चुका था—

मानो एक सदी बीत गई हो।

इस पूरे दौरान प्रियांशी मेरी तरफ़ पीठ करके ही चलती रही और खड़ी रही।

उसने कोई दया या अपनापन नहीं दिखाया,

और मुझसे बात करने की कोई इच्छा भी नहीं जताई।

और मुझे भी उसी की उम्मीद थी।

पहले अभिनय को कमरे में ले गये,

और प्रिया को भी एंट्री दी।

थोड़ी देर बाद जब उसका बेड निकला तो मुझे अंदर ले गये।

उसी बीच मेरी नज़र अभिनय से मिली।

मैं दुखी होकर उसके मुखातिब हुआ—

उसने शायद न हँसना चुना, न रोना।

बस वो अचेत-सा रहा।

जब मुझे एक्स-रे के लिए ले जाया गया

तो मेरे हाथ पर बँधा कपड़ा खोला गया—

और मेरी जान दर्द से निकल गई।

उन्होंने दो-दो एंगल से हाथ को एक बार सीधा और एक बार मोड़कर लिया।

मुझे लगा—बस, आज ही मेरी जान जाएगी।

पर मैं बिस्तर को एक हाथ से पकड़कर सारा दर्द सहता रहा।

अंत में अंदर के डॉक्टर ने फिर कपड़ा वैसे ही बाँध दिया

और मुझे जाने के लिए तैयार किया।

मैंने दबे स्वर में पूछा—

“How bad, sir?”

डॉक्टर जो कंप्यूटर स्क्रीन के आगे मास्क लगाकर बैठा था बोला—

“Not that bad, will send the report. Don’t worry, you both are champs.”

मैंने हल्की-सी मुस्कान दी,

और फिर वार्ड बॉय और नर्स मेरे बेड को धकेलते हुए

वापस उसी जगह ले आए।

अभिनय आँखें बंद किये लेटा था

और प्रियांशी उसके कंधे के पास वाली कुर्सी पर

माथा झुकाए बैठी थी।

वार्ड बॉय भी चले गये।

मुझे मन हुआ कि माँ से बात कर लूँ—

बताना नहीं, बस बात कर लूँ।

लेकिन किससे कहूँ, किससे माँगूँ फोन?

कहाँ है फोन, कैसे जाऊँ लेने?

उठ तो सकता था पर डर था—

कहीं नर्स ने डाँट दिया तो?

मैं वैसे ही असहाय-सा आँखें बंद करके पड़ा रहा।

थोड़ी देर बाद बेड के पास कुछ हलचल हुई।

ऐसा लगा कोई आया है।

मुझे लगा—नर्स होगी, शायद किसी काम से आई होगी।

बगल वाले बेड पर एक बूढ़ी अंटी थीं—

शायद उन्होंने बुलाया होगा।

मैंने आँखें नहीं खोलीं।

तभी किसी ने मेरे माथे पर हाथ फेरा—

और प्रिया ने बड़ी मीठी आवाज़ में कहा,

"ठाकुर…"

और ये सुनते ही मैं फफक कर रो पड़ा।

"बस-बस भाई यार, इतना रुलाएगा क्या अपनी भाभी को?"

प्रियांशी से ऐसी बात की उम्मीद नहीं थी,

और उससे ऐसा सुनकर मैं दीवार की तरफ़ मुँह किये रोतासिसकता रहा।

वो मेरे पर हाथ फेरती रही और रोती रही।

“एक बार डिस्चार्ज हो जाऊँ न,

तो मैं तुम सबकी ज़िंदगी से बहुत दूर चला जाऊँगा प्रियांशी।

मेरे रहते कोई कभी खुश नहीं हो सकता।

वही जब गिरा था न,

कोई गाड़ी ऊपर से चढ़ जाती—तो ठीक था।

मैंने आजतक किसी का भला नहीं किया”।

मैं अपने बाएँ हाथ से आँसू पोंछता जा रहा था

और बोलता जा रहा था।

वो कुछ नहीं बोली—

उसने मोबाइल और पर्स फिर से मेरे बाई की तरफ़ हाथ बढ़ाकर सिर के पास रख दिया।

फिर बोली—

“एक्स-रे रिपोर्ट आ गई है,

कल सुबह डॉक्टर बताएगा”।

मैं चुप हो गया।

फिर मैंने मुँह उसकी तरफ़ किया

और देखते हुए कहा—

“मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई प्रिया...

मुझे माफ़ कर दे प्रिया,

मुझे माफ़ कर दे, प्लीज़…”

वो बस रोती रही,

धीरे-धीरे बोली—“चुप हो जा बस…”

मैंने फिर अचानक पूछा—“क्या आया रिपोर्ट में?”

वो थोड़ी शांत हुई और बोली—

“तेरे कंधे की हड्डी dislocate हो गई है दिखा रहा है उसमें”,

मैंने फट से पूछा—“और अभिनय की…”

वो नज़रें चुराती हुई बोली—

“उसकी thigh bone में एक crack दिखा रहा है”।

मैं फिर थोड़ा सिसकने लगा।उसने और कुछ नहीं कहा।

मैंने अभिनय के बिस्तर की तरफ़ नज़र मारी—

वो हमारी तरफ़ ही देख रहा था।

उसने हल्की-सी मुस्कान दी और सिर हिलाया।

मैं आँसुओं से भरी आँखों से उसे देखता रहा।

मैंने कहा—

“तुम लोग private ward ले लो,

यहाँ ठीक नहीं है, कहाँ रुकेगी पूरी रात?”

वो बोली—

“आज यहीं नीचे बिछाकर सो जाऊँगी।

पूछ लिया है मैंने,

कल एक double sharing वाला ले लूँगी”।

“डबल क्यों?” मैंने पूछा।

“तू क्या यहीं पड़ा रहेगा?”

वो मेरी तरफ़ गुस्से से बोली।

मैंने कुछ नहीं कहा।

“तू आराम कर, भूख लगे तो बताना—

कैंटीन से कुछ ला दूँगी,

और कुछ काम हो तो भी कहना”।

मैंने “हम्म” कहा।

वो जाकर फिर अभिनय के बगल में कुर्सी पर बैठ गई।

थोड़ी देर बाद वार्ड की बड़ी लाइट्स बंद हो गईं।

एक-दो छोटी लाइट्स जलती रहीं।

मैं उनकी तरफ़ देखता रहा—

वो दोनों एक-दूसरे से बात करने लगे।

कभी प्रियांशी अभिनय को पानी पिलाती,

कभी उसके बाल ठीक करती,

कभी उसका मुँह पोंछती,

कभी भावुक हो जाती, कभी गुस्सा।

धीरे-धीरे नींद आने लगी,पर दर्द का आलम ऐसा थाकि जब कम होता तो नींद आती,और हल्की-सी हरकत से फिर आँख खुल जाती।

मम्मी शायद बचपन में ठीक ही कहती थीं

इस देश में भगवान किसी दुश्मन को भी अस्पताल और अदालत का मुँह न दिखाएँ।

सीधा लेटे-लेटे शरीर भी बहुत दर्द देने लगा था, पर कोशिश करते हुए नींद एक बार ठीक से आ गई।

अध्याय 19

पूरी रात जैसे तैर काटी, बाईं करवट में भी दिक्कत थी।

दायाँ हाथ हिलता तो पूरा लोड शरीर पर आता और इतनी तेज़ दर्द होता कि दिल की धड़कन जैसे बंद हो जाती।

सीधे-सीधे लेटे-लेटे सुबह हो गई।

नींद लगभग 5:30 तक खुल गई थी।

पूरे वार्ड में हलचल शुरु हो गई थी।

नर्सेज़ और वार्ड बॉयज़ की शिफ्ट बदल रही थी।

शायद रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट और बस स्टैंड के बाद अस्पताल ही ऐसे होते हैं जो पूरी रात जागते रहते हैं।

ख़ैर, टॉयलेट जाने के लिए किसी तरह हिम्मत जुटाकर उठा।

हाथ में झटके के दर्द इतने असहनीय थे, लेकिन कोई और चारा फिलहाल नहीं था।

इतनी देर बाद ज़मीन पर पैर रखने पर ऐसा लगा जैसे पैरों में जान ही नहीं है,

पर किसी तरह खुद को सँभालते हुए उठा।

अब घुटने और वहाँ की हर नस का पता चल रहा था।

शरीर पर ऊपर कपड़ा नहीं था—

नीचे पैंट थी लेकिन आधी कटी-फटी।

मुझे याद नहीं कि टी-शर्ट कब और कैसे निकाली गई या कैंची से काटकर हटाई गई थी।

तो उसी अस्पताल की सफेद चादर लपेटकर बाथरूम की तरफ़ गया।

तभी मैंने देखा, अभिनय मोबाइल चला रहा था और प्रिया नीचे अभी भी सोई हुई थी।

उसने मुझे देखकर इशारे में छोटी उंगली दिखाई।

मैंने पूछा—"तू?"

तो उसने पेशाब की नली जैसी टॉयलेट बैग दिखा दी।

मैं कुछ बोल ही नहीं पाया, बस आगे बढ़ गया।

सोचने लगा—

प्रियांशी को कितनी दिक्कत होगी।

बिस्तर में ही अभी कितने दिन तक उसे नित्य क्रिया-कर्म के लिए सहारा देना पड़ेगा,

खाना-पानी, नहाना, या गर्म कपड़े से पोंछना—

ऐसी हालत हो गई थी उसकी, मेरी वजह से।

मैं बाथरूम पहुँचा—वो खाली था।

पैंट खोलने, निपटने और फिर चढ़ाने में इतनी मुश्किल हुई

कि लगा जैसे इस उम्र में इतना कठिन काम पहले कभी नहीं किया।

ख़ैर, लौटते वक्त बिस्तर की तरफ़ जाने से पहले

अभिनय के बिस्तर के पास जाकर उसी कुर्सी पर बैठ गया।

"भाई, मैंने ये क्या कर दिया यार..."

मैं बस उसके पैर की तरफ़ देखता रहा।

उसने मोबाइल हटाकर बगल में रख दिया,

पर कुछ नहीं बोला।

“आज ही तेरा ऑफ़र आने वाला था,

अगले हफ़्ते से जॉइन भी कर लेता,

सब ठीक हो गया था—पर…”

और मैं दूसरे मरीज़ों के बिस्तरों की तरफ़ देखने लगा

जो सुबह की नित्य क्रिया के लिए यहाँ-वहाँ आ-जा रहे थे,

जिससे पूरे वार्ड में हलचल बढ़ गई थी।

उसने कहा—

“एक मेल ड्राफ़्ट करके रखा है, अभी भेज दूँगा 9–10 बजे”।

मैंने पूछा—“क्या लिखा है?”

“कि या तो आप मुझे जॉइन करवाना चाहते हो तो मैं नेक्स्ट वीक से जॉइन कर लूँगा,

पर जो ये ऐक्सिडेंट हुआ है इस वजह से लगभग दो महीने work from home दे दो,

क्योंकि मेरा हाथ और सिर ठीक है तो मैं काम कर सकता हूँ।

क्योंकि अब मुझे कंपनी की health insurance यूज़ करनी पड़ेगी,

तो अगर जॉइन करवाओगे तो I can join,

वरना करंट कंपनी मुझे critical accident केस में रिलीज़ नहीं करेगी।

तो मैं यहाँ कम-से-कम 3 महीने मैनेज कर सकता हूँ।

Salary और insurance दोनों मुझे फाइनेंशियल मदद करेंगे

इन हालातों में जो अभी मेरे लिए ‘need of the hour’ हैं।

एक्स-रे, फ्रैक्चर वाले पैर की तस्वीर और रिपोर्ट तीनों अटैच किये हैं

और अस्पताल का नाम व लोकेशन भी लिखा है।

मुझे एक दोस्त का केस याद है—उन्होंने किया था,

तो उम्मीद है ये भी मान लेंगे”।

“तब तो सही है”, मैंने कहा,

“मैं भी आज एक मेल डाल दूँगा—

एक हफ़्ते के लिए accident leave बोलकर।

फिर देखते हैं क्या कंडीशन है।

हाथ तो राइट चलेगा नहीं, लेफ़्ट से काम हो तो जाएगा,

बस थोड़ा स्लो होगा।

एक हफ़्ते बाद देखते हैं क्या होता है आगे”।

वो बोला, “हम्म्म, हो जाएगा बे,

दोनो का ठीक सब—घबरा मत,

जो हुआ सो हुआ”।

मैं कुछ नहीं कह सका।

बार-बार मेरे दिमाग में

उन लड़कों की लात मारने और बाइक डिसबैलेंस होने का वो पल घूमने लगा,

मेरा उड़कर गिरना,

अभिनय का गिरा पड़ा रहना,

और उन लड़कों का मारने वाला दृश्य—

सब बार-बार उभरते रहे।

बल्कि पूरी रात भी शायद सपनों में कई बार दिख चुका था।

मैंने सीधा पूछा—"अरे, अब तू नंबर दो कैसे करेगा?"

वो हँस पड़ा—"ज़िंदगी भर हगने, अब दो नंबर बोलने लगा"।

और हम दोनों खिलखिला पड़े।

उसके जीवन में बड़ी से बड़ी चीज़ भी

वो कितनी सहजता से झेल जाता है,

और मैं—उसका बिलकुल उल्टा।

करने को तो सब कर लेता हूँ,

पर कुछ चीज़ें झेली नहीं जातीं।

उसने कहा—

"अभी यहाँ अगर करनी पड़ी तो,

उस तरफ़ कपड़ों वाला स्टैंड है जो प्राइवेसी देता है",

उसने कोने में रखे एक स्टैंड की तरफ़ इशारा किया।

मैंने देखा—वो नर्सों के बैठने की जगह के पास रखा था।

उसने कहा—

“इसे लगाकर देंगे, तो pot जैसा आता है,

उसी में करना पड़ेगा,

और फिर बाथरूम में डालना पड़ेगा।

और हाथ भी उसी में धोने पड़ेंगे”।

मैंने मन ही मन सोचा—

“जीवन तो नरक हो गया उसका”।

वो बोला—

“अभी डबल शेयरिंग ले लेंगे तो कोई दिक्कत नहीं होगी,

वो स्टैंड भी नहीं लगाना पड़ेगा।

तू बाहर निकल जाएगा,

अभी तो फिलहाल यही करना होगा,

बाकी आगे देखेंगे”।

मैं कुछ नहीं बोला, बस सिर हिला दिया।

मैं वहीं थोड़ी देर बैठा रहा,

वो भी बस मोबाइल की चैट में उलझा रहा।

प्रियांशी वहीं पास सो रही थी।

मैंने पूछा—“माँ को बुलाएगा?”

वो बोला—

“बता तो दिया है,

कल रात थोड़ी बहस भी हुई हमारी।

पर अभी तो मना किया है"।

"हाँ, बुला ले बे,

हेल्प हो जाएगी प्रिया को भी",

मैंने कहा।

"उसका भी तो ऑफिस है"।

"और तू?" उसने पूछा।

"नहीं बे, मैं क्या बुलाऊँगा।

मेरा हो जाएगा ऐसे ही।

बचपन में भी हाथ टूटा था तो सब कर लेता था",

मैंने कहा।

"बचपन और अब में बहुत फर्क है भाई।

बाकी मैं जानता हूँ तू बुलाएगा नहीं,

बताएगा भी नहीं शायद"।

वो बोला।

मैंने कहा—

"बोल दूँगा, हल्का बाइक से गिरा हूँ,

थोड़ी खरोंच आई है,

टेंशन की बात नहीं है"।

वो चुप रहा,

मैं भी चुप रहा।

थोड़ी देर बाद मैं उठकर बिस्तर की ओर चला गया।

तब वो पीछे से बोला—

"अभी 8 बजे तक शिफ्ट हो जाएँगे अपन।

मैंने बात कर ली है नए वाले वार्ड बॉय से"।

मैंने मुड़कर कहा—"ठीक है",

और वापस जाकर बिस्तर पर धीरे से लेट गया।

थोड़ी देर बाद प्रियांशी उठ गई।

वो gloves और mask लेकर आई और पहन लिए।

उसने तीनों तरफ़ वाला स्टैंड अभिनय के बिस्तर पर लगाया,

नीले रंग की एक शीट डालकर पॉट में क्रिया करवाई,

उसे फेंककर धोकर आई,

फिर उसी में हाथ धुलवाया।

वो पॉट वहीं पास में रखकर चली गई

और वार्ड बॉय वो तीनों साइड वाला स्टैंड लेकर चले गये।

मैं बस प्रियांशी को आज

दुनिया की उन सब औरतों से ऊपर मान रहा था—

कि शायद इसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।

हमेशा से प्रियांशी और मेरे बीच

हल्का-फुल्का सा मनमुटाव रहता था,

जो दिखता तो नहीं था
पर कभी-कभी उभर आता था।
पर आज प्रियांशी को इतनी कठिनाइयाँ उठाते देखकर
सच में उसके लिए इज़्ज़त सौ गुना बढ़ गई।
वो बात भले ही कभी-कभी अल्हड़पन से करती हो,
पर रिश्ते निभाने में वैसी नहीं है।
वरना शायद कोई और होता
तो वो ये सब नहीं करता—
और अंत में माँ के ज़िम्मे ही सब आता।
पहले एक नर्स आई। मुझे लगा शायद फिर ड्रिप लगाने आई है,
पर वो बगल वाली आंटी के पास कुछ पूछने लगी—
शायद उन्होंने बुलाया था।
थोड़ी देर बाद सुबह का नाश्ता
और उसकी दवा की खुराक,
गुलोकोश-बॉटल और ड्रिप लगाने का सामान
एक ट्रॉली पर वार्ड बॉय लेकर आया।
अभिनय उधर से मेरी तरफ़ देखकर खाना खाने लगा।
मैं भी उठकर खाने लगा।
प्रियांशी बाहर की तरफ़ गई—
शायद रूम के admission या transfer का काम चल रहा था।

मैंने पहला कौर मुँह में डाला—

idli और sambar का—

और अभिनय की तरफ़ देखा।

वो भी मेरी तरफ़ देखकर मुँह बना रहा था।

उसने एक मैसेज किया—

“खा ले साले, ऐसा ही फीका सांभर मिलेगा अस्पताल में”।

मैंने उसकी तरफ़ देखा

और मुँह बिचकाते हुए खाना खा लिया।

थोड़ी देर बाद एक नर्स आई और उसने उसी हाथ—मोड़कर बाँधे हुए दाएँ हाथ—में जहाँ हाथ के ऊपर ड्रिप वाली सुई लगी थी, उसी में बोतल लगाई और जाते समय बोली,

“Lie down for one hour, it will take time.”

मैंने कुछ नहीं कहा, सीधे होकर लेट गया।

तब तक देखा उधर अभिनय भी लेट गया था और प्रियांशी भी तब तक दो अस्पताल की फाइल पकड़े हुए आ गई।

मैंने मोबाइल उठा लिया।

लगभग अब 8 बज चुके थे।

मेरा फिर मन हुआ कि मम्मी को फोन करूँ, लेकिन हिम्मत ही नहीं हुई।

मैंने अपना आउटलुक खोला, टीम्स और मेल ड्राफ्ट करने लगा—

कि ऐक्सिडेंट हो गया, atleast one week छुट्टी लूँगा, उसके बाद ही next update दे पाऊँगा as doctor recommendation.

और भेज दिया।

व्हाट्सऐप खोला और अभिनय को टेक्स्ट किया—

“Mail भेज दिया HR को?”

और उधर देखने लगा—वो अभी भी प्रियांशी से ही कुछ बात कर रहा था।

मैंने इंस्टाग्राम खोल लिया और रील चलाने लगा।

अचानक से फोन वाइब्रेट होने लगा।

फोन पर प्रणय का नाम था।

मैं सुन्न हो गया—ये क्यों फोन कर रहा है?

अभिनय के बिस्तर की तरफ देखा, वो लोग अभी भी कुछ बातों में लगे थे।

मुझे लगा शायद अभिनय ने घर पर तो नहीं बताया होगा, पर प्रणय को बता दिया होगा।

मैंने कॉल उठा लिया—

“Hello”

“हाँ भैया क्या हुआ?” उसने एकदम हड़बड़ाते हुए कहा।

“क्या हुआ मतलब??”

“अरे बताओ तो!”

“अरे तू तो बोल—फोन तूने किया है न”।

“अरे वो आपके दोस्त… नेपाली भैया… उन्होंने सुबह-सुबह मैसेज किया था कि आप दोनों अस्पताल में हो।

मैं अभी कॉलेज जाने के लिए उठा तो देखा।

उन्हें रिप्लाई किया तो कोई जवाब नहीं आया।

तब आपको फोन लगाया।

कहाँ हो? आप ठीक हो?"

"हाँ... वो बाइक हल्की slip हो गई थी, तो थोड़ा हाथ–पैर में खरोंच आई है।

मम्मी–पापा या दीदी को मत बताना कुछ"।

"अरे हाँ ठीक है वो तो... पर कुछ serious..."

"नहीं, कुछ नहीं है। तू पढ़ाई पर ध्यान दे।

और अपना enjoy कर।

सेमेस्टर कब से है?" मैं बात करते हुए बोला।

"हाँ start हो गये हैं, आज दूसरा पेपर है।

कुछ ज़रूरत होगी तो बताना—मैं आ जाऊँगा"।

"नहीं, ऐसी कोई ज़रूरत नहीं है।

फिर अभिनय है—कुछ हुआ तो..."

"ठीक है... मुझे लगा कुछ ज़्यादा serious हो गया।

ठीक है, प्रणाम... take care भैया"।

"All the best, you too."

और फोन कट गया।

ज़िंदगी में अपने मसले अपने ही आप सँभालते-सँभालते इतने साल गुज़ार दिये

कि एक छोटी-सी बात भी घर तक नहीं पहुँचने दी—

और ये तो बड़ी बात थी।

हाथ है तो 10–15 दिन में ठीक हो ही जाएगा।

उसका क्या है—

तब तक दूसरा हाथ है,

और बाथरूम में अब jet रहता है

तो पुरानी दिक्कतों जैसा भी कोई सामना नहीं करना पड़ रहा था।

जो भी था—बस ये दर्द असहनीय था,

जो हिल जाने पर थोड़ी देर के लिए पूरे शरीर को मानो सुन्न कर देता था।

थोड़ी देर बाद प्रियांशी आई और बोली—

"फोन और वॉलेट के अलावा कुछ नहीं है न?"

"नहीं", मैं बिना नज़रें मिलाए इधर-उधर देखते हुए बोला।

"हाँ, दो वार्ड बॉय आ रहे हैं।

2nd floor में एक double sharing मिला है,

वहीं ले चल रहे हैं"।

"और डॉक्टर?" मैंने पूछा।

"वही नर्स बोली—आप शिफ्ट कर लो।

डॉक्टर वहाँ अभी round पे आएँगे,

तब वहीं बताएँगे”।

“Ok.”

“रिपोर्ट सारी यहीं इसी में है—

मेरे पास।

इसी फाइल में एक्स-रे भी है”।

“ठीक है”।

और वो फिर अभिनय के बिस्तर के पास चली गई।

तब तक वार्ड में रोते हुए एक आंटी घुसी—और एक लड़का।

उनके आगे-आगे एक अस्पताल का male staff।

वो बहुत तेज़-तेज़ रो रही थीं

और अभिनय के बिस्तर के पास आकर पहले उसके पैर की तरफ़ निहारती रहीं।

मुझे समझ आ गया—

उसकी मम्मी और भाई Shillong से पहली ही फ़्लाइट पकड़कर आ गये थे,

या रात में ही गुवाहाटी चले गये होंगे

और पहली फ़्लाइट लेकर आ पहुँचे होंगे।

आंटी रोती रहीं,

नेपाली में कुछ-कुछ बोलती भी रहीं—

जो स्पष्ट समझ नहीं आ रहा था।

उसका भाई पैर के पास ही खड़ा रहा—

पीछे बैग टाँगे हुए।

उसकी शक्ल भी लगभग अभिनय जैसी ही थी।

आंटी फिर उसे जाकर लिपट गईं

और पूरा कमरा उनके क्रंदन से दहल उठा।

इस दुनिया में माँ ही है जिसे इस बात की कोई फ़िक्र नहीं होती

कि ज़माना क्या कहेगा—

जब बात बेटे की तकलीफ़ की हो।

मैं ये सोच–सोचकर और परेशान हो रहा था कि

अभी तक तो मैं प्रियांशी को ही ठीक से face नहीं कर पा रहा था,

अब आंटी और उसके भाई से कैसे मुखातिब होऊँगा?

उनके सवालों का क्या जवाब दूँगा?

उनकी बेचैनियों का कोई हल मेरे पास नहीं था।

मैं क्या मुँह दिखाऊँगा उन्हें…

मैंने क्या कर दिया…

“Hey hi Bro, how's hand?”

मैंने दाईं तरफ़ देखा—

अभिनय का भाई खड़ा था।

“Hey, what's up? How was the journey?” मैंने जवाब दिया।

“ठीक था… जल्दी-जल्दी मम्मा को लेकर निकलना पड़ा रात को ही”।

“हम्म…”

“Hey listen…”

तभी वार्ड बॉय आ गये और नर्स भी आ गई।

नर्स ने मेरा ड्रिप निकाला—वो अब ख़त्म हो चुका था।

उधर अभिनय के बिस्तर से भी चादर समेटकर उसे स्ट्रेचर पर लिटाया जा रहा था।

मैंने अपने मोबाइल को फिर से बाएँ हाथ में ठीक से पकड़ा

और बिल्कुल सीधा लेट गया।

उन्होंने चादर समेटकर मुझे भी स्ट्रेचर पर रखा

और उस प्रक्रिया में जो कंधा हिला—

बाप रे… वो दर्द शब्दों में कैसे बताऊँ…

ऐसा लग रहा था जैसे गरम कील अंदर धँसा दी हो।

आगे-आगे अभिनय का स्ट्रेचर था,

उसके पीछे प्रियांशी चल रही थी—

कुछ फाइलें पकड़े,

एक अपना पुराना बैग और

एक आंटी का बैग लिए हुए।

उसके पीछे मेरा स्ट्रेचर ले जाया जा रहा था

और मेरे पीछे अभिनय का भाई चल रहा था।

जब तक मैं दर्द से स्थिर हुआ

हम कमरे में पहुँच चुके थे।

उन्होंने पहले अभिनय को बाएँ वाले बेड पर रखा

और मुझे दाएँ वाले पर।

जैसे ही उन्होंने मुझे उठाकर बेड पर रखा

वो असहनीय दर्द फिर उठा—

और इस बार तो मैं बिस्तर पर सीधा लेटने की कोशिश में ही काँप गया।

वार्ड बॉय चले गये।

आंटी, अभिनय का भाई और प्रियांशी वहीं सोफ़ा-कम-बेड जैसी चौड़ी सीट पर बैठ गये।

मेरी आंटी से नज़र मिली—

मैंने बायाँ हाथ छाती पर रखकर

माथा नीचे कर नमस्ते किया।

उन्होंने भी सिर हिलाया और नमस्ते बुदबुदाया।

उनकी आँखें बुझी हुई थीं,

आँखों में पानी भरा था—

और उन आँखों का सामना करना मेरे लिए बहुत मुश्किल था।

दोनों बेडों के बीच घुमावदार परदे लगाए गये

जिनसे हल्की privacy बन जाती थी।

बेड के सिरहाने टेबल,

ऑक्सीजन सिलिंडर की लाइन,

कुछ पाइपें,

ड्रिप लगाने वाला स्टैंड—सब लगा था।

बटन दबाने से बेड ऊपर–नीचे भी हो जाता।

कमरे में अंदर वॉशरूम भी था।

यहाँ नर्स घूमती नहीं थी—

इशारे पर नहीं आती थी।

एक रिमोट जैसा था—

दबाते ही बाहर आवाज़ होती

और थोड़ी देर में नर्स आती।

मैंने अभिनय की तरफ़ देखा—

वो अपनी मम्मी की तरफ़ ही देख रहा था।

आंटी उठकर उसके सिर के पास खड़ी हो गईं

और उसके सिर पर हाथ फेरती रहीं।

अभिनय का भाई और प्रियांशी सोफ़े पर बैठे थे।

सब अब डॉक्टर का इंतज़ार कर रहे थे।

थोड़ी देर बाद नर्स कमरे में आई

और उसके दो मिनट बाद दो डॉक्टर अंदर आए।

नर्स ने एक फाइल उन्हें पकड़ा दी।

तब तक प्रियांशी और अभिनय दोनों संभलकर बैठ गये थे

और प्रियांशी आगे बढ़कर बाकी फाइलें भी डॉक्टर को दे दीं।

वे लोग हमारे बिस्तरों के पास आए।

पहले उन्होंने अभिनय की चादर हटाकर उसका पैर देखा—

जो अभी भी थोड़ा सूजा हुआ था।

और फिर बोले—

"Who are you to the patient?"

तब प्रियांशी आगे बढ़कर बोली—

"She is his mother."

"And you are?"

"I am wife, and he is brother",

उसने अभिनय के भाई की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"Ok ok good.

Well, swelling has significantly reduced, right?"

प्रियांशी ने "yes" कहते हुए सिर हिलाया।

डॉक्टर ने एक्स-रे को हवा में उठाकर देखा और बोला—

"Now we need to operate.

Since the bone has a fracture—

the femur is broken,

so we will put a nail to fix this.

He should be fine.

Haan young man…"

उसने अभिनय की तरफ़ देखा।

अभिनय मुस्कुराकर बोला—“Yes sir.”

तब तक दूसरा डॉक्टर मेरे कंधे की तरफ आ चुका था

और नर्स मेरा कंधा उठाकर कपड़ा सरका रही थी।

दर्द ऐसा हो रहा था कि मन हुआ उसे धक्का दे दूँ।

डॉक्टर बोला—

“Someone will come and make you understand the process,

and next half we will operate. Ok?”

फिर वह मेरी तरफ़ आया

और कंधे पर नज़र मारी—

“So anyone has come from your family?”

“No sir… no one can reach urgently at this moment.”

वह एक्स-रे हवा में उठाकर देखने लगा।

“But someone should be here when we operate.

Don’t you know it’s mandatory?”

मैंने धीरे से कहा—

“I didn’t know I will get operated.”

“Well… call someone.”

तभी पीछे से प्रियांशी बोली—

"Sir, he is our family."

"Ohhh!

Well he should say this first!"

और डॉक्टर हँस पड़ा।

नर्स, दूसरा डॉक्टर और प्रियांशी सब थोड़ा हँस दिये।

मैंने भी झूठी हँसी हँस दी।

"Well, you should also be ready.

We will operate one by one in the next half."

"Ok", मैंने कहा

और दोनों डॉक्टर और नर्स कमरे से बाहर चले गये।

मेरे होश उड़ गये थे।

मुझे लगा था मेरे तो प्लास्टर-ब्लास्टर से काम चल जाएगा—

पर...

मैंने प्रियांशी से कहा—

"X-ray दिखाना"।

वह एक्स-रे लेकर आई।

मैंने दोनों ही एक्स-रे देखे—

मेरे कंधे के जोड़ में बड़ा सा gap,

और अभिनय की femur bone में crack साफ दिखाई दे रहा था।

मैंने मायूस होकर वह लिफ़ाफ़ा प्रियांशी को दे दिया।

आंटी अभिनय का सिर पकड़कर रो रही थीं।

प्रियांशी वहीं खड़ी रहीं।

अभिनय का भाई सोफ़े पर बैठा रहा।

तब तक एक आदमी अंदर आया—

हाथ में कुछ फाइलें लिए—

और प्रियांशी से बोला—

“Operation appointment is at 3 PM and 4:30 PM.”

“Okay”, प्रियांशी बोली।

“3 PM femur and 4:30 shoulder dislocation.

This is the OT form.

Fill it and get it signed by both the patients”,

उसने कुछ फॉर्म जैसे पेज प्रियांशी को दिये।

“Nurse will come and prepare the patients for OT.

Don’t eat anything now—whatever you had, that’s it.”

“Okay.”

“Also we will use these types of titanium nails—

for the shoulder,

and for that thigh/femur.

This is the only option we have—the best in the market.”

“Okay, but is there any other…”

"No ma'am, this is the best in the industry."

मैने उससे बीच में ही पूछा and sir blood?

"Yes, blood will be given from our hospital blood bank.

At the time of preparation nurse will take samples

and same blood group blood will be there in OT.

So don't worry—you don't have to arrange anything."

मैंने सिर ऊपर-नीचे हिला दिया।

"Any questions, ma'am?"

"And sir, charges?" उसने पूछा।

"You guys have insurance?"

"Yes, we have—office one", अभिनय तेजी से बोला।

मैं उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुरा दिया।

"Oh yeah, you guys are in IT right?

So no problem—it will be covered in insurance."

"Anything extra?" अभिनय ने पूछा।

"No sir—not the OT charges.

But whatever is covered or not—

it depends on the type of insurance your office has opted.

Generally room, medicines etc differ.

Discharge day you will get final bill."

“Okay”, अभिनय ने कहा।

और तब तक “ok then” बोलकर वह आदमी बाहर चला गया।

तभी अभिनय बोला—

“Private Hospital में sales job है

operation तो 5 min में pitch करो aur निकल जाओ!”

मैं कुछ नहीं बोला।

वे तीनों भी सोफ़े पर जाकर बैठ गये।

मोबाइल में एक मैसेज आया—

मैने देखा वो अभिनय का ही था।

“हाँ भेजा था।

उनका reply आया है—

‘Will wait for two months.

You can recover and join.

We will send you the revised joining date.

We will check time to time on your recovery.’

सालों ने insurance वहीं का use हो इसलिए किया है लगता है 😆”

मैंने लिखा—

“चल कोई नहीं, wait कर रहे हैं तो क्या दिक्कत।

यहाँ बोल देना कि recovery में दो महीने लगेंगे—

bed rest बोला है डॉक्टर ने”।

और भेज दिया।

"हाँ बे, अब तो कोई scene नहीं।

जिस दिन भी हो जॉइन कर सकता हूँ दो महीने के अंदर

और यहाँ एक दिन में जाकर laptop और ID submit कर सकता हूँ",

उसका reply आया।

और फिर उसका एक और मैसेज

तू ने भेजा मेल?

"मैंने एक हफ़्ते के लिए बोला है—

देखूँगा फिर manager को बताऊँगा"।

मैंने reply किया।

वह बोला—"Hmm thik hai, देखते हैं।

काम तो शायद कर लेगा left se bhi—

थोड़ा slow होगा बस"।

"अरे मैं right से भी कर लूँगा, laptop को

जो bed table है उसपर रखकर,

उसके नीचे लेटकर, छाती पर रखकर कर लूँगा"। मैंने बोला।

वो हँसा—

"हाहा, साले सब जुगाड़ सोच रखा है"।

"और क्या कर सकता हूँ बे",

मैने लिखा।

अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि अस्पताल का ही एक वार्ड बॉय

कल वाले दोनों कॉन्स्टेबल्स को कमरे में लाता हुआ

पीछे से दरवाज़ा बंद करके चला गया।

वो दोनों हमारे दोनों बेडों के बीच

पैरों की तरफ़ आकर खड़े हो गये।

आंटी, प्रियांशी और अभिनय का भाई भी

अभिनय के बेड के पास आकर खड़े हो गये।

प्रियांशी थोड़ा आगे बढ़ी और बोली—

"What's happened sir? Is there any issue?"

एक आदमी जो दाईं तरफ खड़ा था बोला—

"Yes, we need to brief on the development."

दूसरा बस फाइल पकड़े हमें देख रहा था।

"Did you think anything about FIR?"

किसी ने कुछ नहीं कहा।

उसने फिर कहा—

"Well, it's upto you to decide.

As per the initial complaints,

we have identified and caught three accused."

Seetharam Reddy: Hyderabad, working as a software engineer

Garvit Chaubey: Bihar, working as a software engineer

Randeep Yadav: Haryana, working as a software engineer

“These are three accused who have confessed

that they have hit your bike coming from opposite direction.

They planned to assault both of you

but since the driver—means you”,

(उसने मेरी तरफ़ देखा)

“thrown to the main road,

they have assaulted severely you”,

और फिर वह अभिनय से मुखातिब हुआ,

“and him.”

“They have been intoxicated with alcohol

and they have been following you guys for a while

to find the chance.”

प्रियांशी बीच में बोली—

“But why sir?”

“We are still investigating,

but further के लिए हमें FIR करनी पड़ेगी”।

“From their confession and initial investigation
we have found that you guys had a verbal
or even physical exchanges a few months back
at a tea shop
and they have been planning a research.”
उसने जेब से मोबाइल निकाला और बोला—
“The tea shop owner has also confirmed
that yes, the violence happened.
For further, will see the CCTV.”
जैसे ही उसने ये कहा,
मैंने अभिनय की तरफ़ देखा
और अभिनय ने मेरी तरफ़।
हम दोनों के चेहरों पर
पूरी तरह अचंभे के भाव थे।
फिर उसने मोबाइल पर फोटो दिखाई—
वो तीनों लड़के खड़े थे,
डरे-सहमे से,
उनके चेहरों पर दुःख और घबराहट के भाव थे।
वे सचमुच डरे हुए लग रहे थे।
और वो वही तीन लड़के थे

जिनसे उस दिन लड़ाई हुई थी।

मुझे याद भी नहीं कि उस दिन

वहाँ सिर्फ़ तीन ही लोग थे

या चार–पाँच।

पर जिसे मैं ज़्यादा पहचानता था

वही बीच में खड़ा था।

क्योंकि मैंने उसे एक ज़ोर का रसीद जो दिया था

Well for now this what we have done madam

वो फिर प्रियांशी से मुखातिब हुआ

Will leave them with a warning and will tell them to be in sync with Police station until not solved.

Once you get free from here think about it how you want to ahead.

प्रियांशी ने कुछ नहीं कहा। वो भी सिर हिलाती हुई, आँखों में आँसू लिए हामी भरती रही। जैसे मैंने ये देखा, शायद मैं इतना भौचक्का और शॉक में चला गया। मैंने Abhinay की ओर देखा वो तो और भी deep shock में चला गया था।

वहीं उसकी मम्मी खड़ी थीं

जिनके पीछे उसका भाई खड़ा

Police वाले की बातें मम्मी को नेपाली में translate करके बता रहा था।

Aunty तो जब से आई थीं मैंने देखा ही नहीं था उनके आँखों से आँसू एक पल के लिए भी हटे हों।

जब तक मैं इस सब बारे में सोच ही रहा थाकि वो लड़के उस छोटी सी बात का इतना बड़ा बदला कैसे ले सकते हैं

मेरी ही गलती थी मुझे हाथ ही नहीं उठाना चाहिए था…

तब तक Police वाले "Thank you" कहकर ward से निकलने ही वाले थे कि Abhinay के भाई ने कहा

Sir, one second… can I say something?

"Yes, please."

वो दोनों रुक गये।

Abhinay का भाई बढ़कर घूमकर हम उनके सामने पहुँच गया और बोला

Sir as you said there are almost no possibility to go with FIR,

but I want all three of them to compensate about the expenses.

उसके मुँह से ये सुनकर हम सब दंग होकर उसकी तरफ़ देख रहे थे।

Police वाले ने थोड़ी देर सोचा और फिर उसी वाले ने कहा—

Sir this is not our job to make money settlement,

if you do a FIR maybe court will help to get compensation

and maybe they will get jailed or attempt to murder charges.

But we need settlement outside sir.

“Yes, so what we can do.

we have all information address, phone number, even company details of them,

whenever you want you come to station

and take from the register

and probably make a deal.”

“Yes that could also be the way.” वो खुश होते हुए थोड़ा बोला।

“Ok then, take care.

Also update us once operations are done.”

Sure sir.

वो लोग ड़ाटी और प्रियांशी का अभिवादन करते हुए निकल गये।

मुझे लगा अभिनय शायद कुछ बोले मुझको पर वो चुपचाप ही पड़ा रहा, मेसेज तक भी नहीं किया।

इसी के बारे में सोचते-सोचते, अभिनय को एक “SORRY BE” का टेक्स्ट मैने कर दिया।

अध्याय 20

नर्स और वार्ड बॉयज़ ने आकर मुझे ऑपरेशन थिएटर वाले कपड़े पहनाए और अभिनय के बेड का पर्दा लगाकर दो वार्ड बॉयज़ और प्रियांशी ने मिलकर उसे पहनाया—एक लंबा गाउन जैसा जिसमें पीछे बंधियाँ बाँधने के लिए थीं।

मेरा कंधा झुकाकर–झुकाकर पूरा कपड़ा हाथ में घुसाया गया, इतना असहनीय दर्द था कि कुछ देर के लिए समझ ही नहीं आता था कि क्या करना है।

अभिनय की तरफ़ का भी पर्दा खुल गया था। वह बस सीधे लेटा रहा। दर्द का एहसास इतना था कि मुँह भी लाल पड़ गया था।

उन्होंने थोड़ा बॉटल ड्रिप चढ़ाई और ऑक्सीजन सिलिंडर का मास्क भी लगा दिया।

इस बीच नर्स ने सिग्नेचर करवा लिए और पूरा ऑपरेशन कैसे होगा वह अभिनय के भाई को और प्रियांशी को थोड़ी दूर ले जाकर समझाया।

थोड़ी देर बाद दो वार्ड बॉयज़ कमरे से बाहर जाकर स्ट्रेचर ले आए।

उन्होंने पहले अभिनय के बगल में स्ट्रेचर लगाया और चार वार्ड बॉयज़ ने चादर समेटकर उसे उठाया और प्रियांशी ने बीच से उसकी कमर पकड़ ली क्योंकि वहीं दबाव से नस खिंचती थी शायद और उसे और दर्द होता था।

जब उन्होंने उसे उठाकर रखा तो उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

एक वार्ड बॉय स्ट्रेचर गेट की तरफ़ बढ़ा दिया।

फिर दूसरा स्ट्रेचर मेरे बिस्तर के पास लाए।

दो लोगों ने पहले मेरे ऊपर के शरीर को चादर पकड़कर स्ट्रेचर पर रखा और फिर पैर की तरफ़ का हिस्सा।

बहुत पैना दर्द हुआ लेकिन सुबह से थोड़ा कम।

और दोनों स्ट्रेचर को गैलरी में निकाला जा रहा था, तभी मैंने पूछा—

"सर, क्या मुझे वहाँ वेट करना होगा?"

"यस सर, यू नीड टू वेट इन वेटिंग एरिया आउटसाइड ओटी"।

"ओके"। मैंने कहा।

ओटी में न फोन तो छोड़ो, एक हाथ में धागा पहनना भी अलाउ नहीं था।

मेरे हाथ का कलाइयों वाला धागा भी नर्स ने नीचे ही कटवा दिया था।

यह भारी समय जाने कैसे निकलेगा।

आगे अभिनय के स्ट्रेचर के साथ नर्स, एक वार्ड बॉय, प्रियांशी और आंटी चल रही थीं।

और मेरे स्ट्रेचर के साथ दो वार्ड बॉय और उनके पीछे अभिनय का भाई चल रहा था।

हमलोग लिफ्ट से होकर टॉप फ़्लोर पर पहुँचे जहाँ ऑपरेशन थिएटर था।

ऑपरेशन थिएटर के आगे एक जगह थी—हम दोनों के स्ट्रेचर रोक दिये गये और इंतज़ार होने लगा।

ओटी का दरवाज़ा खुलता दिखता था—कभी किसी के लिए मोटी रुई और पट्टियाँ, कभी किसी के घुटने की, कभी किसी के हाथ की ड्रेसिंग बाहर आती दिखती।

वहाँ ज़्यादा शोर नहीं था—नर्सें आ-जा रही थीं, असिस्टेंट डॉक्टर और कम्पाउंडर भी थे, जो कभी-कभी किसी मरीज के परिजन से बात करते थे।

वार्ड बॉय भी आते-जाते रहते थे।

और मरीजों के परिजन फाइलें और दवाइयाँ लेकर कुर्सियों पर बैठे, ओटी के दरवाज़े की तरफ़ उम्मीद से देख रहे थे।

उसके बगल में ही आईसीयू था—जहाँ ऑपरेशन पूरा होते ही मरीज को शिफ्ट कर देते और फिर परिजन को मिलने बुलाते।

वो तीनों—आंटी, अभिनय का भाई और प्रियांशी—हमारे स्ट्रेचर के पास ही खड़े थे।

आंटी बार-बार रोते हुए अभिनय का सिर सहला रही थीं।

और मेरी सोच तो बस फट रही थी—

क्या होगा...? कैसे होगा...?

किसी ने सच कहा है—

मंदिर–मस्जिद–गिरिजाघरों से ज़्यादा दुआएँ अस्पतालों में सुनी जाती हैं।

मैं इतनी भावनाओं से गुजर रहा था कि दिमाग सुन्न सा हो गया था—

क्या हो अगर मैं बाहर ही न आऊँ?

क्या हो अगर अभिनय को कुछ हो जाए?

मैंने तो घर में तक नहीं बताया...

तभी गेट खुला।

ओटी का गाउन और मास्क पहने एक नर्स बोली—

“पेशेंट नेम अभिनय भुशल”।

प्रियांशी बोली—

“यस मैम, यस”।

और फिर दो असिस्टेंट डॉक्टर, कम्पाउंडर और वार्ड बॉय अभिनय का स्ट्रेचर अंदर ले गये।

नर्स ने एक्स-रे भी प्रियांशी से माँगा और ले गई।

दरवाज़ा बंद हो गया।

मेरी अब और हालत खराब—

अब मेरी बारी होगी… क्या होगा मेरे साथ…

हाथ पसीने से भर गया।

स्ट्रेचर पर लेटे-लेटे माहौल और भी डरावना लगता था—

शांत, ठंडा, अजीब।

आंटी फिर तेज़ रोने लगीं।

प्रियांशी उन्हें चुप कराते हुए आगे की कुर्सियों तक ले गई।

अभिनय का भाई मेरे स्ट्रेचर के पास ही खड़ा रहा।

शायद वह मुझे हिम्मत देना चाहता था…

शायद उसे पता नहीं था कि मेरे मन में क्या-क्या तूफ़ान चल रहे थे—

मम्मी-पापा, मीला…

हर एक याद तेज़ी से घूम रही थी।

मैंने प्रियांशी की तरफ़ देखा।

वह थोड़ी देर बाद मेरी तरफ़ मुड़ी।

मैंने सिर हिलाकर उसे आने का इशारा किया।

वह मेरे पास आई, मेरे सिर पर हल्का हाथ फेरा और बोली—

“हिम्मत रख, सब ठीक होगा”।

मेरी आँखों के कोनों से आँसू निकलने को थे।

मैंने कहा—

“मुझे नहीं पता था उस दिन के रिएक्शन की वजह से इतना बड़ा कांड हो जाएगा…”

वह बोली—

“कभी-कभी सबक सीखना ज़रूरी भी होता है”।

“मीला से कोई बात?” मैंने पूछा।

उसने मेरी तरफ़ देखे बिना सिर हिलाया।

काश उसे पता होता कि उसके जाने के बाद यहाँ क्या हो गया है।

उसने कहा—

“मौका नहीं मिला… लेकिन मैंने उसकी दीदी को टेक्स्ट कर दिया है… पता चल ही जाएगा”।

मैंने धीरे से हामी भरी।

प्रियांशी फिर जाकर बैठ गई।

मैंने अभिनय के भाई से कहा—

“गो ब्रदर, बैठ जाओ”।

पर वह नहीं बैठा—

कभी मोबाइल देखता,

कभी शीशे से ओटी के अंदर झाँकने की कोशिश करता।

कुछ समय बाद—

दरवाज़ा फिर खुला।

नर्स बोली—

“पेशेंट भानु प्रताप मिश्र”

मैंने बहुत धीमी आवाज़ में “यस” कहा।

एक कम्पाउंडर/असिस्टेंट डॉक्टर मेरा स्ट्रेचर अंदर ले गया।

जैसे ही ओटी का दरवाज़ा खुला

मैंने पीछे देखा—

प्रियांशी, अभिनय का भाई, आंटी—

तीनों मेरी सीध में खड़े थे।

फिर दरवाज़ा धीरे-धीरे बंद हो गया—

और मैं अंदर चलता चला गया

जैसे स्टेशन पर ट्रेन छूटती है

और लोग पीछे रह जाते हैं।

अंदर एक कमरा था।

तीन–चार–पाँच लोग—

कुछ पुरुष, कुछ महिलाएँ,

सब ऑपरेशन वाले कपड़ों में।

बीच में स्टील की बड़ी टेबल थी

जिसपर गोल-गोल लाइटें लगी थीं।

सामने–पीछे छोटी टेबलें,

जिनपर तरह-तरह के सर्जिकल इक्विपमेंट रखे थे।

कमरे की ठंडक एसी की वजह से हड्डियों तक उतर रही थी।

उन्होंने सावधानी से मुझे चादर सहित स्ट्रेचर से उठाया

और ऑपरेशन टेबल पर लिटा दिया।

स्ट्रेचर वाले लोग कमरे से बाहर चले गये।

दाएँ हाथ की तरफ़ खड़े एक मध्यम उम्र के आदमी ने पूछा—

“हाउ यंग मैन, डू यू राइड बाइक टू फास्ट?”

और थोड़ा हँसे।

मैंने कहा—

“नो सर”।

फिर दो लोगों ने मेरी गर्दन उठाई

और साइड से एक इंजेक्शन लगाना शुरु किया।

जैसे ही गर्दन उठी—

ऐसा लगा मेरा कंधा कटकर गिर गया हो।

इतना तेज़ दर्द हुआ।

उन्होंने धीरे से गर्दन वापस रख दी।

मेरे मुँह के सामने एक कपड़ा जैसा पर्दा लगा दिया गया

ताकि मुझे आगे कुछ दिखाई न दे—

सिर्फ़ पीछे एक लेडी डॉक्टर की आहट आ रही थी।

धीरे-धीरे मुझे महसूस हुआ

कि मेरे दाएँ हाथ और कंधे में

कोई भी हरकत या संवेदना नहीं बची—

मैं चाहे जितना ज़ोर लगाऊँ

हाथ हिल ही नहीं रहा था।

मैं समझ गया—

यह लोकल एनेस्थीसिया था

जो अभी मुझे दिया गया था।

पीछे वाली लेडी ने मेरे नाक पर एक मास्क लगा दिया जो कि ऑक्सिजन का ही था।

फिर उधर डॉक्टरों ने अपना काम शायद शुरु किया, चार–पाँच लोग उधर थे।

टेबल दोनों तरफ़ पर लगी थीं, मुझे सिर्फ़ पीछे वाली लेडी डॉक्टर ही दिख रही थी

जो मुझसे बात करने की कोशिश कर रही थी।

उन्होंने कहा—“व्हेन इट्स यस ऑर नो, नॉड योर हेड वेरी स्लो”।

वह थोड़ा मेरे पास आई और बोली—

“यू वर्क इन आईटी?”

मैंने हाँ में सिर हिलाया।

"नाइस, माई सिस्टर इज़ ऑल्सो इन आईटी"।

उसने पूछा—

"हाउ इज़ द जॉब मार्केट नाउडेज़, इज़ इट गुड?"

मैंने ना में सिर हिलाया।

फिर उसने पूछा—

"व्हिच प्रोफ़ाइल? डेवलपर?"

मैंने फिर ना कहा।

"टेस्टिंग?"

मैंने फिर ना कहा।

मुझे लग ही रहा था कि वह "डेवऑप्स" कहने में सारी प्रोफाइल घूम-फिरकर लेगी,

तब शायद बोल पाएगी क्योंकि जो आईटी में नहीं होता उसे हर प्रोफाइल

याद नहीं रहती। और जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ।

बीच में डॉक्टर लोग मज़ाक–मस्ती में सारी प्रोफ़ाइल के नाम ले लिए,

पर "डेवऑप्स" नहीं बोल पाए।

इधर मेरा बदन उस पतले से कपड़े में ठंड से काँप रहा था,

पता नहीं ए.सी. की वजह से, एनेस्थीसिया की वजह से

या ऑक्सिजन की वजह से।

और कंधे से दायीं तरफ़ का हाथ तो मानो कट-सा गया हो,

एकदम सुन्न।

लग रहा था जैसे कोई लाचार विकलांग व्यक्ति कैसा महसूस करता होगा,

वैसा ही बोझ और लाचारी मेरे भीतर घर कर गई थी।

जब मैं जवाब देने की कोशिश करता,

बीच-बीच में काँपने लगता—तब वह लेडी डॉक्टर कहती—

"इट्स ओके, इट्स ओके... इट्स डन"।

और अपनी गर्म हथेली मेरे बाएँ हाथ पर रख देती,

तभी हल्की-सी गर्माहट का एहसास होता।

इस दौरान मैं भगवान, माता-पिता, मेहीला, जयश्री...

सबको याद करता रहा।

भावनाएँ अपने चरम पर थीं।

सच कहा था किसी ने—मौत के आस-पास कोई नास्तिक नहीं होता,

क्योंकि डर और अनिश्चितता का एहसास बहुत गहरा होता है।

थोड़ी देर बाद ऊपर लगी लाइट को दूसरी दिशा में मोड़ दिया गया।

डॉक्टर ने कहा—

"डोंट वरी, इट्स डन"।

मेरे चेहरे के सामने लगा परदा हटा दिया गया।

मेरे कंधे पर मोटी रूई की परत और उसके ऊपर भूरी रंग की टेप बंधी हुई थी,

ऐसा लग रहा था जैसे पूरा कंधा किसी मोटे खोल में बंद हो गया हो।

हाथ को मोड़कर पेट की तरफ़ टिकाकर बाँध दिया गया था,

और कहा गया—

"इसको नाइंटी डिग्री पर ही रखना है"।

मैंने हाँ में सिर हिलाया।

उन्होंने ऑक्सिजन निकाल दी और मुझे फिर से लिटा दिया।

मैंने ऊपर का कपड़ा थोड़ा खींचकर ढकने की कोशिश की

ताकि शरीर थोड़ा छिप जाए।

तभी दो वार्ड बॉय एक बेड लेकर अंदर आए।

डॉक्टर और वार्ड बॉय—सबने मिलकर

मुझे बहुत सावधानी से उठाकर बेड पर रखा।

साइड की रेलिंग पकड़कर बेड को धक्का देते हुए

मुझे साथ वाले आई.सी.यू. में ले जाया गया।

यह सामान्य प्रक्रिया थी—

ऑपरेशन के बाद आई.सी.यू. में रखा जाता है ऑब्ज़र्वेशन के लिए।

इस बार मेरा बेड भी अभिनय के बिल्कुल बगल में था।

आई.सी.यू. में लगभग सभी बेड भरे थे।

किसी के साथ रिश्तेदार बैठे थे,

कहीं कोई रो रहा था,

कहीं कोई दुआ कर रहा था।

बीच-बीच में मॉनिटर की पी-पी-पी आवाज़—

हर मरीज के जीवित होने का सबूत दे रही थी।

कहीं किसी के सिर पर ड्रेसिंग,

कहीं किसी की नाक पर मास्क,

कहीं किसी की टांगों पर भारी पट्टियाँ।

डॉक्टर आए, जाँचा और बोले—

"कोई भी दिक्कत हो तो यह बटन दबा देना"।

मैंने सिर हिलाया।

फिर देखा—

अभिनय अपने बेड में पड़ा था,

टाँगें सीधी कर रखी थीं,

उसका चेहरा दर्द से तना हुआ था।

मैंने इशारे से पूछा—

"दर्द?"

उसने सिर हिलाकर "हाँ" कहा।

कुछ देर बाद प्रियांसी दरवाज़े से अंदर आई।

वह तेजी से अभिनय के पास पहुँची और बोली—

"के भयो, केही समस्या छ?" (Nepali)

अभिनय ने दबी आवाज़ में कहा—

"हो, दुखिरहेको छ…"

वह डॉक्टर को बुलाने दौड़ी।

डॉक्टर ने आकर उसकी पट्टी जाँची,

कंबल हटाकर देखा

और कहा—

“ओके, विल गिव हिम पेनकिलर”।

फिर एक ड्रिप लगाई गई।

कुछ देर बाद उसका ध्यान मेरी तरफ़ गया।

वह मेरे बिस्तर के पास आई,

मेरे कंधे पर नज़र डाली,

मेरा मोबाइल मेरे सिरहाने रख दिया।

वह बोली—

“मैं यहीं हूँ हॉस्पिटल में… कुछ भी हो तो तुरंत मेसेज या फोन कर देना”।

मैंने सिर हिलाकर कहा—

“ठीक है…”

तभी एक वार्ड बॉय बोला—

“मैडम, टाइम ओवर… प्लीज़ आउटसाइड”।

प्रियांसी अभिनय की तरफ़ मुड़ी,

धीरे से “हुन्छा…ला” (ठीक है) दोनौ एक साथ बोली और बार-बार मुड़कर देखते हुए आई.सी.यू. के बाहर चली गई।

मैंने अभिनय से बात करने के लिए दो–तीन बार उसकी तरफ़ देखा, लेकिन वह अभी भी दर्द में कराह रहा था।

उसकी आवाज़ें इस बीप-बीप की आवाज़ों के बीच भी दब रही थीं।

मैंने सोचा—उसे डिस्टर्ब नहीं करता हूँ।

बीच-बीच में वह कभी–कभी खुुसुपसाते हुए बोल भी देता—

“ठाकुर… क्या हो गया भाई हमें…”

मैं उसकी तरफ़ देखता।

उसकी अशहनिय हर एक दर्द भरी ‘आह’ के साथ

मेरे जीवन की सारी गलतियाँ,

उसके साथ बिताए सारे पल,

मेरी आँखों के आगे घूम जाते।

कैसे हम दोनों ने गाड़ियों-बाइकों से घूमे,

कितना क्रिकेट-फ़ुटबॉल खेला,

लड़े–झगड़े,और कितने अच्छे दिन साथ बिताए…

सब एक-एक कर जैसे परदे पर चलने लगते।

हर एक पल मुझे मेरी गलती का और अधिक एहसास कराता जा रहा था।

मुझे लगने लगा था कि यहाँ से निकलने और ज़िंदगी नॉर्मल होने में जितना वक़्त लगेगा,मैं उतनी ही दूरी उससे हर पल महसूस करता जाऊँगा—

कि न बता पाने की, न बोल पाने की, न नज़र मिला पाने की।

मुझे जैसे अंतर्मुखी होने की कमज़ोरी हो,

वह मुझसे कहीं ज़्यादा मज़बूत था।

उसने जगह दी—लेकिन मेरे भीतर की ग्लानि

अस्पताल की हर एक बीप के साथ

और गहरी होती जा रही थी।

उसकी हर कराह मेरे लिए जैसे श्राप बन रही थी।

ऐसा करते-करते उसकी आवाज़ें धीमी हुईं,

दर्द थोड़ा कम हुआ,

और पेनकिलर के नशे में वह सो गया।

मेरे एनेस्थीसिया का असर अब धीरे-धीरे घटने लगा था।

हर एक मिनट अपने साथ तबाही लेकर आ रहा था।

ऐसा लगता था जैसे किसी ने

एक लोहे की सरिया को नुकीला करके

आग में तपाया हो,

फिर उसपर नमक और मिर्च का लेप लगाकर

उसे मेरे कंधे में हर पल घुसेड़ रहा हो।

मैं बेचैनी में तड़पने लगा—कभी दायाँ पैर हिलाता,

कभी बाँया, कभी सोचता करवट ले लूँ,

कभी सोचता सिर की पीछे की तकिया निकाल दूँ

और उसे कंधे पर दबा दूँ…

पर ज़रा भी हिलने से ऐसा दर्द उठता
कि जैसे वहीं ICU में ही मौत हो जाएगी।
मैं बहुत लंबी–लंबी साँसें भरने लगा—
हर साँस के आख़िर में
हल्की-सी आह निकल जाती।
कभी मैंने अपनी जीभ ज़ोर से काट ली,
कभी आँखें भींच लीं।
धीरे-धीरे दर्द इतना गहरा होता गया
कि लगा—
कंधा ही कट गया है।
मैं बस तड़पता रहा,
पर शरीर ज़्यादा नहीं हिला सकता था।
मुझे बार-बार मम्मी याद आ रही थीं।
सोचता— वह होतीं तो कम-से-कम
एक हाथ सिर पर रख देतीं।
पर मैं उनके लायक बेटा नहीं,
शायद यही मेरी सज़ा थी—
कि इतने बड़े दर्द अकेले झेलूँ,
और उन्हें बताकर और दुख न दूँ।
मेरी हिम्मत नहीं थी

कि ICU के डॉक्टर को बुलाऊँ।

बस पड़ा रहा।

शायद उनमें से एक मास्कधारी डॉक्टर

ने मेरी हलचल देख ली।

वह तेज़ी से आया—

"व्हॉट हैपेन्ड सर?"

मैंने टूटती हुई आवाज़ में कहा—

"स्स्स... सर... इट इज़ किलिंग मी...

आई वोन्ट सर्वाइव द नाइट सर...

प्लीज़ हेल्प मी... स्स्स..."

ये शब्द निकलना भी मुश्किल था।

वह बोला—

"डोंट वरी, विल गिव यू एन इंजेक्शन...

इट विल रिड्यूस द पेन"।

वह अपने डेस्क-काउंटर की तरफ़ चला गया।

मैं वहीं पड़ा कराहता रहा,

तड़पता रहा।

उस रात किसी ऊपरवाले को

हम दोनों पर दया नहीं आई।

किसी ने हम पर रहम नहीं किया।

वह फिर ड्रिप लेकर आया

और मेरे उसी हाथ में लगाया

जो छाती पर मोड़कर बाँधा था।

उसी बोतल में इंजेक्शन लगाया और बोला—

"ट्राय टेस्टिंग इन सम टाइम,

इट विल बी रिड्यूस्ड"।

मैंने सिर हिला दिया।

वह चला गया।

मैंने आँखें बंद कर लीं,

और बस अपने दर्द को झेलता रहा।

धीरे-धीरे नींद ने मुझे घेर लिया।

कितना भी दर्द क्यों न हो…

ज़िंदगी में असली सुख शायद नींद ही है।

इसका अर्थ कभी नहीं बदलेगा।

अध्याय 21

सुबह के लगभग 6:30 बज गये थे। हमें प्रियांशी ने जगाया। सामने आंटी और प्रियांशी खड़ी थीं।

“चलो, शिफ़्ट कर रहे हैं वो लोग”। प्रियांशी ने मुझसे कहा।

मैंने “ओह…” कहा। फिर कल वाले दो–चार वॉर्ड बॉयज़ और एक–दो दूसरे आए। पहले मेरे बिस्तर को कोने से निकाला, फिर मेरे पीछे अभिनय के बिस्तर को निकाला। वो सफ़ेद बिस्तर, हमारा सफ़ेद पड़ा शरीर और ऊपर से ढकी सफ़ेद चादर… हॉल में निकल गई। लिफ़्ट से होते हुए हम रूम वाले वार्ड में आ गये।

इस बार मैं पहले पहुँचा, तो मैंने अपना बिस्तर दायीं ओर लगवाया ताकि बायीं ओर से बाथरूम में प्रियांशी को फ़ेंकने–फ्लश करने में आसानी हो।

रूम में अभिनय का भाई हमारा इंतज़ार कर रहा था। वॉर्ड बॉयज़ ने खाली बिस्तर की जगह पर दोनों बेड लगा दिये। पीछे–पीछे नर्स आ गई।

“वेल, इट्स डन। डॉक्टर विल कम ऑन राउंड बाय टेन ओ’ क्लॉक। आफ्टर दैट इट विल बी कन्फ़र्म्ड व्हेधर कैन डिस्चार्ज टुडे ऑर नॉट। नाउ दीज़ आर द मेडिसिन यू कैन स्टार्ट फ़्राम टुडे ऐंड गेट इट फ़्रॉम डिस्पेंसरी”।

प्रिया ने हामी में सिर हिलाया। रिपोर्ट्स दोनों बिस्तरों के बीच वाली टेबल पर रख दी गई।

नर्स चली गई। आंटी घूमकर फिर से अभिनय के सिर के पास चली गईं और उस स्टूल पर बैठकर पहले की तरह दबे–दबे आँसू लिए उससे प्यार से बात करती रहीं, सिर सहलाती रहीं।

प्रियांशी घूमकर मेरी ओर आकर खड़ी हुई।

“ठीक है तू ना? अब नहीं हो रहा ज़्यादा दर्द?”

मैंने कहा, “हाँ हाँ, ठीक है”। और मैंने बटन दबाकर बीच से बेड थोड़ा ऊपर कर लिया। हाथ में दर्द थोड़ा बढ़ा।

“मैं कल रात में भी आई थी... तब डॉक्टर बोल रहा था तुझे बहुत दर्द हो रहा था”।

मैं बस मुस्कुरा दिया। कुछ नहीं बोला।

वो जाकर अभिनय के बेड के बगल में सोफ़े जैसे चेयर से टिफ़िन लाई, खोला और बोली—

“ले खिचड़ी खा ले। कल से पूरा दिन हो गया”।

मैंने इनकार में सिर हिलाया।

तब तक अभिनय का भाई उठा और फ़ाइल में से पर्चियाँ लेकर डिस्पेंसरी से दवाएँ ले आया।

मैंने उसकी तरफ़ देख कर पूछा—

“व्हॉट्स योर नेम?”

उसने दवा वाली पर्चियाँ निकालते हुए कहा—

“सविनय”।

“ओह्ह कूल, यूनिक नेम”। मैंने मुस्कुरा दिया। वो भी मुस्कुरा दिया।

मैंने उसे इशारे से अपने पास बुलाया। उसने सिर झुकाया।

मैंने कहा—

“सेंड मी द क्यूआर फ़्रॉम डिस्पेंसरी”,

और अपने सिर के पास पड़े फ़ोन की तरफ़ दिखाकर बोला—

“गिव मी दैट टाइप-सी चार्जर…”

उसने चार्जर लगाया, मेरी ओर बढ़ाया और बोला—

“डोंट वरी ब्रो…”

फिर कमरे से बाहर चला गया।

मैं एक हाथ से चार्जर लगाने की कोशिश कर रहा था मगर लग नहीं पा रहा था। प्रियांशी आई और उसने लगा दिया।

वो मेरे पास झुककर बहुत धीरे से बोली—

“तुझे एक चीज़ बतानी थी…”

पीछे आंटी और अभिनय अपनी बातों में लगे थे, उनकी ओर आवाज़ नहीं जा रही थी।

“क्या?” मैंने कराहते हुए कहा।

“देख… मुझे पता है ये सही टाइम नहीं है, पर मुझे नहीं पता सही टाइम कब होगा।

मुझे कल से पता चल गया था… लेकिन इतना सब हो रहा था—ऑपरेशन वगैरह… इसलिए नहीं कहा।

पर मैंने सोचा कि अब बोल दूँ…”

“क्या हुआ?” मैंने उसे बीच में रोककर पूछा।

बहुत मायूसी में उसने कहा—

“Meela की शादी हो रही है…”

मैं सुनकर सुन्न रह गया। मुँह से कुछ नहीं निकला।

हज़ारों सवाल एक साथ दिमाग में कूद पड़े।

“कैसे? इतनी जल्दी?

वो ठीक तो है?”

“हाँ। कल रात फ़ोन आया था—तुम दोनों के बारे में पूछने।

पहले जब inform करवाया था तब उसकी दीदी वगैरह से पता चला था कि शादी हो सकती है”।

“ओह… कब है?”

“डेट फ़िक्स नहीं है… पर उसका boyfriend जल्दी करा रहा है”।

“जबरदस्ती कर रही क्या?”

“नहीं। ऐसी जबरदस्ती नहीं चलती वहाँ।

बस ‘नाउ ऑर नेवर’ वाली स्थिति हो गई होगी।

इसलिए हो रहा है।

आदमी और उनकी insecurities…”

मैं चुप रहा। दीवार की तरफ़ देखता रहा।

ऐसा लगा—मेरी ज़िंदगी के दुख भगवान ने चुन–चुन कर लिखे हैं।

“देख, तू परेशान मत हो…

जो हुआ सो हुआ।

जब तू टाइम रहते नहीं बोल पाया… तो वो भी sure नहीं थी।

फिर उसे अचानक बुला लिया गया… वो क्या करती?”

मैं चुप रहा।

“तो अब क्या… यहाँ नहीं आएगी कभी?”

मैंने दीवार देखने की मुद्रा में कहा।

“आएगी। क्यों नहीं आएगी।

Chhote se homestay और दो tourist vehicle से इतना नहीं बनता।

काम–धंधा यहीं है”।

“अच्छा… कब तक आएगी?”

“दो–तीन दिन में सब हो जाएगा।

ख़रीददारी चल रही है।

Traditional जो customs हैं वहाँ, वो वहीं होंगे।

10–15 दिन बाद reception जैसा होगा।

उसके बाद आएगी यहाँ”।

“और job?”

“एक महीने की छुट्टी नहीं मिल रही उसे।

3–4 दिन की ले रही है शादी के लिए।

फिर emergency WFH ले रही है”।

“ओह… और उसका boyfriend?”

प्रियांशी झल्ला गई—

“क्या?”

“मतलब यहाँ क्या करेगा वो?”

“पता नहीं साला…

dropout है।

वहाँ taxi का काम सँभालता था।

यहाँ क्या करेगा पता नहीं”।

“Hmm… खैर कुछ तो करेगा”।

“करे या ना करे…

लक्षण उसके काम करने वाले नहीं लगते”।

इतना बोलकर वो सोफ़े पर बैठ गई।

मैं अब Meela के ख़यालों में डूब गया—

कैसे उसने Jayshree की जगह ले ली,

कैसे वो मेरे इतने क़रीब थी, मैं उसके।

कैसे हम एक–दूसरे के इतने सहज हो गये थे।

वो सब शिकायतें, वो सब तारीफ़ें,

उसकी पहली सैलरी से अपनी आमा के लिए lepcha jewellery बनवाना…

सब याद आने लगा।

Meela… सुंदर। निश्छल।

पर हमेशा “थी” ही रह गई।

होने का एहसास होते–होते… थी में बदल जाती है।

मेरे विचारों ने अब उफान मारना शुरु कर दिया था और इन दो–तीन दिनों में मैं सोचता ही रह गया, लेकिन मुझे लगता है—निर्णय लेने का समय अब आ गया था।

तभी मोबाइल वाइब्रेट किया।

मैंने मोबाइल को तकिये के पास कैसे भी पहुँचकर उठाया।

“सिगरेट पीने का मन कर रहा यार सुबह से ठाकुर…”

मैंने उसके बिस्तर की तरफ़ देखा, हाथ में तो मोबाइल था, पर वो अभी भी मम्मी से बात कर रहा था।

इतनी सिगरेट पीने वाला, लगभग चेन स्मोकिंग करने वाला व्यक्ति, तब से बिना सिगरेट पिए रह कैसे गया—पता नहीं।

“कैसे पिएगा… हॉस्पिटल है और आंटी भी हैं…”

और मैंने भेज दिया।

“इसीलिए तो तुझसे बोल रहा था… पता नहीं कब डिस्चार्ज होंगे…”

उसका फिर मैसेज आया।

मैंने बस इतना ही भेजा और मोबाइल बगल में रख दिया।

मेरा बिल्कुल भी मन नहीं था बात करने का।

थोड़ी देर बाद नर्स आई और डॉक्टर आए।

डॉक्टर ने बारी-बारी से दोनों की सर्जरी देखी और बोले—

“इट सीम्स फ़ाइन टू अस… यू कैन गेट डिस्चार्ज्ड।

बट यू हैव टू कम आफ्टर फिफ़्टीन डेज़ फ़ॉर स्टिचेस ऐंड एक्स-रे।

सो वी कैन बी श्योर इट्स गेटिंग जॉइन्ड ऐट करेक्ट प्लेस।

ऐंड आफ्टर दैट यू कैन स्टार्ट फ़िज़ियो।

स्लोली, वन्स वी रिमूव दिस कॉटन ऐंड बैंडेज…

यू हैव टू स्टार्ट मूविंग योर हैंड ऐंड लेग्स, एल्स लेटर इट वुड बी प्रॉब्लम”।

मैंने हाँ में सिर हिलाया।

अभिनय ने भी।

प्रियांशी, आंटी और सविनय—जो बिस्तर के सिरहाने के पास खड़े थे—सबने “हाँ, यस…” कहा।

डॉक्टर और नर्स वार्ड रूम से चले गये।

अध्याय 22

उस रात और ऐडमिट रहे और अगली सुबह प्रियांशी जो कपड़े लाई थी उसमें से मेरा भी एक जींस और टी-शर्ट थी, डिस्चार्ज के लिए हम नित्य क्रिया से निवृत्त हो गये। मैंने वहीं पर कराहते-कराहते कैसे भी टी-शर्ट और जींस पहन ली और अब हम तैयार थे। अभिनय क्योंकि अभी व्हील चेयर पर भी नहीं बैठ सकता था, इसलिए अभी उसे स्ट्रेचर में ही लिटाया गया। मैं आज अपने पैरों पर ही चलकर सारे कार्य कर रहा था पर जीवन भर दाएँ हाथ से काम करते कभी अहमियत नहीं महसूस हुई थी कि बाएँ की ज़रूरत पड़ेगी और दायाँ बस टंगा रह जाएगा। हर एक क़दम पर ऐसे लगता कि चिंगारी नीचे से निकलकर सीधे कंधे में पहुँच कर उसे जला रही हो और उससे निकली पीड़ा कभी 'आह' में निकलती और कभी बस अंदर रह जाती।

आंटी और सविनय को प्रियांशी ने घर भेज दिया था रात को और आज आने के लिए मना किया था। हम बिलिंग काउंटर के पास थे। मैं कुर्सी पर बैठा और अभिनय स्ट्रेचर पर था। फ़ाइनल बिलिंग हो गई थी। ज़्यादातर ऑफिस इन्श्योरेन्स और हमने पर्सनल वाला तो नहीं इस्तेमाल किया पर उसमें लगभग 80 हज़ार अभिनय को और 35 हज़ार मुझे अपनी जेब से भरने पड़े। हिसाब यूँ था कि उसका ऑपरेशन लगभग साढ़े पाँच लाख और मेरा लगभग 3 लाख पचहत्तर हज़ार में हुआ। इस देश में बीमार होना या दुर्घटना का हो जाना लगभग एक पूरे परिवार को भुखमरी की तरफ़ धकेलने में कोई कसर नहीं छोड़ता। ख़ैर, हमने कुछ ग़ुलामी और की—इन ऑफिस वालों का हरजाना का फ़ायदा आज दिखा।

थोड़ी देर बाद एम्बुलेंस तैयार थी। उसमें मैं, प्रियांशी और अभिनय को एक स्ट्रेचर में रखा गया। इस स्ट्रेचर में पहिए नहीं थे, सीधे उठाकर ले जाया जा सकता था। एक ड्राइवर और उसका सहयोगी आगे बैठे और गाड़ी चल दी।

ऐसा लग रहा था कोई वनवास या कोई जेल काट कर हम इतना कुछ दर्द सहते घर को जाने कितने दिन बाद जा रहे हों क्योंकि उस दिन जब घर छोड़ा था तब मैं इस बात से विचलित था कि मीला से बात नहीं हो पा रही थी और आज जब जा रहा हूँ तब मेरे लिए सबकुछ बदल चुका था। मीला की शादी हो रही थी, अभिनय और प्रियांशी को जीवन भर का सदमा... फिर वही ख़याल आने लगा कि अब तो बिल्कुल इस शहर में कुछ बचा ही नहीं है मेरे लिए। अंदर और बाहर के घाव लेकर कैसे रहूँगा यहाँ।

मैं उतरना चाहता था पहले ही मोड़ पर ताकि मैं वहीं से अपने रूम चला जाऊँ, पर मैंने उन दोनों की सूरत देखी—दोनों बस शांति से एक-दूसरे की तरफ़ देख कर दुखी थे। कभी-कभी जब आपके घर का एक मज़बूत पुरुष लाचार हो जाता है तो एक स्त्री—जो हमेशा शायद पुरुष से ज़्यादा मज़बूत थी—वो उससे दो कदम आगे निकलकर यह साबित करती है कि उसकी क़ाबिलियत कितनी है। बस दिखाने के अवसर नहीं होते। वही निराशा और मजबूरी दोनों ही प्रियांशी के चेहरे पर साफ़ झलक रहे थे।

एम्बुलेंस अपार्टमेंट के नीचे रुकी। प्रियांशी ने सविनय को कॉल किया—वो नीचे आ गया। एम्बुलेंस वाले दोनों व्यक्तियों ने अभिनय का स्ट्रेचर निकाला और सावधानी से ऊपर ले जाने लगे।

सविनय ने बीच से पकड़ने की कोशिश की लेकिन उन लोगों ने 'नो' कहकर मना कर दिया। वो रुक गया।

स्ट्रेचर सीढ़ियों से ले गये, उनके पीछे-पीछे प्रियांशी भी जाने लगी। अभिनय उसमें बस ऊपर की तरफ़ देखता रहा—या तो शॉक में था या भगवान का धन्यवाद कर रहा था कि घर वापस तो आ गया।

मैं वहीं खड़ा रहा। सविनय मुझसे थोड़ी आगे—ऊपर जाने को सीढ़ियाँ चढ़ ही रहा था कि बोला—

"Bro, come!"

"आह… नो, I have to go to my room."

"Come and have lunch, atleast."

"नो… just need a help", मैंने संकोच करते हुए बोला।

"I need my laptop bag जहाँ लैपटॉप और मेरे रूम की चाबी होगी और मेडिसिन—और वो मेडिकल फ़ाइल, जो आपकी भाउजु ने ली थी—वो चाहिए so I can go."

"So come na and take it…"

"See, I feel a lil awkward to go now… now it's private family moment यहाँ… just help me with these things, it's a request… प्लीज़"।

वो आगे कुछ नहीं बोला। ऊपर गया… और फिर मेरे मोबाइल ने बाएँ जेब में वाइब्रेट किया।

मैंने देखा—अभिनय का कॉल था।

मैंने नहीं उठाया।

मैं उठा ही नहीं सकता था… क्या जवाब देता?

थोड़ी देर बाद सविनय आया—बैग कंधे में टांगे, हाथ में रिपोर्ट की फ़ाइल और एक पन्नी लिए।

मैंने 'थैंक यू' कहा और बैग लेने लगा तो उसने कहा—

"Let me drop you bro. How will you handle all these?"

"नो… डोंट वरी, I have to do all these alone."

उसने बैग की चेन खोलकर फ़ाइल उसमें रख दी और पन्नी भी।

मैंने पूछा—

"व्हाट्स इन दैट?"

"It is roti… sel roti. Aama made it since Daju was returning today. So Bhaujo packed and sent it."

मैं कुछ नहीं बोल पाया।

मैंने कहा—

"स्टॉप… प्लीज़ give me one."

उसने पन्नी से एक sel roti मुझे दे दी और बाकी बैग में रख दिये।

मैंने बैग बाएँ कंधे पर डाला, झुककर पूछा—

"Key is there?"

"Yes, in the small chain…"

मैंने कहा 'ओके' और sel roti मुँह में रखकर चबाया ही था कि मीला के विचारों ने चारों ओर से मुझे घेर लिया। उसकी तस्वीर आँखों के सामने आ गई।

"ओके बाय Bro, take care, let us know if need any help."

मैं मुस्कुराया और चलने ही लगा कि ठिठक गया और मुड़कर बोला—

“One second…”

“Yes?”

“Where is his bike? I knew the exact moment when he bought it… such smily face… such hardwork he did to buy that…”

मैं अतीत की याद में जाकर मुस्कुराया।

सविनय बोला—

“Actually yesterday I went to police station before coming…”

“What…?”

“हाँ, I went… I took the bike from there and gave it to a garage. He will fix in few days. And I also took the number of culprits.”

“Good that you have given bike for service… but I am not sure asking them for anything is a good idea.

Well… give me your number, whatever is the cost of bike service—let me know, I will send.”

“No no bro… it's okay… it was an accident doesn't mean…”

और वो मेरा चेहरा देखकर चुप हो गया। उसने अपना नंबर दे दिया। मैंने सेव करके उसे मिस कॉल मारा और बोला—

“Take good care of your brother, mom and भाउजु… I know exactly what they must be going through.”

“Yes, I will…”

“This is your time to stand with your family…” मैंने मुस्कुराकर उसके कंधे पर हाथ रख दिया।

“Bro can I ask you something?”

“Yes?”

“Why didn’t you ask your family to come in such situation?”

मैं बस उसे देखता रह गया। मुझे इस सवाल की उम्मीद नहीं थी।

“Well… you know everyone is busy…” मैंने कहा।

“And your girlfriend Meela… why didn’t she come?”

“Hey no… she is not my girlfriend… she just a friend… that too because of your Daju and Bhaujo…”

“Yeah I know… I just thought if someone would be here in situation… so could be better for you…”

“It's okay, I can manage… you take care.”

ये बोलकर मैं मुड़ गया और वहाँ से निकल गया। मैं उसके और सवालों का जवाब नहीं देना चाहता था।

चलते-चलते हाथ टांगे हुए मैं अपने कमरे के सामने पहुँचा। बाएँ हाथ से चाबी लगाने में इतनी तकलीफ़ हो रही थी… जाने आगे का समय कैसे कटेगा। कोशिश करते हुए जैसे-तैसे दरवाज़ा खोला और अंदर घुसा। बंद

रहने की वजह से मिट्टी और सीलन की महक तो आ रही थी, पर रहने लायक था।

मैंने बैग रखा और जाकर सीधे बिस्तर पर लेट गया—ध्यान रखते हुए कि हाथ में दर्द न हो। एक बार जगह बन जाएगी तो धीरे-धीरे आदत हो जाएगी।

तभी घंटी बजी।

मैंने थोड़ा चिढ़ते हुए कराहते-धीरे से बिस्तर से उठा और सीधा जाकर दरवाज़ा खोला। मैंने magic eye से नहीं देखा कि कौन आया था।

सामने चेत्ता खड़े थे।

चेत्ता को सामने दहलीज़ पर खड़ा देख मैं कुछ पल के लिए दंग रह गया—

चेत्ता यहाँ क्यों आए हैं?

कहीं कुछ पैसा तो नहीं रह गया?

क्योंकि पानी का can भी उनकी दुकान का ही एक लड़का माँगने पर दे जाता था।

"चेत्ता… आप?"

"हाँ बैया, वो… मैं देखने वास्टे को आया"।

चेत्ता मुस्कुराते हुए बोले और मेरे हाथ की तरफ़ नज़र डाली।

मैं बोला—"अंदर आओ"।

चेत्ता के हाथ में polything bag था जिसमें कुछ केले, दो bread packet, शायद कुछ दूध का पैकेट और भी एक-दो चीज़ें थीं।

मेरे हॉल में दो कुर्सियाँ लगी थीं, सामने LED TV था जिसे मैं चलाता ही बहुत कम था। मैंने वहीं चेत्ता को बैठाया और खुद कुर्सी थोड़ा सरकाकर बगल में बैठ गया।

"कैसे लगा, बैया? वो पुलिस जब शॉप में पूछने को आया तब पता चला मेरे को।"

"ओह… अच्छा। वो उस दिन जो आपकी दुकान में fight हुआ ना…" मैं हँसते हुए बोला।

"आँ… उसी लीये। बैया वो लड़का लोग तो अभी भी कभी-कभी शॉप को आता है।"

"ओह, अच्छा… छोड़ो जाने दो। जो हो गया सो हो गया।"

"नै बैया… आपको FIR डालना है न। ऐसा गूंडा लोग जैसा करेगा तो ऐसा कौन रखेगा अपने घर को?"

"हाँ, मैंने बोला… पर अब कौन पुलिस-कोर्ट जाएगा इसके लिए। अभी तो नहीं किया कुछ।"

"बट आप अच्छा दिया उन लोगो को। लोगो को उस दिन उल्टा-सीधा बोल रहा था वो लड़का… उधर आका ladies friend भी था तब भी…"

"हाँ चेत्ता… अभी क्या कर लेंगे हम। लोग… कुछ लोगो को कभी अकल नहीं आती है।"

"वो… उनको भी बहुत लगा क्या?"

"किसको?" मैंने उनकी तरफ देखते हुए पूछा।

"वो… उनको… आपका friend को? वो Nepali sir को भी पैर में लगा ना?

“हाँ… उसका ये right leg का operation हुआ।”

मैंने अपनी जाघ के बाहर की तरफ़ बाएं हाथ से इशारा करते हुए कहा।

“ओह… छोटा सा बात को इतना बड़ा कर दिया ये लोग बैया। मैं तो बोलेगा आप डालो उनका उपर में FIR!”

“हा-हा… नहीं छोड़ो। अभी वैसे ही इतना problem है।”

“हाँ, है तो… पर ठीक हो जाएगा बैया। मेरे एक दोस्तू-लोंग relative… उसका ये knee होता न… उसका ऊपर टूटा।” उन्होंने घुटने की कतोरी पर इशारा किया।

“पर one year लगा… ठीक हो गया। अब तो running-jumping सब कर लेता है। सब ठीक हो जाएगा, normal हो जाएगा”।

“हाँजी… hope तो है।”

“बैया… अभी तो आप शॉप नहीं आता है… तो ये कुछ bread, banana, sweet-lime और ये थोड़ा banana-cake रखो। खाओ थोड़ा अच्छा से। चोट लगा ना… तो खाना ठीक से!”

वो हँसते हुए बोले।

“अरे नहीं नहीं चेत्ता… आप क्यों लेके आए ये?” मैंने मना करते हुए कहा।

वो कुर्सी से उठे, सामान वहीं छोटे से टेबल पर रख दिया और बोले—

“अरे रखो न… इतना साल आप लोग से दंधा किया… इतना तो बनता है न। अभी मैं जाता है शॉप पर… एक ही लड़का है न… तो problem होता”।

मैं भी उठ गया।

चेत्ता निकलते-निकलते पूछने लगे—“किसी को घर से नहीं बुलाया आप?”

“नहीं चेत्ता… ऐसा कोई आ नहीं पाएगा।”

“हाँ… दूर है न। हाँ… अभी थोड़ा टाइम है… दीवाली को जल्दी से ठीक होकर जाना घर-को… मां को अच्छा लगेगा।”

मैं कुछ नहीं बोल पाया।

“अच्छा ठीक है, बैया… कुछ चाहिए तो फोन करो। जब तक आप नहीं आएगा शॉप पर… मैं दे जाएगा यहाँ।”

और वो अपनी सैंडल पहनकर चलने लगे।

“ओके बैया… हाँ… bye bye… आओ शॉप… और कुछ चाहिए तो बोलो मेरे को!”

मैंने ‘हाँ’ कहा और वो हाथ हिलाते हुए सीढ़ियाँ उतर गये।

मैं दो मिनट वहीं दरवाज़े पर खड़ा रहा।

मुझे ये तक नहीं पता था कि चेत्ता को ये सब पता होगा और वो घर तक आ जाएँगे। ये north, south, northeast—सबकी जो दीवारें होती हैं… आज अकेले चेत्ता ने तोड़ दीं—एक North-Indian और एक North-East Indian की खबर रखते हुए, अपना भाव प्रकट करते हुए।

ऐसे कितने कम अनुभव जीवन में आते हैं जब caste, religion, community, language—ये सब कितना छोटा महसूस होने लगता है… कितनी छोटी बातें लगने लगती हैं।

तभी मेरा फोन वाइब्रेट हुआ। मैंने जेब से फोन निकालकर ऊपर से नोटिफिकेशन देखा—अभिनय का मैसेज था।

“Pahuch gaya room?thodi der pahle tere jaate saath hi Chetta 5 min ke liye room par aaye the.

kaafi sara saman aur mughko chupa ke ek Kings ka packet pakda gaye hain…”

और एक wink वाला इमोजी था।

मैंने रिप्लाई किया—

“yaha bhi haal-चाल लेने आए थे…”

और मैसेज भेज दिया।

अध्याय 23

एक हफ्ते हो चुके थे। मैंने अपने बाएँ हाथ से दिनचर्या शुरु कर ली। निपटते वक्त सुबह ही क्योंकि दाहिनी तरफ था, तो दिक्कत का सामना करना पड़ता था। उसी तरह ब्रश करना भी। खाना तो हो जाता था, लेकिन लगभग सभी काम करने की गति धीमी हो चुकी थी। आज से ऑफिस का काम भी शुरु करना जा रहा था। बाएँ हाथ से बैठकर काम हो जा रहा था, लेकिन काम की रफ़्तार काफ़ी धीमी हो गई थी। मैंने इस बीच अभ्यास भी करता रहा, ताकि काम वाले दिन से कोई दिक्कत न हो। पर दिक्कत तो थी ही।

मैंने फ़िलहाल दो महीने के लिए रिपोर्ट्स और सारे दस्तावेज़ मेल करके मैनेजर और एचआर से यह अनुमति ले ली थी कि ऐसी हालत में हाइब्रिड में भी ऑफिस नहीं आ सकता, घर से ही काम कर सकता हूँ। फ़िलहाल बिस्तर पर लगभग आधा लेटकर, लैपटॉप बेड टेबल पर रखकर, दाहिने हाथ के नीचे दो तकिये लगाकर उसे ऐसे व्यवस्थित कर तो ले पा रहा था कि दोनों हाथों से काम कर सकूँ। दाहिने हाथ से टाइप करने की कोशिश ज़्यादा नहीं कर रहा था। लैपटॉप पैड की जगह एक्सटर्नल माउस इस्तेमाल करना ठीक था, उससे इतनी तकलीफ़ महसूस नहीं हो रही थी।

बीते दिनों में माँ से भी बात दो–तीन बार की, पर बता नहीं पाया। अभिनय के भी मैसेज आए। हाँ-ना में ही जवाब दिये और ज़्यादा बात नहीं की। मैं उससे क्या बात करूँ, मुझे खुद नहीं पता। मैं वैसे ही इस दुर्घटना की वजह से इतना शर्मिंदा हूँ कि भले मुझे कुछ हो जाता, पर उसके हँसते-खेलते परिवार पर इतनी बड़ी मुसीबत डाल दी। और फिर मीला। उसके घर में जाने पर मुझे मीला की याद आती। मैं उसे कैसे बताऊँ कि इस वक़्त मैं सिर्फ़

बाहरी नहीं, अंदरूनी चोट से भी गुज़र रहा हूँ। मैं इज़हार करते-करते रह गया और उसकी शादी होने को है—यह हम सबको क्या कहकर बताएँ। सब वहाँ सोचेंगे कि उनके घर पर इतनी बड़ी मुसीबत आ गिरी और इसे अपनी पड़ी है, इसलिए उसके क्रोध-भवन में चला गया फिर। देवदास बन गया फिर। ऐसे सवालों का जवाब मेरे पास कुछ नहीं है। मैं एक स्माइली से ज़्यादा उसे कुछ नहीं भेज सकता।

इसलिए मैंने फ़ैसला किया था कि मैं अब यहाँ से निकल ही जाऊँगा। इसलिए मैंने नौकरी.कॉम, लिंक्ड्इन और कुछ और छोटे-छोटे जॉब प्लेटफ़ॉर्म्स पर नया रिज़्यूमे बनाकर डाल दिया है। एक-दो पोर्टल के लिए छोटी-छोटी पायथन सेलेनियम स्क्रिप्ट्स तैयार करके लोकल कंप्यूटर पर सुबह उठकर चला देता हूँ। वे अपने आप थोड़े समय बाद रिज़्यूमे अपलोड करती रहती हैं और समय-समय पर नवीनतम 5–10 नौकरियों के लिए आवेदन करती रहती हैं। अब जब हाथ कम चल रहा है, तो दिमाग़ का इस्तेमाल करना पड़ रहा है।

ख़ैर, एक इंटरव्यू भी हुआ पिछले हफ्ते, पर उसका कुछ आगे नहीं हुआ। उम्मीद है इन दो महीनों के अंदर-अंदर कोई नौकरी नोएडा या गुरुग्राम में ले लूँगा, या वर्क-फ्रॉम-होम वाली ढूँढकर निकल जाऊँगा। उसकी शुरुआत तो मैंने कर ही दी है।

मेरी लगभग एक महीने से ज़्यादा की वार्षिक सवेतन छुट्टियाँ हैं, जिन्हें मैं एनकैश कराने की जगह नोटिस पीरियड कम करवाने में इस्तेमाल करूँगा। और इसीलिए परसों संजीव से भी मैसेज पर बात हुई है। उसका एक दोस्त है नोयडा में, कुमाऊँ साइड का। फ़िलहाल उसने उससे पूछा है कि उसके एक दूर के चाचा का एक एनजीओ जहाँ खुद से वॉलंटियर भी कुछ उनका छोटा-मोटा काम देख सकते हो, बाकी थोड़ा कम सैलरी पर वहाँ का कुछ काम भी

कर सकते हैं। देखो, कब तक सबकुछ पूछकर फ़ाइनल करेगा... क्योंकि मेरा उससे पूछना इस बार आख़िरी था।

मैं ये सारी चीज़ें अभिनय को नहीं बताई थीं। मुझे पता है, उसे अच्छा तो बिल्कुल लगेगा ही नहीं, बल्कि सुनाएगा अलग। यही सब सोचते हुए मैंने ऑफिस का काम बिस्तर पर शुरु कर दिया।

दोपहर में आंटी की दी हुई सेल रोटी थोड़ी बड़ी थी, मैं उसे कटोरी में निकालकर खाते रहा। औपचारिक ख़ैर-ख़बर के बाद ऑफिस वाले भूल जाते हैं कि कल कोई बीमार था या किसी को चोट लगी थी।

काम करते-समझते, छूटा हुआ बताते-करते शाम होने को थी कि घंटी बजी।

पता नहीं इस वक्त दरवाज़े पर कौन था। मैं बिस्तर से उठा और बिना मैजिक आई इस्तेमाल किये दरवाज़ा खोल दिया।

सामने सविनय खड़ा था।

"Hi Bro", उसने संकोच करते हुए कहा।

"Hey hi, क्या हुआ? कोई बात हुई क्या?"

"No, nothing. Daju has sent me", फीकी-सी हँसी चेहरे पर फेरते हुए उसने कहा।

मैंने एक बगल हटकर उसे अंदर आने का इशारा किया।

वो अंदर आकर उन पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठ गया।

उसने जेब से हाथ निकाला और एक काग़ज़ के पैकेट जैसा कुछ मेरी ओर बढ़ाया।

"Nothing. Brother said you used to like churpi a lot in college when he brings from home. So take it."

चुरपी एक चीज़ टाइप की घटिली-सी चीज़ होती है, जो खाने में पूरे मुँह को दूध-मक्खन जैसा स्वाद देती है।

मैं मना नहीं कर सका और वो कटी हुई चुरपियाँ ले लीं।

थोड़ी देर कमरे में शांति रही, फिर वो बोला, "Cool room, haan bro. It must have been peaceful for you."

मैंने उसकी तरफ देखा, पर कुछ बोला नहीं।

"I am planning to stay here and do something, maybe a college or a skill course and then maybe job."

"And mom?" मैंने अचानक ये सुनकर उससे पूछा।

"Yeah, mom has to go, since home is there in Shillong and no one is there. I will drop her to airport. She can directly land to Shillong, should not be an issue."

"And security check?"

"Yes, she has small bag which can go in cabin. She has travelled before when dad—"

और बोलते-बोलते वो चुप हो गया।

"हाँ, I know. कोई नहीं। Tell me why you actually came here."

"Daju sent me to check on you", वो अपने मोबाइल की तरफ देखते हुए बोला।

"I knew it. Well, see Savinay, your brother is the only closest person I have in my life. But you know, now we are in thinking stage. We have to move on in individual life. You are what, 20–21. You won't understand now, but you will eventually when you will reach 30."

उसने कुछ नहीं कहा। बस मेरी तरफ कम लगाए सुनता रहा।

"It should be confidential between us, don't tell your brother. I am trying to give interviews to get something at North side so I can move on."

उसने बड़ी-बड़ी आँखों से मेरी तरफ देखा।

"Don't get surprised. See, I have nothing left here. And I have given him almost a year pain also. And you know Meela is also getting married and she will come back after that. So I have hung in the same group, and for me it's not easy to be there, doesn't feel a thing for Meela."

"Yes Bro, I understand, but this seems not correct."

"Once he has gotten married, our friendship will never remain same. But this doesn't mean your bhabhi is wrong. No, it's the next phase of life where they will choose a family. Their social gathering, discussion centre will be different than mine."

"So I know it's selfish. Your brother has done too many favours on me, I don't know what I have done for him. He

will remain my brother for life. But I think once this phase will be over, in next happy life, I should not be a part."

"Brother, but don't you think running is a solution?"

"I don't know. But if I don't do, I will never know. For how long I can keep coming to this room to grieve, to sorrow, behind this closed door."

"It's just a matter of a month or two, and that's it."

"Well, you know what's better for you", और वो खड़ा हो गया।

"So you wanna come for tea?"

"In this condition?" मैंने उसे दिखाते हुए कहा।

"That's okay bro. If you got operation, doesn't mean you should get healed inside the room", और वो मुस्कुराया।

मैं भी मुस्कुरा दिया। जाकर लैपटॉप पर कुछ रिप्लाइज़ करके लैपटॉप बंद कर दिया। पहले पूरा शरीर दाईं ओर झुकाते हुए और फिर बाएँ से दूसरी टी-शर्ट पहनी।

रूम बंद किया, नीचे उतर गये। थोड़ी देर बाद हम उसी जगह थे—चेट्टा की दुकान। और उसी जगह पर, जीवन के घाव लादे-लादे, हम घूम रहे थे।

सविनय ने भी किंग्स ही ली, बिल्कुल अपने भाई की तरह और धुआँ हवा में उड़ा दिया।

हम दोनों स्टूल पर बैठ गये। चेट्टा ने हाल-ख़बर की और फिर अपने काम में लग गये। सविनय भी हाव-भाव और बात करने के लहजे में लगभग अपने भाई की तरह ही था।

मैं उसे अभी देख ही रहा था कि उसने कहा—

"Bro, please don't tell Daju about this",

उसने अपनी सिगरेट का इशारा दिखाते हुए कहा।

"अरे बिल्कुल भी नहीं। I won't, don't worry",

और अपनी चाय की सुड़क ली।

"Bro, you know right…"

वो अभी बोल ही रहा था कि मैंने उसे बीच में काट दिया।

"You can call me bhaiya. I know you think it might be seen as racist, but don't worry, it's a respectful word", और मैंने खीसें निपोरीं।

"Yeah, I was hesitant to use because it may be seen as racist. Anyway, bhaiya, I was saying—do you know she is getting married day after tomorrow?"

यह सुनते ही मैं फिर सन्नाटे में चला गया। मेरे सामने मीला का चेहरा, उसकी चाल-ढाल, उसके साथ रहना—सब आँखों के सामने से गुजर गया। ऐसा लग रहा था मानो चाय का गिलास छूटने को हो।

"Bhaiya, did you know?"

और तब मैं होश में वापस आया। मैंने पूरी कोशिश की कि चेहरे पर स्पष्ट भाव न आने दूँ।

“नहीं, मुझे पता तो था कि हाल-फ़िलहाल होने वाली है, पर परसों है—यह नहीं पता था”, और मैंने बाएँ हाथ से पकड़ी चाय की एक और सुड़क लगाई।

“How do you know?”

मैंने फिर सवाल कर लिया।

“भाभी किचन में मम्मी को बता रही थीं”, उसने कहा।

“Ohh, ok. Well, whatever she has to do—whether day after tomorrow or after 10 days—doesn’t matter.”

“Bro, you know… sorry bhaiya, you know, I too broke up, it’s been a year probably. I know what it feels, I still know what exactly this means”,उसने सिगरेट का आख़िरी कश लिया और उसे पैर के नीचे बुझा दिया।

मैं कुछ नहीं बोला, बस ज़मीन की तरफ देखता रहा। फिर कहा, “Well, you know right how this is. So yeah, help at home. Your brother has been doing much for a while, so now you can look up too.”

“Yeah… bhaiya, will you not stay?”

मैं फिर कुछ नहीं बोला। ज़मीन में गड़ी निगाहों में आँसुओं की धार आने ही वाली थी कि मैंने खुद को सँभाला और पेमेंट करने के लिए उठ गया।

पेमेंट करके फिर उसी स्टूल पर बैठ गया।

वो कुछ सोचता रहा, कभी मोबाइल निकालता, उसमें देखता, फिर उसे बंद करके बगल में रख देता।

“Bro, I have a request.”

“Hmmm”, मैंने बिना उसकी तरफ देखे पूछा।

“If they both plan to stay together there, I will move to your place. Please don’t sell anything.”

मैं इस वक्त इस सवाल के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था।

मैंने हाँ में सिर हिलाया और मुस्कुरा दिया।

वो भी हँस दिया और बोला,

“I will send the deposit and whatever the stuff costs, but in installments.”

“अरे, उसकी कोई ज़रूरत नहीं यार”, मैं कहकर उठ गया।

वो भी उठा और अपने घर की तरफ जाने को बढ़ा।

“Just don’t tell anything to both of them.”

“I won’t”, उसने कहा और हम दोनों अपने-अपने घरों की तरफ बढ़ गये।

अध्याय 24

“मैं अभी दूसरा राउंड देकर उठा था। दो दिन गुजर गये थे। ऑफिस से एक घंटे के लंच के बाद एक घंटा उपलब्ध नहीं रहूँगा”—यह मैंने ग्रुप में मैसेज डाल दिया था क्योंकि एचआर ने पहले ही बताया था कि इंटरव्यू का फ़र्स्ट राउंड लम्बा हो सकता है, या पहले आधे घंटे का टेक्निकल स्क्रीन राउंड और फिर डोमेन राउंड होगा।

पच्चीस मिनट में पहले राउंड के बाद जब उसका रिज़ल्ट जल्दी ही आ गया—दस–पंद्रह मिनट में, जो ज़्यादातर जॉब्स में होता ही नहीं, तो मैंने दूसरा राउंड भी दे दिया। अब उठ ही रहा था क्योंकि मेरे हिसाब से बिल्कुल अप-टू-द-मार्क वाले चांस कम थे कि होगा या नहीं। इसी फ्रस्ट्रेशन में ऑफिस वाला लैपटॉप फिर खोला, ‘back’ का मैसेज डाला और मोबाइल उठा लिया।

मैं अभी व्हाट्सऐप देख ही रहा था कि स्टेटस में मीला का नाम आया। ओह… मुझे नहीं पता उसने यह अंतराल क्यों बना कर रखा मुझसे। इस पूरे दौरान एक मैसेज तक नहीं आया—यह पूछने के लिए भी कि ठीक हो न, बड़ा एक्सीडेंट हो गया। ये भी हो सकता है कि उसका मोबाइल अभी तक उसके पास न हो या उसने अब इस्तेमाल करना शुरु किया हो ताकि कोई गड़बड़ न हो जाए।

ख़ैर, जो तस्वीर व्हाट्सऐप पर थी, वो उसके घरवालों की थी, जिसमें सब नात-रिश्तेदार हँसते-खेलते दिखाई दे रहे थे। आज उसकी शादी थी। फ़ोटो देखकर लगता था कि शादी पारंपरिक लेपचा समुदाय के रीति-रिवाज़ों से हो रही थी और ‘मुन’ महिला शमन का पालन किया जा रहा था।

लेपचाओं में, असल में जनजातीय धर्म में महिलाएँ 'मुन' शमन का पालन करती हैं और पुरुषों का 'बोंगथिंग' होता है। जैसे तिब्बतियों का अपना रिवाज़ है, वैसे ही लेपचाओं का भी क्योंकि बौद्ध धर्म को मानते हुए शमन परंपराओं को भी संजोना पड़ता है। मीला के साथ रहते हुए हर एक चीज़ पढ़ डाली थी, तब ढेरों डॉक्यूमेंट्री भी देखी थीं मैंने।

ख़ैर, स्टेटस देखकर मेरा मन अजीब हो गया। मैंने एक 'congratulations' तक नहीं भेजा। मैं ऐसा था नहीं, पर जयश्री के बाद मैं धीरे-धीरे और ऐसा बनता गया और अब इससे उबर भी नहीं पा रहा हूँ।

मैंने मोबाइल बिस्तर की ओर उछाल दिया और ऑफिस के लैपटॉप में घुस गया। वहाँ किसी पाइपलाइन के फेल होने की बकवास चल रही थी।

मैंने वह काम हाथ में ले लिया और उसे करने में लग गया, पर मेरा मन काम में लग नहीं रहा था। विडंबना यही थी—काम करने के अलावा कुछ नहीं था।

मैं बिस्तर से उठा। मैंने सोचा कि चाय की दुकान तक चला जाता हूँ, कि तभी मेरा बिस्तर पर पड़ा फोन वाइब्रेट हुआ—"उत्तरांचल हिमालयन रूरल एक्शन ग्रुप

उत्तराखंड

Work with Health, Villager Education and Kids Education.

Regular employee और Volunteer—कोई भी कर सकते हो तुम।

नैनीताल से 48 और मुक्तेश्वर से 15 किलोमीटर दूर।

बता देना फ़ाइनल कब बोलना है।

Even volunteer भी करना चाहो तो अपने हिसाब से बात करके डिस्कस कर सकते हो"।

संजय का मैसेज था। उसने बात आगे बढ़ा ही दी। उसके जुगाड़ कभी-कभी बैठ जाते हैं।

और सुनो—"हम अभी लखनऊ गये थे, तो हमने तुम्हारी वाली को देखा। उसका यह एक और मैसेज आया"।

थोड़ी देर पढ़ने के बाद समझ नहीं आया कि ऊपर वाले जवाब में अचरज और खुशी में डूबूँ या नीचे वाले में सवाल करूँ। कुछ पल वैसे ही सोच में पड़े रहने के बाद मैंने दूसरा मैसेज इग्नोर करना ही ठीक समझा और पहले का जवाब दिया—

"धन्यवाद बे, हमें लगा ही था कि कुछ-न-कुछ जुगाड़ लाओगे तुम। सुनो, हम गुड़गाँव या नोएडा या फिर वर्क-फ्रॉम-होम ही ढूँढ रहे हैं जॉब। अब यहाँ से बोरिया-बिस्तर उठाने का मन है।"और भेज दिया।

थोड़ी देर बाद उसका रिप्लाई आया—"हाँ-हाँ, 900 चूहे खाए, बिल्ली मौसी हज घूम आई"।

मैंने एक स्माइली भेजी और बोला—"जॉब कन्फ़र्म होते ही इसका बताता हूँ"।

'ओके' बोलकर वो ऑफ़लाइन हो गया।

यह ख़बर अच्छी थी या बुरी, पता नहीं। पर यहाँ से निकलने का ज़रिया बन तो रहा था क्योंकि इतने सालों की दोस्ती, शहर की रोज़ी-रोटी, यहाँ के रहन-सहन में खुद को ढाल लेना, इतने अच्छे लोगों का छूटना—यह सब अपने-आप में वियोग की घंटा है। वियोग, जो यादों में हमेशा रहेगा और अब उस वियोग के चढ़ के बनने की घड़ी क़रीब आती जा रही है।

इसी बात पर आज अपने हाथ का कपड़ा—जो मेरा हाथ कंधे के सहारे टाँगे रहता था—खोल दिया। बाएँ हाथ से टाँके टटोले, जो घाव लगभग भर चुके थे। हाथ को सीधा जाँघ तक और धीरे-धीरे पहले जैसा, जैसे क्रिकेट में बॉलिंग करते हैं, उस दिशा में घुमाने की कोशिश करने लगा।

ऐसा लग रहा था कि कंधे को किसी प्लास से जकड़ दिया हो। कराहते और फुफकारते हुए मैंने दीवार पकड़कर हाथ लगभग आधी दूरी शरीर के पीछे घुमा लिया, पर ऊपर ले जाने की हिम्मत नहीं पड़ी। यह सोचते हुए कि कहीं टाँकों पर असर न पड़े, मैंने पूरा घुमाने की कोशिश छोड़ दी।

लैपटॉप साइड में रखकर बिस्तर पर पूरा लेट गया। ख़याल, जो मुझे हमेशा घेर लेते हैं, फिर घेर लिया। मीला की शादी आज हो जाएगी और मुझे भी रास्ता—ईश्वर ने शायद अपने होने का सबूत देने के लिए एक मार्ग दिखाया है। परिस्थितियाँ भी ऐसी बना दी हैं कि पीछे मुड़ने का कोई रास्ता दिया तो नहीं है, अब इससे आगे ही जा सकते हैं। और फिर नेपाली का चेहरा आँखों के सामने घूम गया—

"प्रताप लोग तो हमलोग हमेशा मूवी में ठाकुर ही सुने हैं। हमलोग तुझको ठाकुर ही बोलेंगे। चल न ठाकुर, तुझे अपने शिलॉन्ग वाले दोस्तों से मिलाता हूँ। ये है जेम्स, ईटानगर से है। ईटानगर तो तू जानता है न, तुम साला मेनलैंडर लोग ईटानगर को भी असम समझता होगा। हा-हा-हो-हा-हा। अरे, शी इज़ लारी राइंबई, लारी, ही इज़ माय फ्रेंड एंड रूममेट ठाकुर। ओह सॉरी, भोंदू, हा-हा। डिगी, तू साला असम का बांग्लादेशी मेरे दोस्त को मारेगा? ऐसा शॉट देगा साला 1947 के पहले बांग्लादेश पहुँचा देगा"।

"प्रिया हेर, यो मेरो रुममेट होइन, मेरो भाइ हो"।

उसकी आवाज़ें जैसे मेरे कानों में चारों तरफ घूमने लगीं। मुझे खींचने लगीं और एहसास कराने लगीं कि जाना उतना आसान नहीं होता जितना

ख़यालों में लगता है। और मैंने मम्मी को फोन लगा दिया। अब मम्मी को कच्ची-पक्की सच्चाई बतानी थी, लेकिन इशारों में इस बीच नोएडा या गुड़गाँव की तरफ़ सोचने के संकेत दे दिये थे।

यह हफ़्ता भी निकल गया। इस बीच एक-दो बार सविनय के साथ चाय की दुकान पर ज़रूर चला गया था क्योंकि वह भी यहाँ नया था और बोर ही हो रहा था। तो बुला लेता था। बाक़ी समय मैं लगभग फ़्लैट पर ही पड़ा रहा। काम के अलावा कश्मकश और काश में दिन काट दिये। बाक़ी एक इंटरव्यू के तीन राउंड और एक में दो राउंड भी निकल गये। उम्मीद है कि अगले हफ़्ते तक शायद कहीं से एक ऑफ़र आ जाए।

रात को अभिनय का टेक्स्ट आया था कि आज टाँके कटाने जाना है, एम्बुलेंस आएगी, उसी में चल लेना साथ में। मैंने हाँ में उत्तर दिया था, बस।

मैं रेडी हो गया था और सविनय को मैसेज किया कि गाड़ी कब आएगी? थोड़ी देर बाद उसका रिप्लाई आया—"गाड़ी बस 5 मिनट में आ रही है, आप जाओ"।

मैं थोड़ी देर में उसके घर के नीचे पहुँच गया। जिस बाइक से हमारा एक्सीडेंट हुआ था, वह सर्विस होकर नई-सी लगी वहीं खड़ी थी। उसे देखते ही वह पूरा मंजर आँखों के सामने घूम गया।

एम्बुलेंस तभी पीछे आ गई। मेरी ऊपर जाने की हिम्मत हो नहीं रही थी, पर फिर एम्बुलेंस वालों के साथ मैं भी चला गया।

एम्बुलेंस वाले अभिनय के रूम में चले गये। आंटी किचन में थीं, मैं जाकर उनके पैर छू लिया। उन्होंने सिर पर आशीर्वाद का हाथ रख दिया। शायद मैं उनसे मुँह से माफ़ी नहीं माँग सकता था, पर इसी बहाने मन-ही-मन उनके बेटे को इस तकलीफ़ में पहुँचाने की माफ़ी माँग लेता हूँ।

प्रिया अंदर ही थी। स्ट्रेचर के पीछे-पीछे वह भी निकल आई। अभिनय स्ट्रेचर पर पड़े-पड़े मेरी तरफ़ देखकर मुस्कुरा दिया। सविनय भी, जो हॉल में सोफ़े पर बैठा था, स्ट्रेचर के पीछे-पीछे चल दिया। मैं पीछे हो लिया। हम सब नीचे आ गये। थोड़ी देर बाद आंटी भी ताला लगाकर आ गईं। हम सब पीछे ही बैठ गये।

मैं सविनय के आगे की तरफ़, गाड़ी के गेट के बाहर की ओर देख रहा था।

"कैसे काटे अकेले दिन, टूटे हाथ से?"—अभिनय ने मुझसे कहा। मैं उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुराया और फिर प्रियांशी की तरफ़ देखा। वह भी मेरी तरफ़ देखी, पर कोई भाव प्रकट नहीं किया। आंटी प्रियांशी के पीछे बैठी फ़ोन में किसी से बात कर रही थीं, शायद किसी रिश्तेदार से।

"और जेट कैसे भरता है?"—अभिनय ने फिर मुझे छेड़ा।

पर धीमी आवाज़ में मैं फिर कुछ नहीं बोला और हँसता हुआ बाहर ही देखता रहा।

वैसे फिर सब शांति से बैठे अस्पताल पहुँच गये। अभिनय का स्ट्रेचर निकालकर उसे और मुझे एक नर्सों वाले रूम में ले जाया गया, जहाँ पहले हमारे टाँके काटे गये—पहले उसके, फिर मेरे।

फिर हमने पर्ची कटाई। उसमें एक्स-रे लिखा था, तो जाकर एक्स-रे करवाया और फिर आकर वही डॉक्टर को दिखाया।

पहले उसने मेरा देखा और कहा—"Nice, now you try to rotate your hand." और वहीं एक नर्स और कंपाउंडर की मदद से मैंने अपना पूरा हाथ गोल घुमाया। मुझे नहीं पता था कि इतना दर्द होगा। जो हाथ कभी बॉलिंग डालते नहीं थकता था, वह आज एक राउंड भी नहीं घुमा पा रहा था।

उसके बाद उसने अभिनय से कहा—“Stretcher से उठो, खुद से खड़े होने की कोशिश करो”।

मैं अभिनय के बगल में खड़ा था और सविनय दूसरी तरफ़ आ गया था। वह खुद से खड़ा हुआ, लेकिन लड़खड़ा रहा था। उसका बायाँ पैर काँप रहा था, वह सहारे की तलाश में था, पर डॉक्टर ने हम दोनों को वहीं मना कर रखा था।

प्रियांशी और आंटी थोड़ा आगे खड़ी थीं। प्रिया अभिनय का वीडियो लेकर इस पल को क़ैद करना चाहती थी। जब वह बिल्कुल ही कदम नहीं बढ़ा पाया, तो डॉक्टर ने एक वॉकर—चार पैरों की गड़िया—जो पड़ी थी, कंपाउंडर से कहकर थमा दी।

अब अभिनय ने पहले वॉकर को दो इंच आगे रखा और अपना बायाँ पैर बढ़ाया, उसके बाद दायाँ कदम। उसके दाएँ कदम पड़ते ही मेरी नाक से एक आँसू नीचे लुढ़ककर गिर गया। शायद वहाँ वह आँसू किसी ने नहीं देखा, सिर्फ़ अभिनय ने फ़र्श पर पड़ा वह आँसू देख लिया। उसने एक नज़र मेरी तरफ़ मारी, पर मैं उसके बगल-बगल चलते हुए अपनी नज़र फिर नीचे गड़ा रहा।

अभिनय अब थोड़े-थोड़े लंबे कदम उसकी मदद से रखने लगा। डॉक्टर हमसे मुख़ातिब हुआ और बोला—“One month walk with this, then come for follow-up.”

“And after maybe with this, take a stick and try, and after that without stick, and you will be fine.”

उसने इस बार हम दोनों की तरफ़ देखा और बोला—“Continue the medicine and have food which has more calcium. And I will see you next time.”

हमने उनका वॉकर दे दिया। अभिनय को मैं और सविनय पकड़कर बाहर ले आए और एक कुर्सी पर बिठा दिया। उसने दायाँ पैर सीधा करके आगे की ओर कुर्सी में रखा क्योंकि शायद मांसपेशियों में ज़्यादा खिंचाव हो रहा था।

प्रिया और आंटी मेडिकल स्टोर की तरफ़ चले गये, जो अस्पताल के अंदर ही था। थोड़ी देर बाद दवा के साथ-साथ प्रिया एक सफ़ेद-काले रंग का वॉकर भी लेकर आ गई और अभिनय के सामने रख दिया।

अभिनय ने कोशिश करके खड़ा होना चाहा। जैसे मुझे हाथ घुमाने में बहुत दिक्कत हो रही थी, वैसे ही अभिनय को भी उठने-बैठने में पूरी जाँघों के इस्तेमाल से बहुत दर्द हो रहा था।

थोड़ी देर बाद कैब आ गई। मैं और सविनय उसके साथ चलते हुए कैब तक गये। आंटी हमारे पीछे थीं और आंटी की आँखें अपने बेटे को ऐसे चलते देखकर नम हो रही थीं।

इनोवा थी। उसे आगे की सीट सविनय ने पीछे करवा कर उसी में बिठा दिया। मैं और सविनय उसका वॉकर लेकर पीछे बैठ गये थे। आंटी और प्रियांशी बीच में बैठ गईं और गाड़ी चल दी।

आज पूरे दिन में पहली बार प्रियांशी ने पीछे देखा और मुझसे फुसफुसाई—“तुझे पता है न, उसकी शादी हो गई”।

मैंने सिर हिलाकर एक झूठी-सी हँसी से जवाब दिया।

“अगले 13 को आएगी”, उसने कहा।

“ओह…”—मैं और बोलना चाहता था, पर बोल नहीं सका।

अब लगभग 42–43 दिन थे।

“कितने बजे वाली फ़्लाइट?”

मैंने थोड़ी देर बाद उससे फुसफुसाया।

“क्यों? लेने जाएगा क्या एयरपोर्ट?”—आगे से तेज़ आवाज़ में अभिनय बोला और सब हँस दिये। मैंने भी बनावटी हँसी हँस दी।

इतनी धीरे बोलने पर भी उसने सुन लिया था।

“3:30 पर लैंड करेगी, 12:30 पर बागडोगरा से है।”

“हम्म…”

मैंने और कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रियांशी अब आगे मुड़ गई थी। मैं सोचने लगा कि दोनों में से कोई ऑफ़र आ जाता, तो मैं निकल जाता और मुझे उसका सामना फिर से नहीं करना पड़ता।

तब तक अभिनय का घर आने को था। गाड़ी बीच में ही रुकवाना चाहता था, पर कैसे—आंटी और प्रिया दोनों बैठी थीं, उतरना पड़ेगा और फिर बैठना पड़ेगा। तो मैंने कोई तकलीफ़ नहीं दी और गाड़ी घर पहुँच गई।

मैंने गाड़ी का पेमेंट किया और अभिनय को हल्का-फुल्का सहारा देते हुए गाड़ी से उतारकर उसका वॉकर पकड़ा दिया और उसके साथ-साथ देखते हुए उसे लिफ़्ट में ले गये।

अभिनय को ले जाकर सोफ़े पर बिठा दिया। वह उसी जगह बैठा जहाँ वह हमेशा बैठता था। सब लोग रूम की तरफ़ फ़्रेश होने, कपड़े बदलने चले गये। मैं वहीं उसके बगल में बैठा रह गया।

मैंने उससे पूछा—“तुझे याद है, एक बार मैं तुझसे यही कुछ पूछना चाहता था, पर फिर बात नहीं हो पाई थी”।

उसने कहा—“हाँ, याद है, तू कुछ पूछ रहा था”। मुझे लगा था उसे याद नहीं होगा।

“बोल...”, उसने कहा।

“नहीं, उस समय तो यही पूछने वाला था कि… थाली में कुछ दिक्कत है क्या? आजकल बहुत चेंज हो गया है। पर आज कुछ बताना चाहता हूँ”, मैंने कहा।

“बकवास!”—उसने झिड़कते हुए कहा।

“देख, मुझे पता है तू शायद समझे नहीं, पर मेरी जगह होता तो समझता”। वह मेरी तरफ़ देखता रहा।

“मैं इंटरव्यू दे रहा हूँ—गुड़गाँव, नोएडा और परमानेंट वर्क-फ्रॉम-होम वाली कंपनियों में, जिनमें क्वार्टरली चार दिन जाना होता है”। फिर जैसे तंज कसते हुए उसने कहा—“एक-दो में उम्मीद है कुछ हो जाए। बाक़ी एक और शेड्यूल है अगले हफ़्ते। और अप्लाई कर रहा हूँ”।

“फ़ालतू नाटक क्यों कर रहा है? हो गई एक प्रॉब्लम, तो कोई नहीं, ख़त्म थोड़े हो गया सब”,

वह थोड़ा ऊँची आवाज़ में बोला।

“बात ख़त्म नहीं की है। बात है कि अब कुछ बचा नहीं है”, मैं भी थोड़ा चिल्ला दिया।

“क्या बचा नहीं है? सब है, पर तू अकेले ही मरना चाहता है, तो मर…!”—उसने इस बार अपनी आवाज़ धीमी कर ली।

“मुझे पता था तू समझेगा नहीं।”

मैं ग़ुस्से से उठा और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ने लगा। फिर मुड़कर देखा और कहा—

“अगले महीने की 13 तक मैं भी चला जाऊँगा, नेपाली। भगवान न करे कि हम आख़िरी बार मिल रहे हों”।

और मैंने धीरे से उसका दरवाज़ा लगा दिया। उसने मुझे रोकने की कोई कोशिश नहीं की। मैं सीधा-सीधा उतरता हुआ अपने रूम आ गया और आकर बिस्तर पर हाथ बचाते हुए लेट गया।

रास्ते में मुझे एक फ़ोन आया था—प्रिया का। पर अब मेरा फ़ोन प्रिया और सविनय के कॉल्स से बस वाइब्रेट किये जा रहा था और मैं औंधे मुँह बस पड़ा रहा।

अध्याय 25

दो हफ़्ते निकल गये। मैं अपने इस कमरे-रूपी कोपभवन (जो अभिनय कहता है), से नहीं निकला। बीते हफ़्ते एक और इंटरव्यू तो दिया, पर उसमें निकला नहीं। तीन राउंड वाली एचआर ने भी बातें गोल-मोल करके छोड़ दीं कि 'होल्ड' पर है, फ़ाइनेंस में अप्रूवल के लिए गया है.... वगैरह-वगैरह। पर जिसमें दो राउंड हो गये थे, उन्होंने तीसरा राउंड नहीं रखा और फ़ोन पर ही पैसों और नोटिस पीरियड की बात कर ली... और कल दोपहर में ऑफ़र आ गया है। गुड़गाँव में एक कंपनी है, जिसमें तीन महीने में दो दिन के लिए ऑफिस जाना है—टीम मीटिंग और प्लानिंग के लिए। बाक़ी ऑफिस आकर भी काम कर सकते हैं, हाइब्रिड भी और रिमोट या घर से भी।

जो तलाश कर रहा था, वो मिल तो गया, पर थोड़े पैसों की जो तलाश थी, वो पूरी नहीं हो सकी। करंट बस एक लाख सालाना ही बढ़ाया है, जो कि मैं यहाँ भी दिसंबर तक रुक जाता तो उतना तो बढ़ ही जाता, पर अब मन नहीं था। नोटिस पीरियड यहाँ दो महीने का है, पर उन्होंने अगले महीने की बीस तारीख़ को जॉइनिंग दे दी है। कोशिश करूँगा इस नोटिस पीरियड में कि अपनी बची हुई 24 दिन की एनुअल लीव से नेगोशिएट करके एचआर और मैनेजर को मना कर—घर में इमरजेंसी की या कोई दिक्कत बताकर—लीव ले लूँगा। क्योंकि वो पेड लीव्स हैं, तो उन्हें दिक्कत नहीं होगी।

कल ऑफ़र आने के बाद फिर मैंने बार-बार फ़ोन किया अभिनय को। उसने कोई जवाब नहीं दिया। इन दो हफ़्तों में जब तक मुझे यह बात समझ आई कि मैंने फ़ालतू में ज़्यादा गुस्सा दिखाकर वहाँ छोटी-सी बात पर आ गया था, पर बात भले छोटी रही हो, बात गहरी हो गई थी।

कल का मिलाकर मैं उसे तीन बार फ़ोन लगा चुका हूँ। उसने एक भी बार नहीं उठाया। मैंने एक-दो मैसेज भी छोड़े, कि—"अरे, मैं फ़्रस्ट्रेट हो गया था इस चोट से और मीला की बात से..."।, और एक बार ये, कि—"अरे, इतना क्या बुरा मान रहा है....!" उसने दोनों मैसेज देखे, पर कोई जवाब नहीं दिया। मैं उसे नया ऑफ़र बताना तो चाहता था लेकिन जब फ़ोन नहीं उठाया, तो मुझे लगा मैसेज नहीं करना चाहिए।

उसने चुप्पी साध ली है। पर ये तो हमेशा मैं करता हूँ। चुप्पी तो मेरा काम है— अकेले, अँधेरे-वीराने में रहना और ग़म को धीरे-धीरे नासूर बनने देना या उसके साथ जीने की आदत डाल लेना—ये मेरा काम है। पर अब वो वही कर रहा है।

या तो वो रिवर्स साइकोलॉजी खेल रहा है या इस ज़ुबान के शब्द तो अब वापस नहीं आ सकते। ऐसा तो नहीं है कि पहली बार लड़ाई हो रही हो। इन 10–11 सालों में हाथापाई, चोक स्लैम, लात-घूँसे—हर एक ज़रिये से हो चुकी है। पर इस बार शायद बात कॉलेज की दोस्ती के परिवेश से बाहर चली गई थी।

अब आदमी का अहम भी ऐसी चीज़ है—इतना पास होने के बावजूद मैं उसके दरवाज़े नहीं जा सकता। भगवान ने अगर आदमी बनाया होगा, तो उसका अहम ऐसा बनाया होगा कि उसे सामने दिख भी जाए कि कुछ सही नहीं है, फिर भी वो उसे बिखरने देगा।

ख़ैर, अभी एचआर से ना-नुकुर चल तो रही है, पर उसने कहा है कि शायद आख़िरी तारीख़ 11 हो जाएगी। फ़िलहाल लैपटॉप और मोबाइल में जॉब पोर्टल्स पर अँगुलियाँ ज़्यादा तेज़ हो गई थीं, कि कुछ और एक ऑफ़र आ जाए, तो कम-से-कम पैसे थोड़े बढ़ जाएँ।

थोड़ी देर बाद ऑफिस का लैपटॉप साइड कर दिया। दाएँ हाथ को पकड़कर कंधे को पूरा एक चक्कर लगाया और मोबाइल उठाकर संजीव को टेक्स्ट कर दिया—"13 को फिर मिलते हैं फिर साले तुमसे"।

थोड़ी देर बाद जवाब आया—"तो... फिर आ रहे हो? जॉब का क्या हुआ?"

मैंने कहा—"हाँ, गुड़गाँव में"।

"आओ-आओ, यहाँ-यहाँ की हवा का ज़हर झेलो थोड़ा।"

और हँसने-चिढ़ाने वाले इमोजी के साथ बात ख़त्म हो गई।

जब से मैं अभिनय के घर से आया था, मैंने उस दिन के बाद भी सविनय के कुछ कॉल आए, पाँच-छह मैसेज आए। मैंने ज़्यादातर का रिप्लाई नहीं दिया, देखकर छोड़ दिया। कुछ एक का 'हम्म' या 'ओके' जैसे जवाब दिये। उसे भी मेरा व्यवहार समझ में आ गया था, इसलिए उसने मिलने के लिए नहीं बोला। या हो सकता है प्रियांशी ने ही मना कर दिया हो।

प्रिया को मैं बहुत ज़्यादा कभी सुहाया नहीं। उसके तीखे बाणों ने काफ़ी बार मेरे सीने को छलनी किया, लेकिन मैंने उतनी तवज्जो कभी उसकी बातों को नहीं दी। कुछ चीज़ें बुरी लगतीं, तो उन्हें दिमाग़ में सँभालकर गाँठ बाँध के रख लेता कि ये उससे नहीं बोलना है। या शायद अभिनय ने ही मना कर दिया हो कि अब कोई हाल-ख़बर लेने की ज़रूरत नहीं है... या आंटी ने मेरी हरकत देखकर कह दिया हो कि अब उसके पास मत जाना। जो भी हो, मेरी दूरी तो उस घर से बढ़ ही रही थी।

तभी Teams का नोटिफ़िकेशन आया—जेआर का था।

"Hi, I spoke to your manager. You complete your KT by 6th, so one week being you here they can start in real-time

on your tasks. If that happens, well and good. Then you can have LWD as 11th of September."

मैंने रिप्लाई में 'Sure' लिखा। पूरा किये बिना ही भेज दिया।

अब फ़्लाइट सर्च करने का समय आ गया था। फ़्लाइट सर्च हुई।

कुछ और दिन बीत गये उसी कमरे में पड़े-पड़े। अब न तो मैं ऑफिस जाता हूँ, न कोई काम होता है। बस दिन में थोड़ी-सी केटी के नाम पर अपनी चीज़ें समझा दो और एक-दो बार हेल्प कर दो, बस।

तो इमीडिएट जॉइनर होने की वजह से वहाँ से कुछ इंटरव्यू आ जाते थे, उन्हें देने में समय निकल जाता था। और यूँ मानो कि इंटरव्यू में कैमरा खोलने की वजह से ही मुझे कमरे की बत्ती भी जलानी पड़ती थी, वरना मैं बत्ती ही नहीं जलाता था।

ये ऐसे ही है, जैसे मेरे बाथरूम में एक कॉकरोच है, वह भी रात में ही निकलता है, जब अँधेरा और बत्ती बंद दोनों होता है। उजाले में वो बाथरूम में रेंगकर सिंक या पानी जहाँ निकलता है, वहाँ की मोरी में छुप जाता है।

मुझमें और उस कॉकरोच में अब कोई अंतर नहीं रहा।

ख़ैर, अब मेरा संपर्क लगभग जैसे न के बराबर हो गया है अभिनय से। इन हफ़्तों में अब मैंने उसे डिस्टर्ब न करना ही ठीक समझा, न उसने कोई टेक्स्ट या कॉल किया, न सविनय को देखने के लिए भेजा। मैं समझ चुका था—अब अंत आ चुका है। बस ग़म इस बात का रह-रहकर आ जाता था कि मैं उसे यह भी नहीं बता सकता था कि मैं कब जा रहा हूँ, किस कंपनी में जा रहा हूँ, कहाँ रहूँगा, संजीव ने क्या जुगाड़ किया है। सबकुछ जो मैं उसे बताना चाहता था या पूरा नहीं, तो कम-से-कम जितना हो सकता था, वो भी बताने की गुंजाइश नहीं रही।

इसी कॉकरोच की तरह मैं भी ऐसे ही पड़े-पड़े दो हफ़्ते निकाल दिये। कुछ इंटरव्यू और दिये, जिनमें ज़्यादातर में रिजेक्ट ही हो गया। अब यहाँ से जाने के दिन भी क़रीब आने लगे थे। मैंने फ़्लाइट तो 13 तारीख़ की कर ली थी—6:30 बजे की पर प्रणव को नहीं बताया कि दिल्ली जा रहा हूँ। उसे भी बताना है पर फ़िलहाल अँगुलियाँ अटकी रहीं। सविनय को मैसेज या कॉल करने में हिचक रहा था क्योंकि मैं यहाँ का पूरा सामान और यहाँ के टेनेंट के तौर पर ओनर को इंट्रोड्यूस करके जाना चाहता था। पर अगर उसने मना कर दिया, तो आख़िरी वक़्त में मैं कैसे करूँगा—यही रोज़ सोचता। आज मैसेज करूँगा। रोज़ मन को समझाकर टाल देता कि बाद में करूँगा, पर वो 'बाद' आता ही जा रहा था।

हाथ अब थोड़ा-थोड़ा खुल गया था। अब पूरा हाथ घूमने लगा था। दर्द ज़रूर होता था, पर अब पहले जैसा नहीं होता था—आश्वस्त करने वाला था।

अभी मैं सोकर निराकर्म कर ही रहा था कि सविनय का एक मैसेज आया—"Are you going to see doctor for follow-up checkup? Today is the date."

अरे हाँ, मैं भूल गया था कि डॉक्टर ने चेकअप के लिए बुलाया था। मेरे पास टाइम भी था, पर मैं अभिनय का सामना नहीं कर सकता था। थोड़ी देर सोच-विचार के बाद कि जाऊँ या न जाऊँ, आख़िरकार मैंने उसे रिप्लाई किया—"No, it's fine for me, please carry on."

मैसेज सीन हो गया था और वहाँ से कोई जवाब नहीं आया।

थोड़ी देर बाद मैंने टेक्स्ट किया—"I kind of needed to talk to you."

फिर मैसेज सीन हो गया, पर कोई जवाब नहीं आया।

मैंने एक प्रश्नचिह्न भेजा, तो थोड़ी देर बाद रिप्लाई आया—“Evening. Tea shop.”

“Ok!”—मैंने भेज दिया।

मैं तैयार सोकर ऐसे ही मोबाइल स्क्रीन पर स्क्रॉल कर रहा था। शाम लगभग हो चुकी थी। 5:30 बजे सविनय का टेक्स्ट आया—“Bhaiya, I am coming. Would you join me in 5 mins?”

मैंने उसका मैसेज देखते ही रिप्लाई कर दिया—“Coming.”

मैं बाहर जाने के लिए तैयार तो था, पर दो मिनट रुककर निकला, ताकि उसे ऐसा न लगे कि मैं बाहर निकलने के लिए मरा जा रहा था।

मैं दुकान पर जैसे ही पहुँचा, उसने दो चाय ऑर्डर कर दी थीं। उसने अपनी एक किंग्स भी ले ली थी—शायद जला ली थी, तभी चेट्टा को स्माइल देकर मैंने दोनों चाय काउंटर से उठा लीं।

हम दोनों चाय की चुस्कियाँ लेने लगे। वह चुस्की के साथ धुआँ भी उड़ा रहा था।

“So tell me, Bhaiya, what happened?”

उसने अचानक से पूछा।

मैंने एक पल के लिए उसको देखा, फिर नज़र सड़क पर टिका दी—जैसा उस दुकान पर मैं कभी अकेले, कभी अभिनय के साथ और कभी-कभी प्रियांशी और मीला के साथ हमेशा करता आया था। मेरा नियम था वहाँ बैठकर सड़क की तरफ निहारते रहना। अब ये सब छूटने को है, तो मैं सब अपने अंदर समेट लेना चाहता था।

“First tell me, how is your brother?”

मैंने उससे पूछा।

“He is doing better now. Today doctor made him stand with stick, not with walker.”

“He is able to do now, right? Thank God!”—मैंने थोड़ा भगवान का शुक्रिया अदा करते हुए कहा।

“Yes Bro, he is. You should be there—when he started walking, he became like a kid for a moment. Like he was in deep pain, but giggling a little.”

“Well yeah. I hope he keeps improving and do better—start walking, running, playing football, everything.”

“Yes, I too hope, Bro. Now I am convinced he will recover. He has been a fighter since childhood”,

उसने सिगरेट का फ़िल्टर पैर के नीचे रौंदते हुए कहा।

“Well, I know. I have seen him too.”

“Anyways, you were saying something.”

“Oh yeah… I was saying, I am leaving on 13th.”

“What? You are leaving? Is it final? We thought you are just angry a little bit.”

“No, I seriously needed to go, I think. I don't deserve also…”

“Oh, it's so sad. What time on 13th?”

“Flight is at 6:30.”

“Oh ok. I didn’t see this coming. I thought we will remain here. I have sent mom also.”

“Oh, aunty gone to Shillong?”

“Yes, I dropped her to airport few days back.”

“She can travel alone.”

“Yes, yes, she does many times.”

अब चाय की चुस्कियाँ रुक गई थीं। चाय खत्म हो गई थी।

“So what’s the plan, will you be staying here?”

मैंने पूछा।

“Yes, yes. Going to do executive MBA, to start a job later, in a year maybe.”

“Yes, yes, should be great. Listen—मैं मूव कर रहा हूँ, तो दो सूटकेस और एक पर्सनल लैपटॉप के अलावा कुछ भी साथ नहीं ले जाना चाहता। वरना सब घर भेजना पड़ेगा। तो क्या तुम्हें कोई दिक्कत होगी अगर मैं यह तुम्हें दे दूँ?”... और मेरी चाबी के छल्ले में हमेशा दो चाबियाँ होती थीं, जो मैं एक साथ ही लेकर घूमता हूँ। उनमें से एक मैंने जल्दी से निकालकर उसे दे दी।

“No problem, Bro... I can stay. I won’t say no.”

“Well, thank you. You don’t know what you have—it’s not very well-decorated room, but all essentials for bachelor—table, chair, TV, थोड़ा किचन-बाथरूम का सामान, Wi-Fi, two-wheeler—everything is sorted.”

“Haha, not an issue. It will be good. I will be just beside him, so anytime I can be present.”

“Just a request—don’t tell your brother. I will leave from his life quietly. I don’t want to create unnecessary drama in his life. Already he is going through a lot.”

“Ok, but—”

“No, no, just don’t tell him.”

“Ok, but you—”

“No, no, चलो, will talk some next day.”

“No, I was asking—how is your hand? You know right, they both both understand why you didn't come for doctor checkup.”

“No, I didn’t go because medicine is there and my hand has started functioning normal. Only extra effort is needed. That’s why I have done full round.”

“No problem, we all know.”

मैं हँसा और हम दोनों लोग अपने-अपने घर की ओर चल दिये।

अध्याय 26

आख़िर वो अंतिम दिन आ गया। बीते दो हफ़्तों में ऑफिस की ज़िम्मेदारियाँ पूरी कर दीं। इन बीते हफ़्तों में दो बार मैं सविनय से मिला। उसके भी दोस्त यहाँ थे नहीं, शहर से लेकर गलियाँ—सब उसके लिए अजनबी-से ही थे। एक बार पहले और एक बार अभी परसों, जब लैपटॉप और आईडी ऑफिस में जमा करके लौटा था, तब वही चेट्टा की चाय की दुकान पर।

चेट्टा से भी मेरा अंतिम बार मिलना उसी दिन हो पाया। मैंने उन्हें शुक्रिया कहा और अपनी कृतज्ञता प्रकट की। इतने सालों में जो एक अनकहा-सा नाता बन गया था, वो अब छूटने को था। उन्होंने तो कितने लोगों को आते-जाते देखा होगा, पर मेरे लिए ये सब छोड़ने का एहसास बहुत ही भावपूर्ण था।

उसी समय मैंने सविनय से कहा था कि जाते वक़्त चाबी ले जाना दूसरी वाली भी, मैं तो अपने साथ ले नहीं जा सकता। पर उसने कहा कि वो एयरपोर्ट तक चलेगा। मैंने मना तो किया कि काफी दूर है, टाइम वेस्ट होगा, पर वो नहीं माना। बाकी दूसरी बातें—ख़ासकर अभिनय अब ठीक है या नहीं—इसी पर मैंने उससे ज़्यादा पूछा। मुझे बातचीत में लगता था कि अक्सर वो अपनी बातों में शिलॉन्ग का ज़िक्र, अपने दोस्तों-यारों का हल्का-सा ज़िक्र ले आता है।

ख़ैर, मैंने उसे बताया कि एक और फुल-रिमोट कंपनी में भी हुआ है, पर वो इस वाले से अच्छी नहीं है और कुछ और बेनिफ़िट्स के हिसाब से शायद

उसे जॉइन नहीं करूँगा—यही करूँगा। वो आश्वस्त हो गया कि हाँ, मैं ऐसे सबकुछ छोड़कर नहीं भाग रहा।

बीते हफ़्तों में भी मैं हर दिन नज़दीक आते पल के बारे में सोचता रहा—यहाँ क्या-क्या नहीं किया। अभिनय के साथ इतने पल बिताए। प्रेमिकाएँ मिलीं, काम मिला, कुछ बहुत अच्छे-बुरे—दोनों तरह के लोग मिले। रोज़ी-रोटी की शुरुआत हुई। हँसी-ग़म के पल मिले। सबकुछ तो था, पर जा क्यों रहा हूँ—मुझे नहीं पता। पर परिस्थितियों का पीछा कौन छुड़ा पाया है।

इसी तरह दिन निकल गया। मुझे अक्सर कहीं जाने से पहले बहुत तेज़ घबराहट का एहसास होता है। वही कल से मुझे और हो रहा था। अभिनय के घर से ये लगभग सौ मीटर और एक मोड़ की दूरी इतनी बड़ी खाई बन जाएगी—मैंने कभी नहीं सोचा था। मैंने कुछ दिन पहले एक और मैसेज करके कोशिश की थी, पर तब भी कोई जवाब नहीं आया।

माँ से जो भी बातचीत हुई, उन्हें वही पहले की तरह इतना समझा दिया कि गुड़गाँव साइड जा रहा हूँ—नोएडा नहीं—अभी बाद में।

मैं नहा-धोकर कपड़े पहन रहा था। दो सूटकेस—एक छोटा, एक बड़ा—और एक पीछे का बैग, जिसमें लैपटॉप और अन्य ज़रूरी सामान था। बाक़ी पूरा 1-BHK वैसे का वैसा सविनय के लिए छोड़ दिया था। या तो वो यहीं रहेगा, या इसे छोड़कर किसी और जगह 1-BHK में सामान लेकर शिफ़्ट हो जाएगा।

तभी दरवाज़े की घंटी बजी। मैं बालों में कंघी घुमा रहा था। मैंने बढ़कर दरवाज़ा खोल दिया। सविनय खड़ा था।

“Bro, so ready?”

उसने पूछा और अंदर आ गया।

मैंने जेब से मोबाइल निकाला और देखा—एक बज चुके थे।

“Yes, and the room is ready for you to take over”,

मैंने एक फीकी-सी हँसी बिखेरते हुए कहा।

“Don’t worry, I will take care”,

उसने हॉल की सीलिंग की तरफ़ नज़र मारते हुए कहा।

वो वहीं कुर्सी पर बैठ गया। मैं भी उसके बगल में बैठ गया। मैंने जेब से मोबाइल निकाला और कैब बुक करने लगा। कैब हो गई—तीन मिनट में आ रही थी।

“It’s coming in three minutes”,

मैंने कहा। वो भी अपने मोबाइल में कुछ टाइप कर रहा था।

“Yes”,

कहकर हम दोनों खड़े हो गये। मैंने पीछे का बैग उठाया और दोनों ट्रॉली बैग सरकाते हुए गेट तक ले गया। मैंने टेबल पर रखी चाबी उसके हाथ में दी और बोला—

“Listen, if you don’t want to come—”

“Bro, no. Leave it, let’s go”, उसने कहा।

मैं गेट के बाहर निकला और एक नज़र मारी। उस कमरे में रहते मुझे उतने साल तो नहीं हुए जितने अभिनय वाले फ़्लैट में, पर फिर भी एक वक़्त तो निकला था यहाँ—विरह के दिन, चोट के दिन, पश्चाताप के दिन। और तब तक सविनय ने दरवाज़ा बंद कर दिया।

उसने मेरे हाथ से बड़ा वाला ट्रॉली बैग ले लिया और हम दोनों नीचे आ गये। हम खड़े ही थे कि कैब वहाँ आ गई।

हमने सामान डिक्की में डाला और पीछे वाली सीट पर बैठ गये। एयरपोर्ट पहुँचने में लगभग दो घंटे दिखा रहा था।

2345 में ओटीपी दिया और गाड़ी चल दी।

पूरे रास्ते मैं शांत रहा। बस खिड़की से बाहर शहर देखता रहा। गाड़ी चलती रही। सविनय, शायद मेरे मन की व्यथा समझ रहा था—कि एक शहर, ये सब छोड़कर जाना कितना मुश्किल होता है। आख़िरकार उसने भी अभी-अभी अपना एक ठिकाना छोड़ा था। वो ज़्यादातर अपने मोबाइल में ही लगा रहा—कभी चैट करता, कभी कुछ और।

कभी ट्रैफ़िक, कभी धीमी चाल—आख़िरकार गाड़ी हमें एयरपोर्ट पहुँचा गई। मैंने मोबाइल में समय देखा—3:10 हो चुके थे। हम उतरे। मैंने गाड़ी का पैसा दिया और हम आगे बढ़ने लगे।

मैं पहले एग्ज़िट गेट की तरफ़ जाकर बैठना चाहता था, पर एक पिलर के थोड़े आड़ में। इसलिए मैं ये भी चाहता था कि सविनय मेरे साथ न आए क्योंकि दरअसल मैं मीला की आख़िरी झलक पा लेना चाहता था—वो इसी गेट से कुछ देर बाद बाहर निकलेगी। मैंने ये बात सविनय को खुलकर तो नहीं बताई, पर वो शायद समझ चुका था।

अभी हम वहाँ पहुँचे ही थे कि पीछे से, भीड़ की तरफ़ से एक हाथ आया। मैंने अचानक पीछे मुड़कर देखा—अभिनय खड़ा था, दाएँ हाथ में स्टिक का सहारा लिए। मैं उसे देखकर अवाक् रह गया, साथ ही शर्मिंदा भी। आज उसने ये भी दिखा दिया कि बड़प्पन क्या होता है और मेरा अहम कितना छोटा था।

मैंने सविनय की तरफ़ देखा—वो मुस्कुरा रहा था। तब मुझे समझ आया कि वो मेरे साथ एयरपोर्ट इसलिए आया था कि बता सके मैं कहाँ हूँ और वो रास्ते भर इन्हीं से चैट करता या लोकेशन शेयर करता आ रहा था। सविनय

के ठीक बगल में प्रियांशी खड़ी थी। वो थोड़ी मोटी लग रही थी और उसकी आँखों में भी पानी था—वो मुस्कुरा रही थी। वो आगे आई और अपने पेट की तरफ़ इशारा करते हुए बोली—"इसका बड़ा पापा इसके जन्म के वक़्त यहाँ नहीं रहेगा क्या?"

मैं ये सुनकर और सुन्न हो गया। मैंने अभिनय की तरफ़ देखा—वो हँस रहा था और उसने हाँ में आँखें बंद कीं।

मेरी आँखों से एक आँसू निकल गया।

मुझे नहीं समझ आ रहा था कि मैं किसकी तरफ देखूँ। प्रियांशी, सविनय, अभिनय—सबके चेहरे पर बस खुशी वाली हँसी बिखरी हुई थी और मेरे ये कुछ आँसू निकलने को, कुछ निकल रहे थे। भावविभोर की चरम सीमा क्या होती होगी, मुझे नहीं पता, लेकिन जो होती होगी वो शायद ऐसी ही होती होगी—कि उस व्यक्ति को समझ न आए कि वो हँसे, रोए, उदास हो या चुप हो जाए। मैंने मुँह से तो चुप रहना ही चुना क्योंकि हलक में शब्दों को बाहर आने ही नहीं दिया।

तभी अभिनय ने बाएँ हाथ से फिर आगे बढ़कर मुझे गले लगा लिया। प्रियांशी का फ़ोन बजा। वो फ़ोन निकालकर एक तरफ़ होकर बात करने लगी और हम दोनों थोड़ा आगे बढ़कर बात करने लगे।

"बिना मिले चला जाता क्या?"—उसने फिर सीधे देखते हुए कहा।

"नहीं, मन तो नहीं था, पर हिम्मत नहीं थी", मैंने धीरे से कहा।

"मैंने मैसेज भी डाले थे, पर तूने कुछ रिप्लाई ही नहीं किया",

मैंने फिर कहा।

वो थोड़ी देर कुछ नहीं बोला।

"मैं क्या बोलता, मुझे भी नहीं समझ आ रहा था। तुझे बोलूँ कि मत जा, यहीं रह ले—लेकिन वो आज आ रही है, कैसे उसे रोज़ देखेगा", उसने मायूसी से कहा।

"पर तू बोलता तो मैं मिलने आ जाता एक-दो बार। मुझे लगा इस बार मैंने ज़्यादा रिएक्ट कर दिया और सब ख़त्म कर दिया", मैंने फिर कहा।

"ऐसा नहीं है। पर मैं जानता था सविनय तुझसे बीच-बीच में मिल रहा है। जब प्रिया आसपास नहीं होती थी, तो मैं उससे पूछ लेता था। पर जाने वाली बात उसने कल ही बताई"।

"हाँ, मैंने मना किया था उसे।"

"तो फिर कब जॉइनिंग है?"

"20 को...।"

"आज तो 13 ही है। पर तूने इसी दिन की फ़्लाइट क्यों की, मैं समझ गया था। कहाँ रहेगा वहाँ?"

"अभी तो संजीव के पास जाऊँगा। फिर जॉइनिंग के बाद उसने उत्तराखंड की तरफ़ एक बात की है, उसे फ़ाइनल किया है। वहीं कुछ महीने रहकर देखूँगा।"

"अच्छा, ऑफिस नहीं जाएगा?"

"एक क्वार्टर में दो दिन के लिए।"

"और मम्मी?"

"बताया है कि गुड़गाँव जा रहा हूँ। बाद में नोएडा बोलकर कुछ बहाना लगा दूँगा—या तो देहरादून या नैनीताल। अभी से नहीं बता सकता।"

"हम्म… आएगा मिलने अपने नेफ्यू या नीस से?"

“हाँ, एक बार तो देखने आऊँगा ही। कब डेट है?”

“दिसंबर।”

“ठीक है तब तो।”

“सिगरेट पीने का बहुत मन कर रहा है, पर यहाँ स्मोकिंग ज़ोन ही नहीं है।”

“हाँ, इस तरफ़ तो नहीं है। अभी के लिए तलब रोक ले—जैसे अस्पताल में रोकी थी।” और हम दोनों मुस्कुरा दिये।

“हाथ ठीक है?”—उसने पूछा।

मैंने पीछे का बैग पहने-पहने एक बॉलिंग का एक्शन करके दिखा दिया।

“तब तो ठीक है।”

“और पैर?”—मैंने पूछा।

“दो महीने और स्टिक से, फिर बिना स्टिक के। उसके बाद फ़िज़ियो भी रिकमेंड करेगा रनिंग के लिए।”

“फ़ुटबॉल खेलने लायक हो जाएगा न?”

मैं हँसा—“क्या मालूम! थोड़ा-बहुत खेलने लायक तो हो जाएगा।”

“वो मैंने सविनय को चाबी...”

मैंने ये कहा ही था कि पीछे से आवाज़ आई—“हो गई साउथ से बातें...?”

मुझे पता था वो प्रियांशी की आवाज़ है और उसने छेड़ने के अंदाज़ में आज कहा—मुझे पहली बार बुरा भी नहीं लगा। हम दोनों जैसे ही पीछे मुड़े, मेरे सामने प्रियांशी के साथ मीला खड़ी थी।

मीला—जिसे देखने के लिए मेरी आँखें तरस गई थीं। जिससे एक-एक मैसेज रिसीव करने के लिए मैं बस इंतज़ार करता रहा। जिसके ख़यालों में रहने से, मेरे साथ-साथ मैंने अभिनय का भी एक्सीडेंट करवा दिया था।

मीला—काले रेशमी-से बाल, दूध जैसी गोरी, पहाड़ी आकृति की बनावट। वही मीला जिसके इतना क़रीब होने के बाद मैं उससे उतना ही दूर जा रहा हूँ। मीला—जिससे मुझे प्रेम था और शायद उसे भी।

उसने 'Hi' कहा। मैंने बस फीकी-सी हँसी बिखेर दी।

उसने 'I am sorry for your accident' कहा और अभिनय को 'Congratulations' बोला और फिर 'भनेनौ?' पूछा।

वो अभी कुछ जवाब दे ही रहा था कि मेरी निगाहें उसके चेहरे से हटकर पीछे की तरफ़ गईं। सविनय के साथ एक लड़का खड़ा था—लंबा-चौड़ा, गोरा। देखने में मुझे नहीं पता ये नस्लभेद हो जाएगा या नहीं, पर शब्दों में कहूँ, तो तिब्बती या कोरियन चेहरे जैसी बनावट वाला चेहरा... पर देखने में जैसा भी हो, था पूरा भारतीय और अब मीला का पति । शरीर की बनावट पर काम किया हुआ—आरामदायक सफ़र वाले कपड़े और ओवरशर्ट। देखने में काफ़ी अच्छा और शरीर में भी। वो सविनय से कुछ-कुछ बात कर रहा था।

"When is your joining, Thakur?"

और तब मैं वहाँ से अपना ध्यान वापस मीला की तरफ़ लाया।

मैंने पूछा, "हाँ?"

"Joining?"

"20",

मैंने कहा और अपनी हथेली आगे कर दी।

"क्या?"

प्रियांशी ने पूछा और मीला ने भी भौंचक्का होकर देखा।

"मेरी सेल रोटी?",

मैंने मीला की आँखों में आँखें डालते हुए धीरे से कहा और वो मुस्कुरा दी।

उसने अपने बैग से एक काग़ज़ के पैकेट से चार-पाँच सेल रोटी निकालीं।

फिर बोली, "Wait!"

उसके साथ एक ट्रॉली थी। वो दो-तीन कदम आगे बढ़कर स्लैब से वो बैग खोलकर लाई। उसमें एक पॉलीथीन में काफी सारी सेल रोटी और चुरपी डाल ली और बैग बंद करके ढंग से उठाते हुए वापस आई।

उसने वो पॉलीथीन बैग मुझे पकड़ा दिया। मैं मुस्कुरा दिया।

मैंने वो लेकर अपना कंधे वाला बैग निकाला और उसमें रख लिया।

वो फिर हम सबको ले गई। उसने बारी-बारी से टेनज़िन से सबको मिलवाया और फिर बोली—"यो आज जाँदै छ"।

टेनज़िन मुझसे मुख़ातिब हुआ और बोला,

"क्या हुआ, क्यों जा रहा है आप?"

"जॉब",

मैंने सच्चाई की जगह पर्दा डालना चुना।

"फ़िलॉसफ़र बनेगा ये—नॉर्थ इंडिया के पहाड़ में", अभिनय ने कहा और फिर सब हँस दिये।

हमलोग फिर पास ही बने एक रेस्टोरेंट की तरफ़ बढ़ गये।

अध्याय 27

त्यागने की कोशिश मैंने हमेशा की, मुझे हमेशा मुँह से बोलने से ज़्यादा त्यागना उचित लगा।

मैं आज उत्तराखंड में हूँ तो, पर जितना आसान सोचा था, उतना सबकुछ नहीं हुआ। पर संजीव की मदद से अब ठीक हो गया है। जॉइनिंग हो गई।

बताना तो नहीं चाहता कि नैनीताल हूँ, पिथौरागढ़ हूँ, देहरादून हूँ, मुक्तेश्वर हूँ, गढ़वाल हूँ या कुमाऊँ में हूँ—पर परिजन पढ़ेंगे, तो उन्हें पता चल जाएगा। इसलिए जिन चार लोगों को ये पता है कि मैं कहाँ हूँ, मैं चाहता हूँ उन्हीं चार को पता रहे—अभिनय, संजीव, सविनय और प्रणव।

अभी कुछ दिनों में घर जा रहा हूँ, तो मम्मी को घूमने का कारण बताते-बताते फिर ठीक-ठीक बात बता दूँगा। दीदी और पापा से तो आज भी वही फ़ासला बना हुआ है। पर हाल-ख़बर लेता रहता हूँ क्योंकि मैंने एक जगह से पलायन ज़रूर चुना है, मैं भगोड़ा नहीं हूँ।

बीच-बीच में अभिनय का हाल-ख़बर मैं लेता रहता हूँ। व्हाट्सऐप ग्रुप में अब टेनज़िन और सविनय भी जुड़ गये हैं। उनकी अभी कुछ-एक तस्वीरें आती रहती हैं। ज़्यादातर बातें नेपाली में ज़रूर होती हैं, लेकिन मुझे उससे कभी कोई परेशानी नहीं होती। बल्कि यहीं कमरे के पास एक छेत्री आंटी की दुकान है। उनसे मैं हिंदी या कुछ लोकल शब्दों की जगह कभी-कभी नेपाली में ही बात कर लेता हूँ—"कति भयो, आंटी?" और आंटी मुस्कुरा कर पैसा बताती हैं। उनकी मुस्कुराहट में मैं हमेशा अभिनय, मीला, प्रियांशी और सविनय को याद करता हूँ।

मुझे जयश्री की भी याद आती है लेकिन अब उसमें छटपटाहट नहीं रही। अब बुरे लम्हें भूलकर सिर्फ़ अच्छे लम्हे ही याद आते हैं।

मैं बस अपना मोबाइल रखने ही जा रहा हूँ। यही मेरी अंतिम पंक्ति है, कि—अभी मीला की दी हुई चुरपी और सेल रोटी ख़त्म भी नहीं हुई थी कि आंटी की दुकान में मैंने अपना वो सुकून फिर खोज निकाला था।